ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

रांची एवं डालटनगंज (मेदिनीनगर) से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • रांची • मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष 07 • विक्रम संवत 2080 • मंगलवार, 19 दिसंबर 2023 • वर्ष-24 • अंक- 312 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

शाहरुख के खास दोस्त ने 'डंकी' ... पेज 12 पर

मुख्यमंत्री, स्पीकर, मुख्य सचेतकों, नेता प्रतिपक्ष के वेतन भत्ते में होगी बढ़ोतरी

आरएनएम। रांची

झारखंड विधानसभा के शीतकालीन सत्र में सोमवार को मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, स्पीकर रवीन्द्रनाथ महतो , नेता प्रतिपक्ष अमर बाउरी, मुख्य सचेतकों, सचेतकों के वेतन, भत्ते और अन्य सुविधाओं में वृद्धि से संबंधित प्रतिवेदन पेश किया गया।

इस संबंध में गठित समिति और उसके द्वारा तैयार प्रतिवेदन में वेतन, भत्ते, अन्य सुविधाओं की समीक्षा और वृद्धि के निमित्त सुझाव दिये गये हैं। इसके मुताबिक वर्तमान में मुख्यमंत्री को वेतन के तौर पर 80 हजार रुपये का प्रावधान है। इसे एक लाख रुपये प्रतिमाह किये जाने की अनुशंसा समिति ने की है। मंत्री, राज्य मंत्री, उप मंत्री को 65 हजार के बजाए 85 हजार रुपये प्रतिमाह किये जाने की अनुशंसा की गई है। क्षेत्रीय भत्ते के तौर पर मुख्यमंत्री, मंत्रियों को 80 हजार के बजाय 96 हजार रुपये दिये जाने की अनुशंसा की गई है। इसी तरह आवास ऋण के तौर पर मुख्यमंत्री, मंत्री को चार प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर देय 40 लाख रुपये की सुविधा को 50 लाख रुपये किये जाने का सुझाव दिया गया है। प्रभारी भत्ता, सत्कार भत्ता में भी वृद्धि की अनुशंसा हुई है।

इसके अलावा समिति ने यह भी अनुशंसा की है कि झारखंड विधानसभा के सदस्यों को एक कंप्यूटर ऑपरेटर 35 हजार रुपये प्रतिमाह की व्यवस्था पर रखने की सुविधा दें। साथ ही एक ड्राइवर भी 30 हजार रुपये प्रतिमाह पर रखने की सुविधा मिले। इसके लिए विधायक अनुशंसा करेंगे। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री, स्पीकर, मुख्य सचेतक, सचेतक और अन्य के वेतन, भत्ता, सुविधाओं में वृद्धि के मामले में एक विशेष समिति पूर्व में गठित की गई थी। इसमें विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी को संयोजक, प्रदीप कुमार यादव, भानु प्रताप शाही, दीपिका पांडेय सिंह और समीर कुमार मोहंती को सदस्य बनाया गया है। इसके अलावा इसमें विधानसभा के प्रभारी सचिव सैयद जावेद हैदर, संयुक्त सचिव मधुकर भारद्वाज सहित पांच अन्य पदाधिकारियों, कर्मियों को भी शामिल किया गया है। समिति के प्रतिवेदन में कहा गया है कि मुख्यमंत्री, स्पीकर व अन्य के वेतन, सुविधाओं में वृद्धि के संबंध में तैयार प्रतिवेदन पर सर्वसम्मति से सहमति प्रदान की गई है।

अब बीस से पच्चीस हजार रुपये ज्यादा मिलेंगे

विधानसभा स्पीकर के लिए वर्तमान में प्रतिमाह वेतन के तौर पर मिलने वाली राशि को 78 हजार रुपये के बजाए 98 हजार रुपये किये जाने की अनुशंसा की गई है। क्षेत्रीय भत्ता के तौर पर 80 हजार रुपये प्रतिमाह की राशि को 95 हजार रुपये प्रतिमाह किये जाने की अनुशंसा की हुई है। सत्कार भत्ता को 60 हजार रुपये की जगह 70 हजार रुपये प्रतिमाह करने को कहा गया है। नेता विरोधी दल को वेतन के तौर पर मिलने वाली राशि को 65 हजार रुपये के बजाए 85 हजार रुपये प्रतिमाह करने की सिफारिश की गई है। क्षेत्रीय भत्ता को 80 हजार के बजाए 95 हजार रुपये प्रतिमाह, सत्कार भत्ता को 45 हजार के बजाय 55 हजार रुपये प्रतिमाह और अन्य सुविधाओं में भी वृद्धि की अनुशंसा की गई है। मुख्य सचेतक को वेतन के तौर पर 55 हजार रुपये प्रतिमाह के बजाय 75 हजार रुपये प्रतिमाह, सचेतक को 40 हजार रुपये प्रतिमाह के बजाय 60 हजार रुपये प्रतिमाह किये जाने की अनुशंसा की गई है।

झारखंड के जमशेदपुर और बोकारो में एटीएस व एनआईए की छापेमारी

जमशेदपुर/बोकारो, 18 दिसंबर (हि.स.)। राज्य के बोकारो और जमशेदपुर जिले में तीन ठिकानों पर राज्य एटीएस और एनआईए ने सोमवार को संयुक्त रूप से छापेमारी की है। टीम ने छापेमारी के दौरान जमशेदपुर के जुगसलाई से एक व्यक्ति को पकड़ा है। टीम उसे हिरासत में लेकर बिष्टुपुर स्थित सर्किट हाउस ले गई। वहां उससे पूछताछ की जा रही है। जानकारी के अनुसार एनआईए और झारखंड एटीएस की टीम ने सोमवार को जमशेदपुर के जुगसलाई में दो ठिकाने पर छापेमारी, वहीं बोकारो के चंदनकियारी प्रखंड के सुतरीबेड़ा में छापेमारी की है। जुगसलाई से टीम ने एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है। वहीं टीम ने सुतरीबेड़ा में हाफिज असगर और अजहर कमाल नाम के दो लोगों से पूछताछ की।

अब बुनियादी समस्याओं का हो रहा त्वरित समाधान : हेमंत

आरएनएम। रांची/हजारीबाग

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि यह सरकार दिल्ली और रांची के बंद और एयर कंडीशंड कमरे से नहीं बल्कि गांव और पंचायत से चल रही है। जिस गांव में आने-जाने का रास्ता तक नहीं है, वहां अधिकारी पूरे दल-बल के साथ योजनाओं की पोटली लेकर पहुंच रहे हैं तथा आपको लाभान्वित करने का काम कर रहे हैं। यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री सोरेन सोमवार को हजारीबाग के ईचाक प्रखंड के तेतरीय ग्राम में आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार के चल रहे तीसरे चरण के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस अवसर 773 करोड़ 30 लाख 10 हजार रुपये की 536 योजनाओं का उद्घाटन-शिलान्यास किया। इसमें 537 करोड़ 6 लाख 80 हजार रुपये की 334 योजनाओं की नींव रखी गई, जबकि 236 करोड़ 23 लाख 30 हजार रुपये की 202 योजनाओं का उद्घाटन संपन्न हुआ। वहीं, विभिन्न योजनाओं के 2 लाख 47 हजार 842 लाभुकों के बीच 247 करोड़ 81 लाख 40 हजार 98 रुपये की परिसंपत्तियां बांटी गई।

हम संवेदनशीलता के साथ आपके तक पहुंच रहे : मुख्यमंत्री ने कहा कि आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार एक ऐसा महाअभियान है, जिसमें गांव- पंचायत में शिविर लगाकर आम जन की समस्याओं का समाधान हो रहा है। उन्होंने कहा कि बुनियादी समस्याओं की जानकारी लेने के साथ उसका समाधान हो रहा है। यहां लोगों को सरकार की योजनाओं से अवगत कराने के साथ इसका लाभ दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड अलग राज्य बने 23 वर्ष हो चुके हैं। पिछले दो दशकों में लगातार जनहित की अनदेखी होती रही। लोगों की समस्याओं को नजर अंदाज किया जाता रहा। जिला और प्रखंड कार्यालय सही तरीके से काम नहीं कर रहे थे।

एक लाख से ज्यादा बिजली उपभोक्ताओं को मिल रहा लाभ

आज सिर्फ हजारीबाग जिले में एक लाख से ज्यादा बिजली उपभोक्ताओं को 100 यूनिट फ्री बिजली का लाभ मिल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे राज्य में सड़कों का जाल बिछ रहा है। सरकार ने मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना शुरू की है। इस योजना के माध्यम से अब गांव-गांव से शहरों के लिए परिवहन सुविधा उपलब्ध होगी। बुजुर्ग, दिव्यांग, महिलाएं विद्यार्थी और झारखंड आंदोलनकारी निःशुल्क इस परिवहन सेवा का लाभ ले सकेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के हर गरीब का अपना मकान होगा। सरकार ने अबुआ आवास योजना के तहत आठ लाख गरीबों के अपने आशियाना के सपने को पूरा करेगी।

हर बुजुर्ग विधवा और दिव्यांग को पेंशन का लाभ मिल रहा

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड एक ऐसा राज्य है, जहां हर बुजुर्ग विधवा और दिव्यांग को पेंशन का लाभ मिल रहा है। हमारी सरकार यूनिवर्सल पेंशन स्कीम लागू कर सभी योग्य पात्रों को पेंशन से जोड़ रही है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि आज कई ऐसे परिवार है जिसमें एक साथ कई पीढ़ी के लोग पेंशन योजना का लाभ ले रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने बच्चियों के पढ़ाने की जिम्मेवारी अपने ऊपर ली है। बच्चियों की पढ़ाई आर्थिक तंगी के कारण बाधित नहीं हो, इसके लिए उन्हें सावित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना से जोड़ा जा रहा है । इतना ही नहीं, बच्चियों के भविष्य संवारने का काम भी सरकार करेगी ।

एक नजर

मणिपुर जातीय हिंसा के पीछे ड्रग माफिया और अवैध अप्रवासी

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री बीरेन सिंह ने सोमवार को राज्य में महीनों से जारी जातीय तनाव के लिए ड्रग माफिया और अवैध प्रवासियों को जिम्मेदार ठहराया। सिंह ने मौजूदा संकट के लिए राज्य की सीमाओं की सुरक्षा में पिछली सरकार की विफलता को भी जिम्मेदार बताया। मई महीने से कुकी और मैतेयी समुदायों के बीच जातीय संघर्ष के कारण लगभग 200 लोग मारे गए हैं और 60 हजार से अधिक लोग बेघर हो गए हैं। थौबल जिले के लीलांग में लोगों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मौजूदा संघर्ष की साजिश ड्रग माफिया और अवैध प्रवासियों ने रची जो वास्तविक जनजातियों की आवाज को दबाते हैं। उन्होंने कहा कि लड़ाई मैतेयी और कुकी के बीच नहीं है, बल्कि सरकार और अवैध प्रवासियों के बीच है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं रोज अपने कुकी दोस्तों से फोन पर बातचीत करता हूं। वे असहाय हैं और सच बोलने में असक्षम हैं क्योंकि उनको बंदूक के बल पर धमकाया जा रहा है।

अवधेश यादव पर हमले के आरोपित पर ठगी का एक और केस

रांची । जमीन कारोबारी अवधेश यादव पर हमले के आरोपित चितरंजन कुमार पर ठगी का एक और केस सोमवार को दर्ज कराया गया है। जमीन कारोबारी अवधेश यादव पर जानलेवा हमले के आरोप में जेल में बंद चितरंजन कुमार पर यह आरोप दर्ज हुआ है। चितरंजन भी जमीन कारोबारी है। चितरंजन ने जमीन देने के नाम पर कई लोगों को ठगी का शिकार बनाया है। इसी में से एक कांके रोड निवासी घनश्याम प्रसाद श्रीवास्तव भी शामिल हैं। उन्होंने अपने वकील बिजय लक्ष्मी श्रीवास्तव की मदद से कोर्ट में केस दर्ज कराया है। जल्द ही इस मामले में आरोपित चितरंजन कुमार को रिमांड पर लिया जाएगा। प्रार्थी के वकील ने मामले में आरोपित को रिमांड पर लेने का आवेदन न्यायिक दंडाधिकारी की अदालत में दिया है।

संसद सुरक्षा चूक मामला: लोकसभा और राज्यसभा से अब तक 92 सांसद सस्पेंड

गृह मंत्री अमित शाह के बयान की मांग को लेकर संसद के दोनों सदनों में हंगामा

सोमवार को 78 सांसदों को व 14 को 14 सांसदों को निलंबित किया जा चुका है

14 दिसंबर में भी 14 पर हुई थी कार्रवाई

इससे पहले गुरुवार को दोनों सदनों के 14 सांसदों को निलंबित कर दिया गया था। इसमें लोकसभा के 13 और राज्यसभा के एक सांसद शामिल थे। इस तरह अब तक दोनों सदनों के 92 सांसदों पर निलंबन की कार्रवाई की जा चुकी है।

एजेंसी। नई दिल्ली

संसद के शीतकालीन सत्र में संसद सुरक्षा चूक मामले को लेकर विपक्षी सांसदों का हंगामा जारी है। सोमवार को लोकसभा और राज्यसभा से कुल 78 सांसद सस्पेंड कर दिए गए। राज्यसभा से 45 और लोकसभा से 33 सांसदों को निलंबित किया गया है। इससे पहले पिछले सप्ताह 14 विपक्षी सांसदों को निलंबित किया गया था। इन्हें मिलाकर अब तक इस सत्र में कुल 92 विपक्षी सांसदों को निलंबित किया जा चुका है। राज्यसभा से निलंबित किए गए सांसदों में कांग्रेस नेता केसी वेणुगोपाल, जयराम रमेश, रणदीप सुरजेवाला, प्रमोद तिवारी, फुलों देवी नेताम, रंजीत रंजन, इमरान प्रतापगढ़ी, समाजवादी पार्टी के प्रोफेसर रामगोपाल यादव, आरजेडी के मनोज झा, सहित 45 नाम शामिल हैं। लोकसभा में सदन की कार्यवाही बाधित करने और आसन की अवमानना को लेकर सोमवार को विपक्षी दलों के 30 सदस्यों को मौजूदा संसद सत्र की शेष अवधि के लिए और तीन सदस्यों को विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक के लिए निलंबित किया गया। पीठासीन सभापति राजेन्द्र अग्रवाल ने आसन की अवमानना को लेकर एवं कार्यवाही बाधित करने के लिए तृणमूल कांग्रेस और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के नौ-नौ, कांग्रेस के सात, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग (आईयूएमएल) के दो तथा रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी, वीरुथलई चिरुथैगल काची (वीसीके) और जनता दल (यूनाइटेड) के एक-एक सदस्य का नाम लिया। संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने उक्त सभी सदस्यों को नियम 374 (दो) के तहत संसद के शेष सत्र के लिए सदन से निलंबित करने का प्रस्ताव पेश किया, जिसे सदस्यों ने ध्वनि मत से पारित कर दिया। कांग्रेस के सात सदस्यों- अधीर रंजन चौधरी, एंटो एंटोनी, के मुरलीधरन, के सुरेश, अमर सिंह, राजा मोहन उन्नीथन और गौरव गोगोई को शेष सत्र के लिए निलंबित किया गया है। टीएमसी के निलंबित सदस्यों में कल्याण बनर्जी, अपरुपा पोद्दार, प्रसून बनर्जी, सौगत राय, शताब्दी राय, असित कुमार मंडल, प्रतिमा मंडल, काकोली घोष दस्तीदार और सुनील कुमार मंडल शामिल हैं। द्रमुक के जिन नौ लोकसभा सदस्यों को निलंबित किया गया है उनमें टी आर बालू, ए. राजा, दयानिधि मारन, जी सेल्वम, सीएन अन्नादुरई, डॉ. टी सुमति, के वीरासामी, एस एस पल्ली मणिक्कम और रामलिंगम शामिल हैं। लोकसभा ने आईयूएमएल के ई टी मोहम्मद बशीर और के नवासिकानी को निलंबित किया है, जबकि आरएसपी के एन के प्रेमचंद्रन, जदयू के कौशलेन्द्र कुमार और वीसीके तिरुवक्कसरर भी निलंबित सदस्यों में शामिल हैं। जोशी के प्रस्ताव पर कांग्रेस के तीन अन्य लोकसभा सदस्यों के. जयकुमार, विजय वसंत और अब्दुल खालिक को विशेषाधिकार समिति की रिपोर्ट आने तक के लिए निलंबित किया गया।

1. कल्याण बनर्जी तृणमुल कांग्रेस
2. ए राजा द्रमुक
3. टी. सुमति द्रमुक
4. दयानिधि मारन द्रमुक
5. अपारूपा पोद्दार तृणमुल कांग्रेस
6. प्रसून बनर्जी तृणमुल कांग्रेस
7. ईटी मोहम्मद बशीर इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग
8. जी. सेल्वम द्रमुक
9. सीएन अन्नादुरई द्रमुक
10. अधीर रंजन चौधरी कांग्रेस
11. असीत कुमार मल तृणमुल कांग्रेस
12. कौशलेंद्र कुमार जदयु (व)
13. एंटो एंटनी कांग्रेस
14. एसएस पलानीमनिकम द्रमुक
15. अब्दुल खालिक कांग्रेस
16. थिरुनावुक्करासर कांग्रेस
17. प्रतिमा मंडल तृणमुल कांग्रेस
18. काकोली घोष तृणमुल कांग्रेस
19. के.मुरलीधरन कांग्रेस
20. सुनील मंडल तृणमुल कांग्रेस
21. एस. रामालिंगम द्रमुक
22. के. सुरेश कांग्रेस
23. अमर सिंह कांग्रेस
24. राजमोहन उन्नीथन कांग्रेस
25. गौरव गोगोई कांग्रेस
26. टीआर बालू द्रमुक
27. के कानी नवास इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग
28. के वीरस्वामी द्रमुक
29. एनके प्रेमचंद्रन रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी
30. सौअत रॉय तृणमुल कांग्रेस
31. शताब्दी रॉय तृणमुल कांग्रेस
32. के जयकुमार कांग्रेस
33. विजय वसंत कांग्रेस

दाऊद को पाकिस्तान में जहर दिये जाने की अफवाह

इस्लामाबाद । अंडरवर्ल्ड डॉन और भगोड़े आतंकवादी दाऊद इब्राहिम कास्कर को जहर देने की अफवाहों और अटकलों ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तूफान ला दिया है, जो मुख्यधारा के लगभग हर मीडिया में सुर्खियां बन रहा है। हालांकि यह खबर अभी तक पुष्टी नहीं हुई है। एक खबर में बताया गया था कि कराची में रहने वाले अंडरवर्ल्ड दाऊद को एक अज्ञात व्यक्ति ने जहर दे दिया है और उसे गंभीर हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मालूम हो कि 67 वर्षीय दाऊद अपनी दूसरी पत्नी, तीन बेटियों और एक बेटे के साथ कड़ी सुरक्षा के बीच और सार्वजनिक चकाचौंध से दूर कराची में रह रहा है। यह भी दावा किया गया कि जिस अस्पताल में दाऊद को ले जाया गया है, वहां भी कड़ी सुरक्षा रखी जा रही है। पाकिस्तान ने आधिकारिक तौर पर भारतीय दावों का खंडन किया है कि दाऊद कराची या देश के किसी अन्य हिस्से में रहता है। विश्वसनीय सूत्रों ने कहा है कि किसी भी अज्ञात व्यक्ति के लिए दाऊद तक पहुंच पाना लगभग असंभव है क्योंकि वह अपने सबसे भरोसेमंद लोगों, परिवार के सदस्यों, करीबी सहयोगियों और सुरक्षाकर्मियों से घिरा हुआ है, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि उसे सुरक्षित रखा जाए। दाऊद इब्राहिम को चिकित्सीय समस्याएं हैं और विभिन्न दवाओं के माध्यम से वह अपने स्वास्थ्य को बनाए रखता है। जनवरी 2023 में, यह बताया गया कि दाऊद के भतीजे ने एनआईए को पुष्टि की कि उसने पाकिस्तान में दोबारा शादी कर ली है और अपने परिवार के साथ कराची में रह रहा है।

देश में फिर बढ़ने लगे कोरोना के मामले, केंद्र ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली । केरल में एक महिला में कोविड-19 का सब-वेरिएंट जेएन 1 पाए जाने के बाद केद्र सरकार अलर्ट हो गई है। सरकार ने कोविड मामलों में बढोतरी और भारत में जेएन 1 वैरिएंट के पहले मामले का पता चलने के मद्देनजर राज्यों को एडवाइजरी जारी की है। इसके साथ ही राज्यों को नियमित तौर पर हर जिले में एसएआरआई और आईएलआई मामलों की रिपोर्ट और निगरानी करनी होगी। राज्यों को ज्यादा-ज्यादा से संख्या में आरटी-पीसीआर परीक्षणों सहित पर्याप्त परीक्षण सुनिश्चित करने की सलाह दी है।

सेना में आत्महत्या और वीआरएस के बढ़ते मामले चिंताजनक

सुनील बादल

भारतीय सेना सदियों से अपनी बहादुरी और देशभक्ति के लिए जानी जाती है जिसने कम संसंधानों के साथ भी इन्हीं भावनाओं के साथ अनेक चर्चित युद्ध जीते हैं लेकिन इधर समुचित संसाधनों और अच्छे वेतनमान के बाद भी देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवान बड़ी संख्या में या तो आत्महत्या कर रहे हैं या स्वैच्छिक सेवानिवृति ले रहे हैं जो चिंताजनक है । भारतीय सेना ने कहा है कि 2001 के बाद से हर साल 100 से 140 सैनिक ₹आत्महत्या या खुद को लगी चोटों₹ के कारण मारे गए हैं। भारतीय सेना को इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है कि वह विषम परिस्थिति में भी डिगे नहीं और हर बाधा से लड़ कर विजयश्री प्राप्त करे । फिर हार की भावना या हताशा क्यों ? विशेषज्ञ मानते हैं कि पड़ोसी देशों से में चल रहे छद्म युद्ध या नक्सली गतिविधियों के कारण लंबे समय से अपने परिवार से दूर रहते हुए उन्हें घर से आने वाली हर बुरी खबर एक अदृश्य अवसाद में भेज देती है। विवादों को निपटाने के लिए उनका अपने घर और परिवार में बार-बार आना-जाना संभाव नहीं होता और जब वे व्यक्तिगत या व्यावसायिक दायित्वों को पूरा किए बिना अपने पद पर लौटते हैं तो उनका तनाव बढ़ है । देश में सरकारी कामकाज में भ्रष्टाचार के कारण सीमित अवधि में काम कराना बहुत मुश्किल होता है वह भी बिना रिश्वत के जिसकी उन्हें आदत नहीं होती । रेजिमेंटल नियमों के विरुद्ध छुट्टी से अधिक समय तक रुकने पर कंपनी कमांडर की रिपोर्ट या चेतावनी से उनका संकट और बढ़ जाता है कई बार कंपनी कमांडर दयालु और समझदार भी होते हैं पर बार-बार छुट्टी की मांग को अस्वीकार कर देते हैं। कल एक सैनिक ने विवाह कर ड्यूटी पर लौटने के बाद आत्महत्या कर ली । बहुत बार घर-परिवार के लोग सेना के अनुशासन को नहीं समझते और ताने मारते हैं । यह कहानी उन हजारों मध्यमवर्गीय लोगों की है जो सेना और अर्धसैनिक बलों में भर्ती होकर अपने घरों का बोझ अपने साथ अपनी सीमा चौकियों तक ले जाते हैं। उनके जीवन पर हावी होने वाले कई व्यक्तिगत विवाद उन्हें पुलिस स्टेशनों, तहसीलदार अदालतों, राजस्व और आपराधिक अदालतों तक ले जाते हैं। भारतीय सेना का हथियारधारी जवान, वीर सेनानी हर कोर्ट और पुलिस स्टेशन पर हाथ जोड़े खड़ा रहता है। उनका अभिमान चूर-चूर हो जाता है जब उन्हें कोई भाव नहीं देता, राष्ट्र के लिए लड़ने का उनका संकल्प और समाज के प्रति उनका विश्वास हिल जाता है । अधिकांश सैनिक साल में 10 से 11 महीने घर से दूर रहते हैं, जो अंततः वैवाहिक कलह, आरोप-प्रत्यारोप का कारण बनता है। जब समस्याएं बढ़ जाती हैं, तो उन्हें जान लेने जैसा चरम कदम उठाना पड़ता है। सैनिकों के मनोबल पर इसका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है, जो बड़ी संख्या में उनकी सेवानिवृत्ति में बदल जाता है। आधिकारिक आंकड़े कहते हैं कि सेना में स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की दर सबसे अधिक है, । पिछले पांच वर्ष में केंद्रीय अर्धसैनिक बलों के 46960 जवानों/अधिकारियों ने नौकरी छोड़ दी। यह निश्चित रूप से सेना के लिए अच्छा संकेत नहीं है, जो पहले से ही अधिकारियों की कमी से जूझ रही है। उनकी समस्याओं का समाधान कंपनी कमांडर, बटालियन के कमांडेंट, गांव के सरपंच या उनके घर वाले कर सकते हैं । सैनिकों को भी इसके लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। जिला और ग्राम प्राधिकारियों को संवेदनशील बनाना भी एक ▸▸ शेष पृष्ठ 11 पर

सिमबोसिस स्कूल के 9वीं के छात्र की क्लास रूम में मौत

आरएनएम। धनबाद

बरवाअड्डा स्थित सिमबोसिस स्कूल के 9वीं के एक छात्र की सोमवार को मौत हो गई।

बताया जाता है कि छात्र अपने क्लास रूम में बैठा था, जिसके बाद उसे चक्कर आया और फिर वह जमीन पर गिर पड़ा। इसके बाद उसे स्थानीय एक अस्पताल में ले जाया गया, जहां से उसे एसएनएमएमसीएच रेफर कर दिया गया। वहां जांच के बाद डॉक्टरों ने छात्र को मृत घोषित कर दिया। घटना के संबंध में में मृत छात्र अजय कुमार (15) के पिता रेलकर्मी जगदीश साव ने बताया कि उनका बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ था। सुबह भी वह स्कूल के लिए खुद तैयार हुआ और अपने स्कूल गया, लेकिन कुछ समय बाद उसके स्कूल से उसे फोन आया कि उसके बच्चे की तबियत बिगड़ गई है, उन्हें जल्द से जल्द असर्फी अस्पताल बुलाया गया। असर्फी अस्पताल पहुंचने पर उन्हें बताया गया कि आप एसएनएमएमसीएच चले आइये। आने पर उन्हें उनका बेटा मृत हालत में मिला। वहीं स्कूल की प्रचार्या इंद्राणी ने बताया कि छात्र काफी समय तक स्कूल में अपने सिर को नीचे दबा कर बैठा था। इसके बाद स्कूल के शिक्षक द्वारा पूछे जाने पर उसके साथ बैठे उसके क्लास फ्रेंड ने बताया कि उसे चक्कर आ रही है।

रांची जिला सीनियर महिला एवं पुरुष कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन

रांची । 24 वी झारखंड राज्य सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता-2023 में भाग लेने हेतु राँची जिला सीनियर पुरुष फ्रीस्टाइल, ग्रीको रोमन स्टाइल एवं महिला फ्रीस्टाइल कुश्ती प्रतियोगिता/सह टीम चयन ट्रायल का आयोजन 20 दिसंबर को 10:00 बजे से बिरसा मुंडा स्टेडियम मोराबादी,राँची में आयोजित किया जाएगा। राँची जिला के खिलाड़ियों को इस चयन ट्रायल/प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अपने साथ पंचायत या नगर परिषद द्वारा निर्गत जन्म प्रमाणपत्र, पिछले क्लास का मार्क शीट,आधार कार्ड, आवासीय प्रमाण पत्र की मूल एवं छाया प्रति और अपना पासपोर्ट साइज फोटो साथ में लाना अनिवार्य होगा। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रहने वाले पहलवान,दिनांक 22 दिसंबर से 24 अक्टूबर 2023, तक खेलगाँव राँची, झारखंड में आयोजित झारखंड राज्य सीनियर कुश्ती प्रतियोगिता 2023 में रांची जिला का प्रतिनिधित्व करेंगे।

गूंज महोत्सव सांस्कृतिक विरासत, परंपरा और विकास यात्रा की धड़कन है: राज्यपाल

सिल्ली में उत्साह, उमंग और उल्लास के बीच तीन दिवसीय गूंज महोत्सव शुरू

सेवा और विकास का लक्ष्य सर्वोपरि, इसके केन्द्र में है शिक्षा, चिकित्सा और न्याय व्यवस्था : सुदेश महतो

सिल्ली/ रांची। उत्साह, उल्लास और उमंग के बीच सिल्ली में तीन दिवसीय गूंज महोत्सव का आज झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने उद्घाटन किया। उदघाटन समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गूंज महोत्सव हमारी सांस्कृतिक विरासत, परंपरा और विकास यात्रा की धड़कन है। गूंज महोत्सव एक उत्सव ही नहीं, सामूहिक शक्ति का प्रतीक है। अनेकता व विविधता के बीच एकता की ताकत है।

उन्होंने कहा कि इस वृहद और भव्य आयोजन में शिरकत करने की उन्हें खुशी है। हम सभी जानते हैं कि हमारी परंपरा, संस्कृति, रितिरिवाज विश्व में सबसे खूबसूरत है। हमारी संस्कृति हमें किसी भी आधार पर भेद भाव करना नहीं सिखाती है। उन्होंने इस आयोजन के लिए गूंज परिवार के संरक्षक और पूर्व उप मुख्यमंत्री श्री सुदेश कुमार महतो की तारीफ करते हुए कहा कि झारखंडी संस्कृति, परंपरा और चेतना को सहेजने के साथ सेवा और विकास के सकारात्मक प्रयास बेहद सराहनीय हैं। राज्यपाल छऊ नृत्य कलाकारों और स्कूली छात्राओं का मनोहर संस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन देख कर भाव विभोर हुए। और कहा कि गूंज महोत्सव सिर्फ वर्तमन परिदृश्य से परिचय नहीं कराता है बल्कि अतीत के बारे में बताता है और भविष्य की राह भी दिखाता है। राज्यपाल ने कहा कि उन्हें मालूम हुआ है कि गूंज ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की है। यह इस क्षेत्र के लिए गौरव, गुमान का आयोजन है। राज्यपाल ने कहा कि हमारी सभ्यता, संस्कृति, परंपरा यही बताती है कि कला, हुनर और नारी शक्ति का सम्मान करना चाहिए। नारी शक्ति का जहां सम्मान होता है , वहां देवताओं का वास होता है।

सेवा कठिन है, लेकिन इससे अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाएंगे: सुदेश

इस मौके पर राज्यपाल और अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए सुदेश कुमार महतो ने कहा कि गूंज महोत्सव का आयोजन हमारे लिए एक दायित्व है। और इस दायित्व बोध को समझते हुए गूंज से जुड़े 70 हजार परिवारों की चर्चा भी जरूरी है, जो हमारी ताकत और क्षमता को ऊर्जा प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि इस महोत्सव की जड़ें गहरी हैं। असहायों और साधारण लोगों के बीच मानवीय सेवा करने की कोशिशों को हम लगातार आगे बढ़ाते हुए इस जड़ को मजबूती प्रदान करने में जुटे हैं।

सरकार आपके द्वार कार्यक्रम

मांडर। मांडर प्रखंड के करगे पंचायत आपकी योजना आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस शिविर में विभिन्न योजनाओं से सबंधित आवेदन प्राप्त हुए एवं परिसम्पतियों का वितरण किया गया। जिसमें मुख्य रूप से अबुआ आवास योजना, मनरेगा जॉब कार्ड, कंबल वितरण, मनरेगा से संबंधित नई योजना, अंचल कार्यालय से सेवा की गारंटी, स्वास्थ्य जाँच, किसान क्रेडिट कार्ड, कल्याण विभाग द्वारा साईकिल वितरण, 15वे वित्त की योजनाऐं, राशन कार्ड सुधार एवं निर्माण, सर्वजन-पेंशन योजना है। दौरान विभिन्न कंजिया में विभागों के कुल 2275 आवेदन प्राप्त किया गया तथा 1187 परिसंपत्तियों का वितरण किया गया। शिविर में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए प्रखंड विकास मनोरंजन कुमार ने कहा कि झारखण्ड सरकार के द्वारा संचालित सभी महत्वाकांक्षी योजनाओं का लाभ लें। इस कार्यक्रम के द्वारा आपके गांव और द्वार तक पहुंचाने का लक्ष्य निर्धारित है। उन्होंने गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना, अबूआ आवास योजना के बारे में बताते हुए सरकार की इस महत्वाकांक्षी योजना का लाभ लेने की बात कही।

दलित गौरव मिलन समारोह का किया गया आयोजन

नवीन मेल संवाददाता

रांची। पश्चिम सिंहभूम लोक सभा क्षेत्र के चाईबासा में सोमवार को दलित गौरव मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेश अध्यक्ष केदार पासवान व नेशनल कोऑर्डिनेटर वशिष्ठ लाल पासवान, कार्यालय प्रभारी रंजीत बावरी सहित कई प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। कमल राम, राजकुमार रजक, शेखर दास बिशू ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मालू हो कि राज्य में लाकसभा चुनाव की तैयारी के मद्देनजर सभी लोकसभा क्षेत्रों में अगले एक माह तक इस कार्यक्रम का आयोजन होगा। वशिष्ठ लाल पासवान ने बताया कि ऐसे आयोजन से दलित समाज को जोड़ने के साथ ही पार्टी को सफलता मिलेगी, साथ ही समाज के गौरव बिंदुओं से सभी को अवगत कराया जाएगा। इससे समाज का आत्मविश्वास बढ़ेगा और उनके सामाजिक-राजीतिक विकास में नया आयाम जुड़ेगा।

पूर्व मंत्री डॉ षाड़ंगी ने अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष शमशेर को दी बधाई

रांची। भाजपा के वरिष्ठ नेता और राज्य के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री डॉ दिनेश षाड़ंगी ने सोमवार को राज्य अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष को उनके आवास पर अपनी लिखित उड़िया भाषा की पुस्तक और फूलों का गुलदस्ता देकर आलम को आयोग के उपाध्यक्ष बनने पर बधाई दी। षाडंगी ने बधाई देते हुए यह मांग भी किया कि राज्य में उड़िया भाषा का विकास पर ध्यान दिये जाने की बहुत जरूरत है और जिन विद्यालयों में उड़िया भाषा की पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं, आयोग के माध्यम से उन विद्यालयों में उड़िया भाषा की पुस्तक उपलब्ध कराने एवं विद्यालयों में भाषा विसंगति को सुधार कर शिक्षकों की पदस्थापन करवाने की मांग भी की। साथ ही षाड़ंगी ने उड़िया उच्च विद्यालय, खंदामौदा, बहरागोड़ा की 84वॉं वर्षगॉंठ पर 31 जनवरी को आयोजित आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए भी आमंत्रण दिया।

बुंडू प्रखंड में चलाया गया विधिक जागरुकता अभियान

रांची। जिला विधिक सेवा प्राधिकार की ओर से बुंडू प्रखंड के ताऊ पंचायत में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में स्टॉल लगाकर ग्रामीणों के बीच विधिक जागरूकता चलाया गया। झालसा के कार्यकारी अध्यक्ष न्यायामूर्ति एस चंद्रशेखर द्वारा परिकल्पित आउटरीच योजना के तहत सोमवार को ग्रामीणों को कई तरह की कानून की जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में एलएडीसी अधिवक्ता वीरेंद्र प्रताप, पीएलवी रूक्मिणी देवी, सोनामनि देवी, मुस्कान कुमारी, आरती कुमारी एवं राजा वर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान विचाराधीन बंदियों तथा अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के वर्गों के लोगों को डालसा के द्वारा मुकदमा लड़ने तथा अपना बचाव करने के लिए निःशुल्क विधिक सहायता के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में बाल विवाह, बाल श्रम, प्री-लिटिगेशन मुकदमा दर्ज कराने, विधवा पेंशन, वृद्धा पेंशन, असंगठित मजदूरों का निबंधन, आयुष्मान भारत योजना के गोल्डन कार्ड, शौचालय स्वच्छता के बारे में बताया गया। डालसा के पीएलवी ने राहगीरों के बीच पंपलेट, लिफलेट तथा कानूनी पुस्तिका का वितरण किया। जगरूकता कार्यक्रम के मौके पर उपस्थित लोगों को कानूनी संबंधी पुस्तिका व पम्पलेट, लीफलेट लोगों के बीच बांटे गये एवं सरकार द्वारा चलाये जा रहे योजनाओं का लाभ प्राप्त करने के बारे में बताया गया।

एलआईसी पॉलिसी बेचने के नाम पर ठगी, पुलिस ने तीन को दबोचा

जामताड़ा। इन दिनों क्राइम का सिलसिला बहुत ज्यादा ही फलफूल रहा है। साइबर पुलिस ने फ्रॉड कर लोगों को चूना लगाने वाले तीन शातिरों को रंगेहाथ धर-दबोचा है। आरोपित भोले-भाले को एलआईसी की पालिसी लेने के नाम पर पहले झांसे में लेता था और उन्हें ठगी का शिकार बना रहे थे। सभी आरोपित यूपी बिहार मध्यप्रदेश ओडिशा समेत देश के कई राज्यों में कॉल कर फ्रॉड का शिकार बना रहे थे। सभी मोबाइल की जांच पुलिस की टेक्निकल सेल की टीम कर रही है।जामताड़ा साइबर थाने की पुलिस ने करमाटांड़ थाना क्षेत्र में छापेमारी के दौरान तीन साइबर ठगों को दबोचा है। आरोपित लोगों को एलआईसी की पालिसी लेने के नाम पर झांसे में लेते और उन्हें ठगी का शिकार बना रहे थे।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमंडल, सिमडेगा

अति अल्पकालीन ई–पुनर्निविदा आमंत्रण सूचना (2nd Call)

ई– पुनर्निविदा सूचना संख्या – 06/2023-24/RWD/SIMDEGAदिनांक – 16-12-2023

1.कार्य की विस्तृत विवरणी:जिला अनाबद्ध मद अन्तर्गत (Untied Fund)

क्र०सं०	प्रखण्ड	आईडेन्टीफिकेशन संख्या/ पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख में)	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1.	सिमडेगा	RWD/ SIMDEGA/ 06/01/2023-24	जोगबहार पंचायत में मुड़िया पहारटोली से घुटबहार जाने वाली पथ में 250 मी० पी०सी०सी० पथ निर्माण।	11.35200	24000	2500	3 माह
2.	केरसई	RWD/ SIMDEGA/ 06/02/2023-24	महुवाटोली जाने वाले कालीकरण रोड में रॉबर्ट केरकेट्टा के घर से कारीलकुचा (बिरहोर बस्ती) लगभग 550 मी० पी०सी०सी० पथ निर्माण।	20.44500	42000	5000	3 माह
3.	केरसई	RWD/ SIMDEGA/ 06/03/2023-24	कालीकरण रोड में निस्तोर केरकेट्टा के घर से कारीलकुचा (बिरहोर बस्ती) लगभग 500 मी० पी०सी०सी० पथ निर्माण। (Part –A)	18.58600	38000	5000	3 माह

2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि – 19-12-2023
3. ई– पुनर्निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय – 26-12-2023 अपराह्न 5:00 बजे तक
4. ई– पुनर्निविदा खोलने की तिथि एवं समय – 28-12-2023 पूर्वाह्न 11:30 बजे
5. ई– पुनर्निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का पदनाम एवं पता – कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमंडल, सिमडेगा।
6. ई– पुनर्निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं० – 06525-299956 एवं मोबाईल नम्बर 9973512046
7. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि विभागीय पत्रांक 3130 अनु० दि० 09-10-2023 के निर्देशानुसार केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
8. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई– भुगतान जिस खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही निविदादाता की होगी।

विस्तृत जानकारी के लिये वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

ह0/–
कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण कार्य विभाग,कार्य प्रमंडल, सिमडेगा

PR313706 (Simdega)23-24*D

कश्मीरी युवाओं को भी लुभाते हैं झारखंड के पर्यटनस्थल

नवीन मेल संवाददाता

मांडर। इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट राँची में सोमवार को कश्मीरी युवाओं के लिए स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। नेहरू युवा केंद्र संगठन द्वारा आयोजित कश्मीरी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम 2023 वतन को जाने के तहत जम्मू एवं कश्मीर के अनंतनाग, कुपवाड़ा, बारामूला, बडगाम, श्रीनगर एवं पुलवामा जिले के कुल 122 युवाओं का दल पिछले छः दिनों से झारखंड के दौरे पर है। कार्यक्रम की शुरूआत झारखंड राज्य की कला संस्कृति की प्रस्तुति देते हुए आदिवासी नृत्य झूमर से की गयी। साथ हीं नगड़ी के युवाओं द्वारा पाईका नृत्य, संहाल ग्रुप द्वारा शास्त्रीय नृत्य तथा कश्मीरी युवाओं द्वारा कश्मीरी नृत्य की प्रस्तुति दी गयी। आईएचएम राँची के प्राचार्य डॉ. भूपेश कुमार ने सभी कश्मीरी युवाओं का अभिवादन एवं नेहरू युवा केंद्र संगठन राँची के इस सहयोग हेतु आभार व्यक्त करते हुए बताया कि यह हमारे लिए काफी हर्ष की बात है कि कश्मीरी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत हमें इन युवाओं से मिलने तथा कश्मीर की संस्कृति, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक परिस्थितियों तथा कश्मीरी व्यंजनों को जानने का मौका मिला। साथ ही बताया कि कश्मीर की तरह झारखंड में भी अनेक पर्यटन स्थल हैं जो कश्मीरी युवाओं का काफी लुभावना है।

बाइक चोर गिरोह के पांच सदस्यों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

रांची। रांची के अरगोड़ा थाना पुलिस ने बाइक चोर गिरोह का खुलासा करते हुए पांच सदस्यों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधियों में सुभाष कुमार, रवि लोहरा, राहुल उर्फ श्रीकेष, तबरेज अंसारी और सूरज करकेट्टा शामिल है। इनके पास से तीन स्कूटी, तीन बाइक और पांच मोबाइल फोन बरामद किया गया है। एसएसपी चंदन कुमार सिन्हा ने सोमवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गुप्त सूचना मिली थी कि आनंदपुरी चौक में दो अपराधी बाइक और स्कूटी, जो चोरी का है, को बेचने के लिए घूम रहे हैं। इस सूचना पर सिटी एसपी राज कुमार मेहता के नेतृत्व में एक टीम गठन किया गया। टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए डीएसपी हटिया और थाना प्रभारी अरगोड़ा उक्त स्थान पर छापेमारी की। छापेमारी टीम आनंदपुरी चौक पहुंची तो पुलिस टीम को देखकर दो व्यक्ति भागने का प्रयास करने लगे। टीम ने बाइक और स्कूटी के साथ खदेड़ कर दो लोगों सुभाष कुमार एवं रवि लोहरा पकड़ा। पूछताछ करने पर दोनों ने बताया कि दोनों गाड़ी चोरी का है, जिसे हरमू हाउसिंग कॉलोनी एवं भारत माता चौक से चोरी किए हैं, जिसे बेचने के लिए घूम रहे थे। दोनों ने पूछताछ में बताया कि इनके साथ इमली चौक का सूरज केरकेट्टा, डीपाटोली का राहुल उर्फ श्रीकेश एवं इलाहीनगर का तबरेज अंसारी भी चोरी के काम में सहयोगी हैं।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, रॉंची

ई–निविदा आमंत्रण सूचना

पत्रांकः– दिनांक–

ई–निविदा संख्याः– 14/2023-24/RWD /EE/RANCHI

क्रम सं0	आईडेन्टी फिकेशन संख्या/ पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपये में)		कार्य समाप्ति की तिथि /अवधि	टेण्डर कॉल नं0
			अंक में	अक्षर में		
1	RWD/EE/ RANCHI/ 23/2023-24	सकरपुर से बेलटोली तक पथ निर्माण कार्य (लं0–1.210 कि0मी0)।	97,45,100.00	सन्तानबे लाख पैंतालीस हजार एक सौ रूपये मात्र।	6 माह	प्रथम
2	RWD/EE/ RANCHI/ 24/2023-24	चटवल पावर हाउस चौराहा से मसमानो बस्ती तक पथ निर्माण कार्य(लं0–1.055 कि0मी0)।	97,96,900.00	सन्तानबे लाख छियानबे हजार नौ सौ रूपये मात्र।	6 माह	प्रथम

1. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथिः–21.12.2023
2. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः–08.01.2024 अपराह्न 5.00 बजे तक।
3. निविदा खोलने की तिथि एवं समयः–10.01.2024 अपराह्न 3.30 बजे।
4. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पताः– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, राँची।
5. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0– 0651–2360137

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, राँची

PR 313709 REO(23-24)#D

कार्यालय नगर परिषद् रामगढ़

नगर परिषद्, रामगढ़ क्षेत्र अन्तर्गत अल्पकालिन आमंत्रण सूचना

अल्पकालिन सूचना संख्या – NIT/RGH/NP/02/2023-24 (2nd Call)

1	निविदा निकालने वाले पदाधिकारी	:–	कार्यपालक पदाधिकारी, नगर परिषद् रामगढ़।
2	निविदा वेबसाईट पर प्रकाशन की तिथि	:–	दिनांक : 21.12.2023
3	निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने की अंतिम तिथि	:–	दिनांक : 04.01.2024 अपराहन 04:00 बजे तक।
4	निविदा प्रपत्र ऑनलाईन भरने का वेबसाईट	:–	केवल ई–निविदा (http://jharkhandtenders.gov.in)
5	वेबसाईट पर अपलोड किया गया दस्तावेज की मुल प्रति जमा करने की अंतिम तिथि व समय	:–	दिनांक : 05.01.2024 अपराहन् 4:00 बजे तक।
6	निविदा खोलने की तिथि व समय एवं स्थान	:–	दिनांक : 06.01.2024 अपराहन् 12:00 बजे से। नगर परिषद्, रामगढ़ ।
7	मद का नाम	:–	नागरिक सुविधा।
8	हेल्पलाईन नं0	:–	9334702381, 9110072039

क्र0 सं0	वार्ड नं0	योजना का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	विपत्र का मूल्य	कार्य करने का समय
1	26	Construction of Boundary Wall and Pavers Block at Kusum Tola in Campus of Mahadev Mandir in ward 26	2158700.00	43174.00	5000.00	120 दिन

नोटः–
1. केवल ई–निविदा ही स्वीकार की जाएगी।
2. संवेदक द्वारा ई–निविदा में अपलोड किया गया सभी दस्तावेज तथा संवेदक का निबंधन प्रमाण पत्र, आयकर रिर्टन (विगत तीन वर्षो का), पैन कार्ड, GSTR-1, GSTR-3B (विगत तीन माह) अथवा अद्यतन Quarterly Return, निबंधन प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, UCAN, अग्रधन राशि, निविदा प्रपत्र शुल्क व अन्य दस्तावेज दिनांक 06.01.2024 को अपराहन 4:00 बजे तक नगर परिषद् कार्यालय में जमा करना अनिवार्य है।
3. नगर विकास एंव आवास विभाग के अधीनस्त समुचित श्रेणी या एक श्रेणी उपर निबंधित संवेदको से निविदा आमंत्रित की जाती है।
4. निविदा की शर्ते एवं अन्य जानकारीयाँ http://jharkhandtenders.gov.in पर एवं नगर परिषद कार्यालय के सूचना पट्ट पर कार्य दिवस में 11:00 बजे पूर्वाहन से 04:30 अपराहन तक देखा जा सकता है।
5. जिन किन्ही भी संवेदक (प्रोपराईटशीप अथवा पार्टनरशीप) फर्म पर का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तगर्त पूर्ण नहीं हुआ है) उन्हें कार्य आवंटन में प्राथमिकता नहीं दी जायेगी।
6. जिन संवेदकों को कार्यालय द्वारा नियमानुसार कार्य आवंटित होने के पश्चात संवेदकों के द्वारा एकरारनामा नहीं किया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में उनके द्वारा समर्पित की गई अग्रधन की राशि जब्त कर ली जायेगी।
7. जिन किन्ही भी संवेदको का कार्य लम्बित होगा (यानि समयावधि के अन्तगर्त पूर्ण नहीं हुआ है) उन संवेदको को कार्य आवंटन में प्राथमिकता देने के लिए कार्यालय बाध्य नहीं हो सकती है।

कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद्, रामगढ़

PR 313733 District(23-24).D

झारखण्ड सरकार
अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग
(उप निदेशक कल्याण कार्यालय, दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल, रॉंची)
नामांकन सबंधी सूचना वर्ष–2024–25

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल, राँची अन्तर्गत अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा संचालित निम्न अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन–जाति आवासीय विद्यालयों में वर्ष 2024–2025 के रिक्ति के अनुसार वर्ग प्रथम में नामांकन हेतु इच्छुक छात्र/छात्राओं से विहित प्रपत्र में आवेदन पत्र दिनांक 23/02/2024 तक आमंत्रित किये जाते हैं।

दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल, राँची अन्तर्गत संचालित विद्यालय

राँची– अनुसूचित जाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, कमड़े।
अनुसूचित जाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, बुण्डू।
टाना भगत अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, सोनचीपी।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, बारीडीह, राँची।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका उच्च विद्यालय, तमाड़।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, अमनबुरू।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, ओरमांझी पिस्का।

खूँटी– अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका उच्च विद्यालय, कुन्दी।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, हूँट, अड़की।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, तपकरा।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, डोम्बारी।
बिरसा आवासीय बालक उच्च विद्यालय, उलीहातु।

गुमला– अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, सखुआपानी।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, जोभीपाट।
टाना भगत अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका उच्च विद्यालय, चापाटोली।
टाना भगत अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, घाघरा।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, डोकापाट।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका मध्य विद्यालय, चौरापाट।
आदिम जनजाति आवासीय प्राथमिक विद्यालय, जेहनगुटुवा। (एन0जी0ओ0 द्वारा संचालित)
आदिम जनजाति आवासीय प्राथमिक विद्यालय, महेशपुर, चैनपुर।(एन0जी0ओ0 द्वारा संचालित)
आदिम जनजाति आवासीय प्राथमिक विद्यालय, तुसगाँव, बिशुनपुर।(एन0जी0ओ0 द्वारा संचालित)

लोहरदगा– अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक उच्च विद्यालय, किस्को।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका मध्य विद्यालय, लोहरदगा।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, पेसरार।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, तुयुमुपाट।
टानाभगत अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, बमनडीहा।

सिमडेगा– अनुसूचित जनजाति आवासीय बालक मध्य विद्यालय, हाटिंगहोड़े।
अनुसूचित जनजाति आवासीय बालिका मध्य विद्यालय, सेवई।

1. वर्ग प्रथम में नामांकन हेतु आवेदन प्रपत्र संबंधित विद्यालय से प्रत्येक कार्य दिवस में प्रातः 10:00 बजे से अपराह्न 3:00 बजे प्राप्त किये जायेंगे।
2. अनुसूचित जाति के विद्यालय में अस्वच्छ कार्य में लगे परिवार के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत तथा मुसहर एवं भुईंया जाति के बच्चों के लिए 25 प्रतिशत स्थान नामांकन में सुरक्षित रहेगा। उसी प्रकार अनुसूचित जनजाति की सभी उपजातियों के लिए संचालित आवासीय विद्यालयों में आदिम जनजातियों के लिए नामांकन में 25 प्रतिशत स्थान सुरक्षित रहेगा। यदि उक्त कोटि की आरक्षित सीटों के लिए छात्र/छात्राएँ उपलब्ध नहीं होते हैं तो प्रमण्डलीय उप निदेशक, कल्याण का अनुमोदन लेकर मेधा सूची से ही अन्य अनुसूचित जाति एवं जनजाति की अन्य उपजातियों के बच्चों/बच्चियों का नामांकन आरक्षित सीट के विरूद्व किया जायेगा।
3. टानाभगत के लिए संचालित विद्यालय (सोनचीपी, बमनडीहा, चापाटोली एवं घाघरा) में टानाभगत के समुदाय के ही आवेदन पत्र वर्ग प्रथम के लिए विद्यालय में हीं स्वीकार किए जायेंगे।
4. नामांकन हेतु आवेदन पत्र जमा करने की अन्तिम तिथि 23/02/2024 निर्धारित है।
5. वर्ग प्रथम में नामांकन हेतु मौखिक परीक्षा दिनांक 26/02/2024 को सबंधित विद्यालय में प्रातः 11:00 बजे से होगी।
6. नामांकन हेतु चयनित छात्र/छात्राओं की सूची विद्यालय के सूचना पट पर प्रकाशित की जायेगी।
7. नामांकन के समय चयनित छात्र/छात्राओं को आधार कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, आवासीय प्रमाण पत्र एवं बी० पी० एल०/आय प्रमाण पत्र एवं टाना भगत आवासीय विद्यालयों के लिए टाना भगत समुदाय का प्रमाण पत्र मूल रूप में प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा।
8. गरीबी रेखा से नीचे आय वाले परिवार के बच्चों को ही नामांकित किया जायेगा इसके लिये बी० पी० एल०/आय प्रमाण की सूची में नाम अंकित होने के आधार पर नामांकन की पात्रता निर्धारित की जायेगी।
9. बिरसा आवासीय उच्च विद्यालय, उलिहातु में प्रथम वर्ग में 40 छात्रों का नामांकन किया जायेगा जिसमें 10 बच्चे उलिहातु ग्राम के एवं 30 बच्चे अड़की प्रखंड के विभिन्न गाँव के होंगे।
10. जिन छात्र/छात्राओं के माता पिता सरकारी सेवा में कार्यरत है उनके बच्चों का नामांकन हेतु आवेदन स्वीकार नहीं किया जायेगा। इस आशय का घोषणा पत्र आवेदक के माता पिता/अभिभावक के द्वारा आवेदन पत्र के साथ जमा करना अनिवार्य होगा। असत्य/फर्जी घोषणा देने वाले अभिभावक के विरूद्ध आवश्यक कानुनी कारवाई की जायेगी।
11. चयनित छात्र/छात्राओं को दिनांक 30/03/2024 तक नामांकन कराना अनिवार्य होगा। प्रतीक्षा सूची का नामांकन–10/04/2024 तक किया जायगा।
12. इच्छुक छात्र/छात्राओं का चयन विभाग द्वारा गठित चयन समिति द्वारा करने के उपरान्त चयनित छात्र/छात्राओं के नामांकन हेतु कार्यवाही पंजी सभी सदस्यो से हस्ताक्षर के उपरान्त, पंजी उप निदेशक कल्याण, दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल, राँची को दिनांक 28/02/2024 को उपस्थापित कर अनुमोदन प्राप्त कर लेगें।

उप निदेशक, कल्याण,
दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल, रॉंची।

PR 313721 Welfare(23-24)D

एक नजर

जेवीएम के प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 494 छात्र सम्मानित

रांची। जवाहर विद्या मंदिर श्यामली में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 494 छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। विद्यालय के दयानंद प्रेक्षागृह में माध्यमिक विभाग की ओर से पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि पुलिस मुख्यालय के अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (प्रशिक्षण एवं रक्षा) प्रिया दूबे, प्राचार्य समरजीत जाना, उप प्राचार्य बीएन झा, संजय कुमार, अनुपमा श्रीवास्तव, शीलेश्वर झा और मीनूदास गुप्ता ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया।

शैक्षिक व सांस्कृतिक मेले में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र सम्मानित

रांची। मौलाना आजाद ह्यूमेन इनिशिएटिव (माही) के अंतर्गत हिंदपीढ़ी स्थित सिटी पब्लिक स्कूल में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वैसे छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने 11 नवंबर को कडरू स्थित माही द्वारा हज हाउस में शैक्षिक एवं सांस्कृतिक मेले में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस अवसर पर स्कूल के निदेशक मसूद कच्छी को मेले से संबंधित मेमोरी फोटो एवं स्कूल पार्टिसिपेशन अवार्ड से नवाजा गया।

कांग्रेस ने मनाया विश्व अल्पसंख्यक दिवस

रांची। महानगर कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के अध्यक्ष हुसैन खान की अध्यक्षता में विश्व अल्पसंख्यक दिवस मनाया गया। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय आयोजित कार्यक्रम में रांची महानगर अल्पसंख्यक विभाग के सभी पदाधिकारी, जिला कमेटी और प्रखंड कमेटी के सामाजिक कार्य करने वालों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राजेश ठाकुर और प्रदेश अध्यक्ष अल्पसंख्यक विभाग के मंजूर अंसारी ने सभी को सम्मानित किया।

आरक्षण देने की मांग को लेकर जेपीएससी कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन

रांची। परीक्षा में आरक्षण की मांग को लेकर अभ्यर्थियों ने स्टेट स्टूडेंट्स यूनियन के बैनर तले जेपीएससी कार्यालय के समक्ष प्रदर्शन किया। मौके पर अभ्यर्थियों ने कहा कि जेपीएससी नियमावली को कैबिनेट से मंजूरी मिल गया है। छात्रों का आरोप है कि जेपीएससी पीटी परीक्षा में आरक्षित वर्ग में दावा करने वाले छात्रों को अनारक्षित वर्ग में मौका नहीं दिये जाने की सूचना है।

तापमान में अगले दो दिनों में 2 से 3 डिग्री तक होगी गिरावट

उत्तर दिशा से आने वाली सर्द हवा और बढ़ायेगी कनकनी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड में तापमान में गिरावट का सिलसिला जारी है, इससे मौसम में कनकनी बढ़ गयी है। सुबह और शाम के बाद कपकपाती ठंड से लोगों का हाल बेहाल है। ठंड से बचने के लिए लोगों को कई गर्म कपड़े एक साथ पहनने पड़ रहे है। दिनभर चलने वाली हल्की हवा ने ठंड का अहसास ज्यादा करा दिया है। हालांकि दोपहर में धूप रहने से थोड़ी राहत मिल रही है। इसके बावजूद हवा में नमी रहने के कारण गर्म कपड़ों में भी ठंड का अहसास हो रहा है। दोपहर बाद कनकनी बढ़ने से लोगों को पेरशानी हो रही है। मौमस में बदलाव का क्रम जारी है, रांची और आसपास न्यूनतम तापमान में गिरावट आयी है। कांके का न्यूनतम पारा 3.8 डिग्री हो गया है। वहीं रांची में न्यूनतम तापमान 8.0 डिग्री पहुंच गया है। रांची मौसम विज्ञान केंद्र के मुताबिक मंगलवार से मौसम में बदलाव देखने को मिल सकता है। आसमान में बादल छाएंगे, इससे न्यूनतम तापमान में

गिरावट होगी। राज्य में अगले 24 घंटे में दक्षिणी-पूर्वी हवा चलने की उम्मीद है। इसी हवा की वजह से बादल छाएंगे और न्यूनतम तापमान में बढ़ोत्तरी होगी। सुबह और रात की कनकनी से राहत मिल सकती है।

सुबह छाएगा कोहरा या धुंध

रांची के मौसम विभाग के अनुसार, राज्य में आगामी दो दिनों तक न्यूनतम तापमान में किसी बड़े बदलाव की संभावना नहीं है। लेकिन इसके बाद मौसम के तापमान में अगले दो दिनों के अंदर 2 से 3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की जा सकती है। 21 दिसंबर से 23 दिसंबर को सुबह में कोहरा या धुंध छाए रहने की संभावना है। वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि उत्तर दिशा से आने वाली सर्द हवा का प्रभाव बढ़ सकता है।

रांची का अधिकतम तापमान में दो डिग्री की गिरावट : मौसम विज्ञान केंद्र रांची के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद के मुताबिक ठंड के इस सीजन में रांची के तापमान में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई है। रांची में सीजन की सबसे ठंड लोगों को महसूस हो रही है। रांची का न्यूनतम तापमान भी 2 डिग्री की गिरावट दर्ज की गयी है।

मौसम पूर्वानुमान के मुताबिक रांची समेत झारखंड में अगले 24 घंटे तक ठंड व कनकनी कायम रहेगी, लेकिन इसके बाद मौसम में बदलाव के संकेत हैं।

21 से 23 दिसंबर तक सुबह में कोहरा या धुंध छाए रहने की संभावना

राज्य में अगले 24 घंटे में दक्षिणी-पूर्वी हवा चलने की उम्मीद है। हवा की वजह से बादल छाएंगे

भवन निर्माण मजदूरों ने किया विरोध प्रदर्शन

रांची। भवन निर्माण मजदूर यूनियन की ओर से डोरंडा स्थित श्रीकृष्ण पार्क से श्रमायुक्त कार्यालय तक पैदल मार्च किया गया। जिसके बाद श्रमायुक्त कार्यालय के समक्ष 14 सूत्री मांगों को लेकर प्रदर्शन किया गया। भवन निर्माण मजदूरों के आंदोलन को सीटू की ओर से संचालित किया गया। कार्यकारी अध्यक्ष भवन सिंह ने बताया कि विरोध प्रदर्शन के दौरान श्रमायुक्त को 14 सूत्री मांगों से संबंधित ज्ञापन सौंपा गया। जानकारी देते हुए श्री सिंह ने कहा कि भवन निर्माण के मजदूरों को नये-नये आदेश निर्गत किये जा रहे हैं। मजदूरों को लाभ देने में तथा नया कार्ड बनाने में अनावश्यक देरी की जा रही है। इन्हें पेंशन देने में भी श्रम विभाग की ओर से लापरवाही बरती जा रही है। साल 2022 और 2023 में भी लाभुकों को लाभ का भुगतान नहीं किया गया है। श्रमिक मित्रों को सामाजिक सुरक्षा और इंसेंटिव का लाभ नहीं दिया जा रहा है। इंसेंटिव में बढ़ोतरी भी नहीं की जा रही है। श्री सिंह ने बताया कि इन मांगों के लिए आने वाले समय में आंदोलन और तेज किया जायेगा।

शेख शहीद भिखारी व शहीद टिकैत सिंह समारोह समिति का चुनाव हुआ, कार्यक्रम 8 जनवरी को

रांची। शेख भिखारी/शहीद टिकैत उमराव सिंह समारोह समिति की बैठक नेजामुद्दीन मस्तान बाबा की अध्यक्षता में हुई। आईएसएम चौक पुंदाग में आयोजित बैठक में समिति का चुनाव किया गया। जिसका मुख्य संरक्षक एजाज अंसारी, इरफान अहमद, आफताब हुसैन, सज्जाद अंसारी, शोएब आलम को बनाया गया। अध्यक्ष तौकीर आलम, कार्यकारी अध्यक्ष मजहर हुसैन और इस्तियाक अंसारी, वरीय उपाध्यक्ष कुदुस अंसारी, उपाध्यक्ष एनामुल हक, प्रधान महासचिव बिंदे मुंडा, महासचिव जुल्फाम अंसारी और इनायत हुसैन को चुना गया। सचिव के रूप में अफरोज अंसारी और मुस्तफा अंसारी, उप सचिव शमशाद हुसैन, कोषाध्यक्ष मोबिन अंसारी और मीडिया प्रभारी तौसीफ खान का चयन किया गया। समिति की ओर से 8 जनवरी को झारखंड के वीर सपूत शेख शहीद भिखारी एवं शहीद उमराव टिकैत सिंह की शहादत दिवस का आयोजन किया जायेगा। जिसमें कव्वाली का आयोजन किया जाएगा। मुंबई के सुल्तान नजा और नागपुर की शाहीन सबा भारती कव्वाली पेश करेंगे। यह जानकारी मीडिया प्रभारी तौसीफ खान ने दी।

राष्ट्रीय महासचिव बने विजय शंकर नायक

रांची। संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित कुमार साहू ने रांची निवासी विजय शंकर नायक को संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी का राष्ट्रीय महासचिव के साथ झारखंड व छत्तीसगढ़ का प्रभारी बनाया है। विजय शंकर नायक के संपूर्ण भारत क्रांति पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह झारखंड, छत्तीसगढ़ प्रभारी बनाए जाने पर दलित, आदिवासी एवं मूलवासी समाज के लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है। हर्ष व्यक्त करने वालों में सम्पूर्ण भारत क्रांति पार्टी राष्ट्रीय प्रवक्ता सबरीना स्वेता टोप्पो, प्रदेश अध्यक्ष नील आगस्टीन बेक, प्रदेश महासचिव परवीन एक्का, विनय कुमार दुबे, अजय नाग, शफीक अंसारी, परवीन कुमार, इजराहुल हक, मंटु राम, दीपक पासवान, अशोक रवि, महानंद महतो, बैजनाथ महतो, रॉबिन मुंडा, कुन्दन कुमार सिन्हा, सुनील कुमार मालाकार, उपेन्द्र कुमार,अजीत कुमार, भरत गोसाई, इकबाल अंसारी, विक्की नायक, सिद्धार्थ नायक,अनंजय नायक और अशोक राम शामिल है।

बॉलीवुड फिल्म ब्लडी इश्क का हुआ मुहूर्त

रांची। ओटीटी प्लेटफार्म वाऊ सिनेमा का प्रथम वर्षगांठ समारोह मनाया गया। इस अवसर पर बॉलीवुड व भोजपुरी अभिनेता कुणाल सिंह, गायक व अभिनेता आलोक कुमार,अभिनेत्री प्रिया राजपूत, शशिनाथ दूबे भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान हिन्दी फिल्म ब्लडी इश्क का मूहूर्त भी किया गया। इस फिल्म की निर्मात्री शबनम राज एवं लेखक निर्देशक प्रभात राज, पटकथा संवाद लेखक पुष्पेन्द्र कुमार अनूप, गीतकार संजीव देव चौधरी एवं प्रभात राज, अपूर्वा बनर्जी, डीओपी भास्कर डोरनाला एवं कैमरा मैन संदीप गुप्ता, पीआरओ युधिष्ठिर महतो शामिल हैं। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में संजय मौर्य, प्रिया राजपूत, आलोक कुमार, साना भट्टाचार्या, कुणाल सिंह, देवेश खान, प्रभात राज, हैरी सिंह, बिनीता राय और राहुल शामिल थे।

विधानसभा घेराव करने जा रहे पंचायत सचिवालय स्वयंसेवकों को पुलिस ने रोका

नवीन मेल संवाददाता। रांची

अपनी मांगों को लेकर राजभवन के समक्ष 165 दिनों से अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे हुए है पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक संघ के कर्मी। सोमवार को अपनी मांगों की ओर ध्यान आकृष्ट कराने के लिए सैकड़ों की संख्या में कर्मियों ने विधानसभा घेराव करने का प्रयास किया। झारखंड राज्य स्तरीय पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक संघ के बैनर तले कर्मी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत विधानसभा का घेराव करने जा रहे थे। लेकिन उन्हें विधानसभा से पहले ही पुलिस ने रोक दिया। इसके बाद कर्मियों का आक्रोश और बढ़ गया। कर्मियों ने एक स्वर में कहा कि इस बार हम रुकने वाले नहीं है। प्रदेश अध्यक्ष चंद्रदीप ने कहा कि जबतक सीएम के साथ हमारी

मांगों को लेकर 165 दिनों से राजभवन के समक्ष धरना पर बैठे हैं कर्मी

वार्ता नहीं होगी और लिखित में आश्वासन नहीं मिलेगा, तब तक यहीं डटे रहेंगे। जब तक शीतकालीन सत्र चलेगा हम यहीं पर घेराव करते रहेंगे। घेराव करने जा रहे कर्मियों ने कहा कि सरकार के मुखिया हेमंत सोरेन ने 2019 में जो वादे किए थे, उसे वह पूरा करें। अन्यथा उन्हें नुकसान उठाना पड़ सकता है। अभी तक हेमंत सोरेन सरकार के इस रवैये से पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक संघ के कर्मचारी काफी निराश हैं। उन्होंने कहा कि सरकार हमें प्रोत्साहन राशि नहीं बल्कि मानदेय पर बहाल करें। इसके अलावा हमें स्थायी किया जाए। जिससे कि हमें भी सारी सुविधाएं मिल सके। उन्होंने कहा कि हमलोग 18 हजार कर्मी राज्यभर में है। उन्होंने मांग रखी है कि पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक संघ का नाम बदलकर पंचायत सहायक किया जाए।

जेपीएससी के अध्यक्ष से मिला प्रतिनिधिमंडल

पंचपरगनिया व कुरमाली व्याख्याताओं की नियुक्ति की मांग

नवीन मेल संवाददाता। रांची

पंचपरगनिया भाषा-साहित्य एवं कला परिषद का एक प्रतिनिधिमंडल झारखंड लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष डॉ. मेरी नीलिमा केरकेट्टा से मुलाकात किया। सिल्ली के पूर्व विधायक अमित कुमार महतो की अगुवाई में प्रतिनिधिमंडल ने पंचपरगनिया एवं कुरमाली विषय की व्याख्याता नियुक्ति सह साक्षात्कार जल्द कराने को लेकर एक ज्ञापन सौंपा। पूर्व विधायक ने जानना चाहा कि अन्य जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा में नियुक्ति प्रक्रिया पूर्ण हो गयी। किंतु पंचपरगनिया विषय का अभी तक क्यों नहीं हुआ। जबकि साक्षात्कार दिन तय करने के बाद उसे अचानक रद्द किया गया। जेपीएससी के अध्यक्ष डॉ.मेरी नीलिमा केरकेट्टा ने बताई कि पंचपरगनिया भाषा का अभी तक एक भी भाषायी विशेषज्ञ का नाम नहीं आया। इस संबंध में विश्वविद्यालय से भी नाम मांगा गया। परंतु विश्वविद्यालय भी अक्षम रहा। राजभवन को भी तीन-तीन बार भाषायी विशेषज्ञ का सूची उपलब्ध कराने को लेकर पत्राचार किया गया। अभी तक राजभवन से भी विशेषज्ञ का कोई लिस्ट प्राप्त नहीं हुआ है।

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पर आमया ने जारी किया रिपोर्ट कार्ड

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पर आमया संगठन ने झारखंड में अल्पसंख्यक समुदाय के अधिकार, न्याय, शिक्षा और भाषा से जुड़े मामलों पर अल्पसंख्यक रिपोर्ट कार्ड 2023 जारी किया। मौके पर आमया के अध्यक्ष एस अली ने कहा कि अल्पसंख्यकों को संविधान में मिले अधिकारों को समाप्त करने का प्रयास हो रहा है। न्याय और समानता का अधिकार मिल नही पा रहा। झारखंड में स्थित और भी विकट है, संयुक्त बिहार से मिले अधिकार भी छीने जा रहे है। उन्होंने कहा कि अब तक अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्थानों के लिए नियम नही बना। जिस कारण अल्पसंख्यक स्टेटस नहीं मिल रहे है। दूसरी तरफ सरकार द्वारा संचालित 543 प्रारम्भिक उर्दू स्कूलों का स्टेटस छीना लिए गया। मदरसों में शिक्षकों की बहाली के जारी हुए संकल्प 1090 वर्ष 1982 को नहीं माना जा रहा। मदरसा आलिम फाजिल की परीक्षा विश्वविद्यालय से कराने का मामले 23 वर्ष से लटका है। 23 वर्ष पूर्व प्रारम्भिक स्कूलों के लिए सृजित हुए 4401 उर्दू शिक्षक के पदों में 3700 पद आज भी खाली पड़े है।

दस सूत्री मांगें पूरी नहीं होने तक राशन का न करेंगे उठाव न वितरण

एक जनवरी से राज्य के 26 हजार पीडीएस डीलर्स जायेंगे हड़ताल पर

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड के पीडीएस डीलर्स कमीशन बढ़ाने और बकाये का भुगतान करने की मांग लंबे समय से सरकार से कर रहे है। लेकिन सरकार की ओर से मांगों पर कोई कार्रवाई नहीं होने से राज्य भर के पीडीएस डीलर्स नाराज है। आगे की रणनीति तैयार करने और आंदोलन तेज करने पर विचार विमर्श के लिए सोमवार को फेयर प्राईस शॉप डीलर्स एसोसिएशन की बैठक हुई। जिसमें निर्णय लिया गया कि अपने मांगों को लेकर राज्य भर के 26 हजार पीडीएस डीलर्स नये साल में एक जनवरी से हड़ताल पर चले जायेंगे। फेयर प्राईस शॉप डीलर्स एसोसिएशन की ओर से इसकी घोषणा कर दिया गया है। निर्णय लिया गया कि 10 सूत्री मांगें पूरी होने तक एसोसिएशन के बैनर तल्ले डीलर्स आंदोलन

करेंगे। एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष ज्ञानदेव झा ने बताया कि 24 जिलों में पीडीएस सेंटर्रस इस दौरान बंद रहेंगे। सरकार के बार बार के आश्वासन के बाद अब पीडीएस डीलर्स अपने को छला हुआ महसूस कर रहे है। एसोसिएशन की मुख्य रूप यह दस मांगे है। पिछले दो साल से राज्य के 26 हजार पीडीएस डीलर्स मांगें पूरा करने की गुहार लगा रहे है। झा ने बताया कि सभी जिला के डीलर्स आंदोलन को समर्थन दे रहे है। ज्ञानदेव झा ने बताया कि हमारी 10 सूत्री मांगों में अनुकंपा पर बहाली व्यवस्था फिर से शुरू करने, 2021 में कोविड के दौरान बांटे गये राशन का कमिशन देने, कुल 13 महीने का कमिशन देने, पंद्रह साल से एक रूपया कमीशन बढ़ाकर तीन रुपये करने, कमिशन प्रति किलो खाद्यान पर देने, ई पॉश मशीन में टू जी सिम को बदल कर फॉर जी सिम लगाने, नेटवर्क ठीक करने और गुजरात सरकार की तर्ज पर 30 हजार रुपए प्रति महीने मानदेय की मांग की गयी है। ज्ञानदेव झा ने बताया कि इन मामलों में खाद्य आपूर्ति मंत्री रामेश्वर उरांव और सचिव से आठ महीने पहले वार्ता हुई थी। लेकिन कोई निष्कर्ष नहीं निकला।

बुद्धिजीवियों ने किया रांची विवि के टीआरएल संकाय का दौरा, कहा

झारखंड-गोवा के वातावरण व संस्कृति में है काफी समानता

नवीन मेल संवाददाता। रांची

गोवा विश्वविद्यालय के शिक्षकों, वरिष्ठ पत्रकारों, कोंकणी लेखकों और साहित्यकारों की टीम ने डॉ राम मनोहर लोहिया रिसर्च फाउंडेशन, दिल्ली के अभिषेक रंजन सिंह की अगुवाई में रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय का भ्रमण किया। संकाय के नौ भाषाओं के शिक्षकों के साथ गोवा एवं झारखंड की भाषा व संस्कृति की जानकारी प्राप्त किया। बातचीत के क्रम में गोवा के लोगों ने बताया कि झारखंड की संस्कृति और गोवा की संस्कृति में काफी समानता है। जिस तरह झारखंड में पड़हा संस्कृति है, ठीक उसी तरह गोवा में भी पड़हा संस्कृति है। पेड़-पौधे, वातावरण काफी कुछ मिलता जुलता है। उन्होंने बताया कि झारखंड की मुंडा जनजातियों की

भाषा और गोवा की कोंकणी भाषा के शब्दों में भी काफी समानताएं हैं। उनका मानना है कि कोंकणी भाषा का निर्माण मुंडारी समुदाय के द्वारा ही किया गया होगा। गोवा से आये हुए प्रतिनिधियों ने झारखंड और गोवा की भाषा व संस्कृति पर शोध कार्य करने पर जोर दिया। इस बात पर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के कोर्डिनेटर डॉ हरि उरॉव ने कहा कि गोवा और झारखंड की भाषा संस्कृति को और करीब से जानने व समझने के लिए सबकी सहमति से जल्द ही रांची विश्वविद्यालय और गोवा विश्वविद्यालय के द्वारा एमएयू किया जायेगा।

झारखंड बन रहा है अफीम उत्पादन का गढ़

तस्करी मामले में युवाओं की बढ़ रही है भागीदारी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड अफीम तस्करी का गढ़ माना जाता है। तस्कर कुरियर के रूप में युवाओं को लालच देकर इसमें लिप्त कर रहे हैं। कम समय में अधिक रुपये कमाने व मौज-मस्ती के साथ शौक पूरे करने का सपना लेकर युवा तस्करों के संपर्क में आ रहे हैं। एक से दूसरे तस्कर तक मादक पदार्थ पहुंचाने के लिए युवा कुरियर के रूप में काम करते हैं। झारखंड में युवा अपनी जरूरतों को पूरा करने में शामिल हो रहे हैं। तस्करी का नेटवर्क राजस्थान, पंजाब, हरियाणा समेत अन्य राज्यों तक फैला हुआ है। राज्य में अफीम की बेखौफ तस्करी हो रही है। अफीम के अलावे गांजा से लेकर अन्य नशीली पदार्थ की तस्करी इस कदर बढ़ी हुई है कि आए दिन नशे के सामानों की जब्ती पुलिस कर रही है। इसका खुलासा तब हुआ जब लोकसभा में एक सवाल के

जवाब में गृह मंत्री ने नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट का हवाला दिया। 2020 में 6622.982 किग्रा, 2021 में 16158.318 किग्रा और 2022 में 32376.732 किग्रा अफीम आधारित मादक पदार्थ जब्त किया गया। जब्ती मामले में देश में झारखंड का वर्ष 2020 में आठवां, 2021 में चौथा और 2022 में तीसरा स्थान था। झारखंड से तस्करी का नेटवर्क राजस्थान, पंजाब, हरियाणा सहित अन्य राज्यों तक फैला हुआ है। पुलिस आज तक इसकी जड़ तक नहीं पहुंच सकी है। बीते तीन साल में करीब ग्यारह अरब के करीब 55 हजार किलोग्राम अफीम जब्त किया गया है। बीते तीन साल के दौरान झारखंड के अलग-अलग क्षेत्रों में 55 हजार किलोग्राम अफीम की जब्ती पुलिस ने बनाई है। जब्ती किए गए अफीम की बाजार में अनुमानित कीमत ग्यारह अरब के करीब तय किया है।

इस संबंध में रांची रेंज के डीआईजी अनूप बिरथरे ने बताया कि एक तस्कर अफीम या डोडाचूरा दूसरे राज्य के तस्कर तक पहुंचाने के लिए युवाओं को कोरियर बनाते हैं। इन्हें एक खेप पहुंचाने के बदले पांच से 10 हजार रुपए मिल जाते हैं। इस कारण तस्करों के संपर्क में आकर युवा इस काम में शामिल हो जाते हैं। इसमें पुरुष और महिलाएं भी शामिल हो रही हैं। हालांकि, पुलिस इसको रोकने के लिए कई मोर्चा पर एक साथ काम कर रही है। ग्रामीण इलाकों में तैनात चौकीदारों तक को अलर्ट किया गया है। सभी को यह पता लगाने का निर्देश दिया गया कि अफीम के बीज का वितरण कौन कर रहा है। पुलिस को निर्देश दिया गया है कि ऐसे लोगों को चिह्नित कर उन पर कार्रवाई करें। निर्देश यह भी दिया गया है कि जेल से छूटे तस्करों की गतिविधि पर नजर रखें। यह पता लगाएं कि जेल से जमानत पर छूटे तस्कर कहां रह रहे हैं और क्या कर रहे हैं।

आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा ने विनोद बिहारी महतो को दी श्रद्धांजलि

रांची। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा ने अलग राज्य आंदोलन के अमर पुरोधा विनोद बिहारी महतो की 33 वीं पुण्यतिथि मनाई। मोर्चा के नेताओं ने उनके चित्र में पुष्प चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने कहा कि विनोद बिहारी महतो ने झारखंड अलग राज्य के आंदोलन के साथ-साथ विस्थापन के खिलाफ व सामाजिक जन चेतना जागृति के उत्कृष्ट काम किया है। आंदोलन में विनोद बिहारी महतो के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। मोर्चा की ओर से मांग किया गया कि विधानसभा के नए भवन परिसर में विनोद बिहारी महतो का चित्र लगाया जाय। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में कार्तिक महथा, काली चरण महतो, रूपलाल महतो, सखी नाथ मुंडा, संजय राम एवं रामरतन महतो आदि शामिल थे।

बाबूलाल मरांडी से मिले चाइल्डलाइन के पूर्व कर्मी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

चाइल्डलाइन बच्चों की देखभाल एवं सुरक्षा की आवश्यकता के लिए एक आपातकालीन सेवा है जो कोविड-19 जैसे महामारी के समय भी बच्चों की सुरक्षा के लिए अपना कीमती योगदान देती आई है। 31 अगस्त 2023 के बाद झारखंड के हर जिले में चाइल्डलाइन के तीन कर्मियों से कम लिया जा रहा है लेकिन विभाग से केवल 2 महीने (सितंबर और अक्टूबर) का ही पत्र प्राप्त हुआ था। अब दिसंबर महीना भी समाप्त होने को है परंतु अब तक विभाग से किसी तरह का कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ है फिर भी झारखंड के हर जिले में तीन कर्मी अपना सेवा प्रदान कर ही रहे हैं। झारखंड चाइल्डलाइन के कर्मियों के द्वारा विभाग में चाइल्डलाइन कर्मियों की नियुक्ति से संबंधित पत्र विभाग में कई बार दिया जा चुका है और साथ ही महिला एवं बाल विकास मंत्री जोबा मांझी एवं सरकार के उप सचिव विकास कुमार से भी

मुलाकात कर ज्ञापन दिया गया था जिसमें उनके तरफ से चाइल्डलाइन के पूर्व कर्मी को केवल आश्वासन ही मिला है, और अब तक कुछ नही किया गया है, ना ही कुछ सुचना प्राप्त कराया गया है, साथ ही ज्ञात हुआ है कि झारखंड सरकार चाइल्डलाइन को निजी कंपनी के हाथों में दे चुकी है, और साथ ही विभाग द्वारा चाइल्डलाइन में नए कर्मियों की नियुक्ति भी की जा रही है।

इसी संदर्भ में चाइल्डलाइन के सभी कर्मियों को उनके कार्य अनुभव को प्राथमिकता देते हुए नियुक्ति दिया जाए जिसके लिए झारखंड चाइल्ड लाइन के सभी जिला के लीडर अपनी समस्या को लेकर झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी जी से मुलाकात कर अपनी समस्या को उनके समक्ष रखकर मांग पत्र दिया। बाबूलाल मरांडी ने आश्वासन दिया कि इस समस्या को गंभीरता से लेते हुए वह इस समस्या का समाधान जल्द से जल्द करेंगे एवं सभी पूर्व चाइल्डलाइन कर्मियों को नियुक्ति दिलाने का आश्वासन दिया।

एक नजर

महिला मोर्चा कांग्रेस कमेटी का सम्मेलन 27 को

रांची। बुढ़मू प्रखंड कांग्रेस कमेटी की ओर से 27 दिसम्बर को महिला मोर्चा कांग्रेस कमेटी का सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम प्रखंड मुख्यालय में होगा। सम्मेलन के लिए प्रखंड को तीन जोन में बांटा गया है। प्रखंड अध्यक्ष बलराम साहू ने सोमवार को बताया कि प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर पार्टी को मजबूत एवं विस्तार करने के लिए सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

बिनोद बिहारी महतो को पुण्यतिथि पर दी गई श्रद्धांजलि

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने सोमवार को झारखंड विधानसभा परिसर में झारखंड आंदोलन के पुरोधा स्व. बिनोद बिहारी महतो की पुण्यतिथि पर उनकी तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। वहीं झारखंड विधानसभा एवं सदन की कार्यवाही का अवलोकन करने पहुंचे उत्क्रमित उच्च विद्यालय सकरपदा, मांडर के स्कूली बच्चों से भी मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन मिले हैं।

सीईसी व सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिए बैठक 21 को

रांची । झारखंड के मुख्य सूचना आयुक्त और सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिए चयन समिति की बैठक 21 दिसंबर को बुलाई गई है. विधानसभा में विधायक बिरंची नारायण के पूछे गए अल्प सूचित प्रश्न पर सरकार की ओर से यह जानकारी दी गई है. सरकार ने बताया कि 8 मई 2020 से झारखंड में एक मुख्य सूचना आयुक्त और 5 सूचना आयुक्त का पद खाली है. नेता प्रतिपक्ष नहीं होने के कारण सूचना आयुक्तों की नियुक्ति नहीं हो पा रही थी. अमर बाउरी के नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद 16 नवंबर 2023 को चयन समिति की बैठक बुलाई गई थी, जो अपरिहार्य कारणों से स्थगित हो गई थी. अब 21 दिसंबर को यह बैठक होगी. सरकार को मुख्य सूचना आयुक्त के पद के लिए 63 और 5 सूचना आयुक्त के पद के लिए 354 आवेदन मिले हैं.

बागेश्वर बाबा के कार्यक्रम वाली याचिका पर सुनवाई 21 दिसंबर को

रांची । पलामू जिला प्रशासन द्वारा धीरेंद्र शास्त्री उर्फ बागेश्वर बाबा का कार्यक्रम स्थगित करने के आदेश के खिलाफ दाखिल याचिका पर हाईकोर्ट में 21 दिसंबर को सुनवाई होगी। यह मामला हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस गौतम कुमार चौधरी की कोर्ट के सूचीबद्ध हुआ है। इस संबंध में दीना राम की ओर से हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की गई है। याचिका में कहा गया है कि बागेश्वर बाबा के कार्यक्रम के आयोजन के लिए शुरूआत में अनुमति दी गई थी. लेकिन बाद में यह कहकर अनुमति रद्द कर दी गई कि कार्यक्रम से अमानत नदी प्रदूषित होगी। पलामू में बाबा बागेश्वर धाम का कार्यक्रम 10 से 15 फरवरी के बीच निर्धारित किया गया है। अदालत से यह मांग की गई है कि कार्यक्रम के आयोजन की मंजूरी दी जाए।

विधानसभा कार्रवाई

मुख्यमंत्री केंद्रीय एजेंसी के समन की कर रहे अवहेलना : नेता प्रतिपक्ष

रांची। झारखंड विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दूसरे

दिन सोमवार को कार्यवाही शुरू होते ही सत्ता पक्ष और विपक्ष आमने-सामने हैं। सदन के बाहर जहां विपक्ष की तरफ से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को ईडी के समन पर हाजिर न होने की बात को लेकर हंगामा हुआ, वहीं सदन के अंदर भी धीरज साहू और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को समन पर सत्ता और विपक्ष बहस करते दिखे। सबसे पहले प्रदीप यादव के होमगार्ड की बहाली के सवाल के साथ जातिगत जनगणना के सवाल का नेता प्रतिपक्ष ने विरोध किया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि जैसे ईडी के समन और धीरज साहू के बातों को सदन से कोई लेना-देना नहीं है वैसे ही जातिगत जनगणना की बातों का भी सदन से लेनादेना नहीं होना चाहिए। उन्होंने साफ कहा कि सत्ता पक्ष के विधायकों की तरफ से राजनीतिक एजेंडा को सदन में लाया जाता है। साथ ही कहा कि मुख्यमंत्री ईडी के समन पर हाजिर नहीं हो रहे हैं। वो केंद्रीय एजेंसी के समन की अवहेलना कर रहे हैं।

वज्रपात से मृतकों के आश्रितों को मिले मुआवजा : कमलेश

रांची। हुसैनाबाद के विधायक कमलेश कुमार सिंह ने सोमवार को विधानसभा में वज्रपात से मृत व्यक्तियों के आश्रितों को मुआवजा राशि भुगतान से संबंधित प्रश्न उठाया। उन्होंने कहा कि बज्रपात से मृत व्यक्तियों के आश्रितों के मुआवजा की राशि वर्ष 2023-24 में 28 लाख 36 हजार रुपये पलामू जिले को उपलब्ध कराया गया था, जिसका शत प्रतिशत व्यय किया जा चुका है। उन्होंने पूछा कि क्या यह बात सही है कि पलामू जिले में वर्णित आवंटित राशि के व्यय के पश्चात वज्रपात में मृत व्यक्तियों एवं पशुओं के लिए मुआवजा के भुगतान के लिए 35 लाख 35 हजार 400 रुपये की राशि के आवंटन के लिए विभाग से पत्राचार किया है।

होमगार्ड बहाली की प्रक्रिया 16 जिलों में पूरी : आलमगीर आलम

रांची। झारखंड विधानसभा के शीतकालीन

सत्र के दूसरे दिन सोमवार को विधायक प्रदीप यादव ने सदन में पांच वर्षों से होमगार्ड के खाली पदों पर बहाली नहीं होने का मामला उठाया। उन्होंने कहा कि बहाली नहीं होने के कारण राज्य के नौजवान अवसर से वंचित हैं। जिलों में पुलिस बल की कमी हो रही है। इस पर सरकार की ओर से मंत्री आलमगीर आलम ने जवाब दिया कि झारखंड के 16 जिलों में होमगार्ड बहाली की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। बाकी जिलों में बहाली की प्रक्रिया चल रही है।

बीजेपी विधायक वेल में आये, 500 करोड़ किसका के नारे लगाये

रांची। झारखंड विधानसभा सत्र के दूसरे दिन सदन में वित्तमंत्री रामेश्वर उरांव ने 8111 करोड़ 75 लाख 15 हजार का दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया गया। इसके बाद स्पीकर ने सदन की कार्यवाही मंगलवार सुबह 11 तक स्थगित कर दी. इससे पहले सदन की कार्यवाही जब 12.33 में दोबारा शुरू हुई तो स्पीकर ने बीजेपी विधायक अनंत ओझा और भानु प्रताप शाही के लाये गये कार्य स्थगण के प्रस्ताव को अमान्य कर दिया। इससे बाद बीजेपी विधायक वेल में आकर धीरज साहू मामले को लेकर हंगामा करने लगे थे। हंगामा के बीच ही स्पीकर शून्य काल की सूचनाएं ली। स्पीकर ने हंगामा कर रहे बीजेपी विधायकों को चेतावनी दी।

एक महीने में दी जायेगी मुआवजा राशि : बन्ना गुप्ता

रांची। स्वास्थ्य मंत्री बना गुप्ता ने सदन में

कहा कि पलामू जिले में वज्रपात से मरने वाले लोगों और पशुओं के लिए आवंटित मुआवजा राशि का एक महीने के अंदर भुगतान कर दिया जायेगा। स्वास्थ्य मंत्री ने विधायक कमलेश सिंह के अल्प सूचित सवाल पर यह आश्वासन दिया। विधायक ने सरकार से पूछा था कि पलामू में वज्रपात से मृत व्यक्तियों और पशुओं के लिए मुआवजा के भुगतान के लिए कुल 35 लाख 35 हजार 400 की राशि आवंटित करने के लिए पलामू डीसी ने आपदा विभाग को पत्र लिखा है।

प्रदीप यादव ने सदन में जातिगत जनगणना का मामला उठाया

विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि पांच महीने में अधिकारी पता नहीं लगा पाये कि कौन सा विभाग जाति जनगणना करायेगा। इसके बाद विपक्ष के नेता अमर बाउरी ने कहा कि

मुख्यमंत्री का ईडी के समन को दरकिनार करना चिंतनीय, राज्य में अराजकता की स्थिति है। सरकार को क्यों इस्तीफा नहीं देना चाहिए। इसपर बहस कराया जाये।

झारखंड विस में कैश कांड पर जमकर हुआ हंगामा

8,111 करोड़ का अनुपूरक बजट पेश

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड सरकार ने सोमवार को साल 2023-24 के लिए 8,111.75 करोड़ रुपये का दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया। विधानसभा में कैश कांड पर चर्चा की मांग को लेकर हंगामा भी हुआ। झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने सोमवार को विधानसभा में विपक्षी भाजपा सदस्यों के हंगामे के बीच साल 2023-24 के लिए 8,111.75 करोड़ रुपये का दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया। पूर्वाह्न करीब 11 बजे जैसे ही सदन की कार्यवाही शुरू हुई, भाजपा विधायक हेमंत सोरेन सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए आसन के करीब आ गए। इस कारण अध्यक्ष को सदन की कार्यवाही दोपहर 12.30 बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी। सदन की कार्यवाही दोपहर 12.36 बजे फिर से शुरू हुई और हंगामे के बीच वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव ने 2023-24 के लिए दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया। भाजपा के मुख्य सचेतक बिरंची नारायण के नेतृत्व में विपक्ष ने कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य धीरज साहू से जुड़े परिसरों से बेहिसाब नकदी की बरामदगी और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के समन पर बहस की मांग की। विपक्ष के नेता अमर बाउरी ने कहा कि नकदी बरामदगी, ईडी का समन और बिगड़ती कानून-व्यवस्था की स्थिति राज्य का ज्वलंत मुद्दा है। मुख्यमंत्री ने पद और गोपनीयता की शपथ ली है। उन्हें केंद्रीय जांच एजेंसी के समन का सम्मान करना चाहिए। विपक्ष के नेता अमर बाउरी ने यह भी आरोप लगाया कि एजेंसी के छह समन के बावजूद, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भाग रहे हैं। उन्हें अपने पद से इस्तीफा क्यों नहीं देना चाहिए? हम इस पर सदन में बहस चाहते हैं। इसका जवाब देते हुए संसदीय कार्य मंत्री आलमगीर आलम ने कहा कि साहू झारखंड विधानसभा के सदस्य नहीं हैं। वह (साहू) राज्यसभा सदस्य हैं। यह राज्य का मामला नहीं है, जहां तक ईडी के समन का सवाल है, मुख्यमंत्री जांच एजेंसी को जवाब दे रहे हैं। वहीं कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य धीरज साहू से जुड़े परिसरों से बेहिसाब कैश की बरामदगी के मामले में विधानसभा अध्यक्ष रवीन्द्र नाथ महतो ने कहा कि सदन को उन मुद्दों से बचना चाहिए, जो राज्य विधानसभा से जुड़े नहीं हैं। उन्होंने हंगामा कर रहे विधायकों से अपनी सीटों पर वापस जाने का अनुरोध किया, लेकिन विपक्षी विधायकों ने उनकी बात नहीं मानी और विरोध जारी रखा, जिसके कारण अध्यक्ष को सदन की कार्यवाही दोपहर 12.30 बजे तक के लिए स्थगित करनी पड़ी।विपक्ष के हंगामे के बीच सदन की कार्यवाही दोपहर 12.36 बजे फिर से शुरू हुई। हंगामे के बीच वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव ने 2023-24 के लिए दूसरा अनुपूरक बजट पेश किया।

स्थानीय को नौकरी नहीं देने पर सरकार नाराज 2420 कंपनियों को नोटिस

रांची। झारखंड राज्य के निजी क्षेत्र में स्थानीय उम्मीदवारों का नियोजन अधिनियम, 2021 के तहत स्थानीय युवाओं को रोजगार नहीं देने पर अब तक 2,420 निजी कंपनियों को नोटिस जारी किया गया है। उनसे पूछा गया है कि क्यों नहीं उनके विरुद्ध संबंधित अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाए। वहीं, 134 कंपनियों के विरुद्ध अधिनियम की अवहेलना के आरोप में जुमार्ना लगाया गया है। जुमार्ना के रूप में अबतक 10.50 लाख रुपये की वसूली भी हुई है। श्रम, नियोजन एवं प्रशिक्षण विभाग ने यह जानकारी विधायक उमाशंकर अकेला द्वारा पूछे गए सवाल के जवाब के रूप में दी है। इस अधिनियम के तहत निजी कंपनियों में 40 हजार रुपये मासिक वेतन तक के सभी पदों के विरुद्ध 75 प्रतिशत पदों पर स्थानीय युवाओं को नियुक्त करना अनिवार्य किया गया है। विभाग ने जवाब में कहा है कि हजारीबाग में भी 82 कंपनियों को नोटिस किया गया है। इनमें से तीन कंपनियों के विरुद्ध 25 हजार रुपये जुमार्ने की राशि वसूली गई है।

जेएसएससी म्यूनिसिपल प्रतियोगिता परीक्षा का प्रवेश पत्र जारी

नवीन मेल संवाददाता। रांची

जेएसएससी ने राज्य के नगर निगमों में 900 से ज्यादा पदों पर भर्ती के लिए होने वाली जेएमएससीसीई 2023 के एडमिट कार्ड जारी कर दिए हैं। इस परीक्षा में भाग लेने वाले अभ्यर्थी अपने प्रवेश पत्र आयोग की वेबसाइट पर प्रवेश पत्र जारी किया है।

जेएसएससी की ओर से जारी नोटिस के अनुसार, झारखंड म्यूनिसिपल आयोग प्रतियागिता परीक्षा 2023 (खटरउउए 2023) की पुनर्परीक्षा का आयोजन 24 दिसंबर को होने को प्रस्तावित है। रिपोर्ट्स के अनुसार, जेएसएससी जेएमएससीसीई 2023 के लिए राज्य में 900 से ज्यादा पदों पर अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा। जेएसएससी की इस परीक्षा से गार्डेन इंस्पेक्टर के 12 पदों, पशु चिकित्सक के 10 पद, सैनिटरी एंड फूड इंस्पेक्टर के 24 पद, सफाई सुपरवाइजर के 645 पद, राजस्व निरीक्षक के 164 पद और लीगल असिस्टैंट के 46 पदों पर योग्य अभ्यर्थियों की नियुक्ति की जाएगी। आपको बता दें कि जेएसएससी ने हाल में सीजीएल 2023 के लिए रद्द हुए आवेदनों की सूची जारी की है। आयोग के अनुसार 85000 से ज्यादा अभ्यर्थियों के आवेदन रद्द कर दिए गए हैं। इनमें से सबसे अधिक अभ्यर्थी रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया न पूरी करने वालों की लिस्ट में हैं। वहीं कई अभ्यर्थियो ने ना या डेट ऑफ बर्थ में बदलाव के साथ एक से अधिक आवेदन किए हैं जिन्हें निरस्त कर दिय गया है।

राज्य के सरकारी स्कूलों में 20 से शुरू होंगी अर्धवार्षिक परीक्षाएं

नवीन मेल संवाददाता। रांची

राज्य के सभी सरकारी, मॉडल और अल्पसंख्यक सहित गैर सरकारी सहायता प्राप्त व मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालयों में कक्षा एक से आठ तक की अर्धवार्षिक परीक्षा 20 से 23 दिसंबर तक होगी। इस विषय पर परियोजना निदेशक ने पत्र जारी किया है। जानकारी के मुताबिक कक्षा एक और दो के लिए मौखिक परीक्षा और कक्षा तीन से आठ तक के लिए लिखित परीक्षा आयोजित की जाएगी। खंड तीन से आठ तक के प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे। कक्षा एक से आठ तक के हर सब्जेक्ट के एग्जाम के लिए 60 मार्क्स तय है। लेकिन कक्षा छह से आठ तक के मैथ्स, साइंस, सोशल साइंस के लिए लिखित कार्य के लिए 50 मार्क्स और प्रोजेक्ट कार्य के लिए दस अंक तय है तथा 40 मार्क्स आंतरिक मूल्यांकन के आधार पर दिए जाएंग। प्रोजेक्ट रेल के तहत अगस्त से नवंबर तक लिए गए संबंधित विषयों के औसत अंकों को आंतरिक मूल्यांकन को आधार माना जाएगा। प्राप्त सभी अंकों को मिलाकर रिजल्ट की घोषणा की जाएगी। पहली राउंड में परीक्षा सुबह 9:30 बजे से 11:30 बजे तक होगी। वहीं, दूसरी राउंड की परीक्षा दोपहर 12:30 बजे से लेकर 2:30 बजे तक होगा। परीक्षा मुद्रित प्रश्न पत्र सह उत्तर पुस्तिका के जरिए से आयोजित की जाएगी। इसमें सभी छात्रों को उत्तर लिखना होगा। झारखंड शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, रांची ने अर्धवार्षिक परीक्षा के समय सारिणी जारी कर दी है। परीक्षा के बाद दो से सात जनवरी तक संकुल स्तर पर मूल्यांकन कार्य किया जाएगा, जिसमें एक संकुल के सभी स्कूलों के प्रश्नपत्र और उत्तर पुस्तिकाओं की जांच दूसरे संकुल में की जाएगी।

आदिवासी महिला को निवस्त्र कर घूमाने पर नड्डा को सौंपा रिपोर्ट

रांची । कर्नाटक के बेलगावी स्थित वंतामुरी गांव में आदिवासी समुदाय की महिला को निर्वस्त्र कर घूमाने व बिजली के खंभे में बांधकर मारपीट किए जाने के मामले को लेकर गठित पांच सदस्यीय जांच दल ने सोमवार को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा को रिपोर्ट सौंपा। 11 दिसंबर की रात घटित इस घटना को लेकर पांच सदस्यीय टीम पिछले शनिवार को वंतामुरी गांव पहुंची थी। जांच के क्रम में टीम में शामिल सदस्यों ने पीड़िता से घटना की जानकारी लेने के साथ-साथ उसके स्वजनों व ग्रामीणों से भी बात की थी। इसके बाद जांच टीम में शामिल सदस्यों की ओर पुलिस पर दबाव बनाया गया तो इस मामले को लेकर दर्ज कराई गई प्राथमिकी में क्रिमिनल केस से संबंधित धारा को जोड़ा गया। जांच टीम में शामिल सदस्यों के अनुसार, पुलिस ने इस मामले को लेकर दर्ज कराई गई प्राथमिकी में सामान्य केस दर्ज किया था।

हाई कोर्ट ने सीआई के सर्किल ऑफिसर के पद पर प्रमोशन पर लगी रोक हटाई

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड हाई कोर्ट ने राजस्व विभाग में सर्किल इंस्पेक्टर से सर्किल ऑफिसर के पद पर होने वाले प्रमोशन पर लगी रोक को हटा लिया है। कोर्ट ने 16 सितंबर 2021 को सर्किल इंस्पेक्टर से सर्किल ऑफिसर पद पर प्रमोशन पर रोक लगाई थी।

चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने मामले में सोमवार को राज्य सरकार की अपील पर सुनवाई करते हुए सर्किल इंस्पेक्टर से सर्किल ऑफिसर पद पर राजस्व विभाग में प्रमोशन पर लगी रोक हटाते हुए राज्य सरकार को प्रमोशन की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने मामले की अगली सुनवाई फरवरी 2024 निर्धारित की है।

हाई कोर्ट के इस निर्देश के बाद झारखंड के करीब 80 सर्किल इंस्पेक्टरों, जो अंचल अधिकारी बनने की सभी अर्हताओं को पूरा करते हैं, उनका प्रमोशन हो पाना अब संभव हो पाएगा। ऐसे में इस फैसले के बाद सर्किल इंस्पेक्टरों में हर्ष का माहौल है। उल्लेखनीय है कि सरवन कुमार झा की नियुक्ति वर्ष 2004 में राजस्व विभाग में राजस्व कर्मचारी के रूप में हुई थी। वर्ष 2016 में उन्हें सर्किल इंस्पेक्टर के पद पर प्रोन्नति दी गई लेकिन अगले प्रमोशन के लिए राजस्व विभाग में आठ वर्ष की कालावधि होना एवं एक साल सर्किल इंस्पेक्टर के पद में होना आवश्यक था। उस दौरान आठ वर्ष की कालावधि किसी अन्य कर्मी के नहीं होने की वजह से किसी सर्किल इंस्पेक्टर की सर्किल ऑफिसर के पद पर प्रोन्नति नहीं हो पा रही थी। इसे देखते हुए इस शर्त में बाद में छूट प्रदान की गई।

कोर्ट को बताया गया कि मामले में विष्णु अग्रवाल के खिलाफ अब आरोप पत्र दाखिल हो चुका है।

हाई कोर्ट में व्यवसायी विष्णु अग्रवाल की ओर से जमानत अर्जी पर बहस

रांची । झारखंड हाई कोर्ट में चेशायर होम रोड स्थित एक एकड़ की जमीन खरीदने मामले में जेल में बंद न्यूक्लियस मॉल के मालिक विष्णु अग्रवाल की ओर से दायर जमानत अर्जी पर सुनवाई हुई। मामले में विष्णु अग्रवाल की ओर से बहस पूरी हो गई। अब 20 दिसंबर को ईडी की ओर से बहस होगी। मामले की सुनवाई न्यायाधीश दीपक रोशन की कोर्ट में हुई। सोमवार को सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता एसडी संजय एवं हाई कोर्ट के अधिवक्ता सुमित गाड़ोदिया ने पक्ष रखा। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि मामले में विष्णु अग्रवाल के खिलाफ अब आरोप पत्र दाखिल हो चुका है। विष्णु अग्रवाल मामले में निर्दोष हैं। उन्होंने गलत ढंग से जमीन की खरीदारी नहीं की है। उल्लेखनीय है कि 18 सितंबर को ईडी कोर्ट ने विष्णु अग्रवाल की जमानत अर्जी खारिज कर दी थी। इसके बाद उनकी ओर से हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया गया है। 31 जुलाई को रात करीब दस बजे ईडी ने विष्णु अग्रवाल को पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया गया था।

सहत | पुलिस-पदाधिकारियों पर अनुसंधान लटकाने की प्रवृत्ति हावी

झारखंड में फिलहाल 41919 केस लंबित

नवीन मेल संवाददाता। रांची

झारखंड के विभिन्न जिलों में अनुसंधान के नाम पर हजारों मामले लंबित हैं. इतने बड़े पैमाने पर केस पेंडिंग देखकर कहा जा सकता है कि पुलिस लोगों को न्याय दिलाने के लिए प्रति गंभीर नहीं है। शायद यही कारण है कि राज्य के अगल-अलग जिलों में अनुसंधान के नाम पर पुलिस ने 41919 मामलों को लटका कर रखा है. इनमें 28497 मामले गंभीर और 13422 मामले साधारण प्रवृति के हैं।

जाने किस जिले में कितने मामले अनुसंधान

रांची : 10143	चतरा : 1513
खूंटी : 367	गिरिडीह : 202
गुमला : 610	धनबाद : 4004
सिमडेगा : 193	बोकारो : 2290
लोहरदगा : 525	दुमका : 1085
चाईबासा : 806	गोड्डा : 709
सरायकेला : 964	जामताड़ा : 463
जमशेदपुर : 1930	देवघर : 2630
पलामू : 1991	साहेबगंज : 1572
लातेहार : 927	पाकुड : 421
गढ़वा : 1652	रेल धनबाद : 340
हजारीबाग : 3703	रेल जमशेदपुर : 87
रामगढ़ : 524	कुल : 41919
कोडरमा : 444	

एडीजी अभियान और सिटी एसपी ने घायल थाना प्रभारी से की मुलाकात

रांची। गढ़वा में पुलिस और उग्रवादियों के बीच हुए मुठभेड़ में

उग्रवादियों की गोलियों से घायल हुए रंका थाना प्रभारी शंकर प्रसाद कुशवाहा को देखने के लिए कई पुलिस अधिकारी सोमवार को मेडिका अस्पताल पहुंचे। एडीजी अभियान संजय आनंद लाठकर,रांची के सिटी एसपी राज कुमार मेहता सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे और घायल थाना प्रभारी की जानकारी ली। साथ ही पुलिस अधिकारियों ने थाना प्रभारी के इलाज कर रहे डॉक्टरों से भी घायल थाना प्रभारी के स्थिति को लेकर बातचीत की । डॉक्टरों ने थाना प्रभारी की स्थिति खतरे से बाहर बताया । उल्लेखनीय है कि गढ़वा में पुलिस और उग्रवादियों के बीच हुए मुठभेड़ में दो गोली रंका थाना प्रभारी को लगी, जिसके बाद आनन फानन में उन्हें बेहतर उपचार के लिए मेडिका में भर्ती कराया गया है।

चिटफंड कंपनियों के पैसे लेकर भागने के तीन हजार मामले आए

रांची । झारखंड गठन के बाद से अबतक झारखंड चिटफंड कंपनियों के खिलाफ तीन हजार मामले सामने आए हैं. राज्य के रांची, जमशेदपुर, चाईबासा, कोडरमा, हजारीबाग, साहिबगंज समेत राज्य अन्य जिलों में चिटफंड कंपनियां धड़ल्ले से नियमों की अनदेखी कर लोगों को अधिक ब्याज देने का लालच देकर पैसे जमा कर रही हैं और अंत में लेकर भाग जा रही हैं. झारखंड में चिटफंड कंपनियां अबतक कुल 25 हजार करोड़ रूपया लेकर भाग गई. अब तक 120 से अधिक मामलों को टेकओवर कर सीबीआई जांच कर रही है. तिरु बालाजी, अलेमिस्ट इंफ्रा, धनोल्टी डेवलपर्स, कोलकाता वीयर, संकल्प ग्रुप, वीयर्ड इंफ्रा, रुफर्स मार्केटिंग, सनशाइन ग्लोबल एग्रो, रामल इंडस्ट्रीज, इनोमर्स इंडस्ट्रीज, एक्सेल इंफ्रास्ट्रक्चर, गीतांजलि उद्योग, एमपीए एग्रो एनीमल, अन्य कंपनियां शामिल हैं.

मनरेगा आयुक्त ने जीआईजेड प्रोजेक्ट के प्रतिनिधियों के साथ की समीक्षा बैठक

नवीन मेल संवाददाता। रांची

मनरेगा आयुक्त राजेश्वरी बी ने कहा कि झारखंड में मनरेगा अंतर्गत बिरसा हरित ग्राम योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगारोन्मुख एवं आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया जा रहा है।

इसके तहत रैयती भूमि पर फलदार वृक्षों की बागवानी के लिए ग्रामीणों को सहायता प्रदान की जा रही है। मनरेगा आयुक्त राजेश्वरी बी सोमवार को झारखंड के जिलों मे चल रहे बिरसा हरित ग्राम योजना में कार्यरत जीआईजेड प्रोजेक्ट के प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहीं थी।

उन्होंने योजनाओं के प्रगति की जानकारी ली और अधिकारियों को आवश्यक दिशा- निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण अगर अंतः कृषि प्रणाली यानि दो फलदार पौधों के बीच की भूमि पर सब्जियों की खेती करेंगे तो इससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होगी और योजना से अधिकाधिक लोग लाभान्वित होंगे और ग्रामीणों की जीवन में सुख-समृद्धि आएगी। राजेश्वरी बी ने कहा कि एक साथ कई लक्ष्यों को साध लेना मनरेगा की एक बड़ी विशेषता रही है।

झारखंड राज्य के ग्रामीण परिवारों को रोजगार उपलब्ध कराने एवं उनके जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार लाने के लिए जीआईजेड प्रोजेक्ट रामगढ़ और दुमका जिला में मनरेगा की योजना अंतर्गत बेहतर आजीविका हेतु कार्य कर रही है। इसमें एक नया आयाम जोड़ते हुए अब बिरसा हरित ग्राम योजना अंतर्गत अंतः कृषि हेतु प्रोत्साहन व सहायता प्रदान करने की नयी पहल की गई है, जिससे ग्रामीणों को आजीविका का एक सशक्त विकल्प मिलेगा।

लेकिन आठ दिसम्बर 2023 तक
आवंटन प्राप्त नहीं हुआ है।

रामगढ़ में मुख्यमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रम के तैयारियों के लिए डीसी ने की बैठक

सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएं : डीसी

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। राज्य सरकार के चार वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे हैं आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के रामगढ़ जिले में प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर सोमवार को उपायुक्त चंदन कुमार ने समाहरणालय सभाकक्ष में तैयारियों की समीक्षा की। इस दौरान नजारत उप समाहर्ता रविंद्र कुमार गुप्ता द्वारा उपायुक्त सहित बैठक में उपस्थित अन्य अधिकारियों को सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आयोजित किए गए जिला स्तरीय शिविर के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की जानकारी दी गई। जिसके उपरांत उपायुक्त द्वारा सभी विभागों के जिला स्तरीय पदाधिकारियों को माननीय मुख्यमंत्री के कार्यक्रम के दिन स्थल पर स्टाल लगाने एवं सरकार की योजनाओं का प्रचार प्रसार सुनिश्चित करते हुए लोगों को योजनाओं से लाभान्वित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु आमजनों के स्थल तक पहुंचने, कार्यक्रम के दौरान लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों के वितरण, अल्पहार आदि से संबंधित कार्यों को लेकर अधिकारियों को विभिन्न निर्देश दिया। आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आयोजित किए जा रहे शिविरों की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने सभी अधिकारियों को आवेदनों के निष्पादन की गति में तीव्रता लाने, आवेदनों की नियमित मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही उपायुक्त ने अधिकारियों से आवेदनों के निष्पादन में आ रही समस्याओं की जानकारी लेते हुए उनके समाधान को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। उपायुक्त ने जिला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान पार्किंग व्यवस्था सुदृढ़ रखना योजना बाद तरीके से लाभुकों व आम जनों को शिविर में बैठाने के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण विषयों को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। वहीं, उन्होंने सभी कार्य विभागों के कार्यपालक अभियंताओं सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को जिला स्तरीय आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आयोजित होने वाले शिविर के दौरान विभिन्न योजनाओं के उद्घाटन व शिलान्यास से संबंधित जानकारी त्वरित रूप से उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने सभी अधिकारियों एवं कर्मियों को आयोजन के दिन ससमय अपने-अपने कार्यस्थल पर पहुंचकर दायित्वों का निर्वहन करने का निर्देश दिया। बैठक में उप विकास आयुक्त, जिला स्तरीय वरीय अधिकारियों, अधिकारियों सहित अन्य उपस्थित थे।

रामगढ़ में विनोद बिहारी महतो की मनाई गई पुण्यतिथि

नवीन मेल संवाददाता

रामगढ़। आजसू पार्टी जिला कार्यालय में झारखंड आंदोलन कर पितामह विनोद बिहारी महतो की पुण्यतिथि 18 दिसम्बर को मनाई गयी । मौके पर पूर्व नगर परिषद उपाध्यक्ष मनोज कुमार महतो के नेतृत्व में पार्टी के कार्यकर्ताओं ने बिनोद बिहारी महतो की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित कई । इस दौरान उनके आदर्शों पर चलने का नेताओं ने प्रण लिया। मौके पर मनोज कुमार महतो ने कहा कि जिस झारखंड में हम सभी विचरण कर रहे हैं, यह बिनोद बाबू की परिकल्पना का प्रतिफल है। उन्होंने कहा कि बिनोद बाबू के आदर्शों तथा उनके दिखाए मार्ग को आत्मसात करने जरूरत है। कहा कई उन्होंने झारखंड के शोषित, दलित आदिवासियों के हक अधिकार की लड़ाई लड़ी, जिसके फलस्वरूप झारखंड अलग राज्य का गठन हुआ। लेकिन ब?िनोद बाबू के सपनों का झारखंड आज तक नहीं बन सका है ।उनके सपनों को पूरा करने के लिए हम सभी को समर्पित भाव से संघर्ष करना होगा ।विनोद बिहारी महतो झारखंड के लोगों को पढ़ो, लड़ो और बढ़ो का नारा देते रहे, जिससे कि यहां के लोग जागरूक हों और झारखंड भारत का अग्रणी राज्य बन सके। मौके पर दिनेश कुशवाहा, ईश्वर महतो, संजय महतो, विभन सिंह, कुलदीप वर्मा, मनु कुशवाहा, बबलू मोदी, वीरू सिंह, पंकज दांगी, मुन्ना प्रसाद, कैलाश रजक आदि उपस्थित थे।

एक नजर

याद किए गए विनोद बिहारी महतो

बरकट्ठा। भाकपा माले के दिवंगत महासचिव विनोद मिश्र और झारखंड आंदोलनकारी बिनोद बिहारी महतो की 25 वीं स्मृति दिवस पर भाकपा माले ने सोमवार को बरकट्ठा पंचायत भवन में दोनों नेता की छायाचित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित किया। वहीं पार्टी नेताओं ने कहा कि महासचिव विनोद मिश्र और झारखंड आंदोलनकारी बिनोद बिहारी महतो दोनों जन पक्षीय राजनीति के मॉडल थे ।ये जनता के प्रति समर्पित और देश के मजदुर और किसानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। कॉरपोरेट सांप्रदायिक फासीवाद के खिलाफ संवैधानिक लोकतंत्र की रक्षा के लिए विनोद मिश्र और विनोद बिहारी महतो ने आजीवान संघर्ष किया है ।आज जंगल जमीन और जनाधिकार पर लगातार हमले जारी है ।जनता की बुनियादी सवालों का समाधान के बैगर विकसित भारत का सपना कभी साकार नहीं होगा ।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड सचिव शेर मोहम्मद ने किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में बरकट्ठा विधानसभा के प्रभारी भूवनेश्वर केवट, बिशुन यादव, योगेश्वर साव, किशुन मोदी, रघु भुइयां ,सोमर महतो, योगेश्वर प्रसाद साव ,चितरंजन सिंह, चिंतामणि पासवान, हीरालाल समेत दर्जनों की संख्या में लोग शामिल थे।

प्रखंड कांग्रेस किसान प्रकोष्ठ का गठन

हजारीबाग। प्रखंड कांग्रेस कमेटी किसान प्रकोष्ठ का गठन प्रखंड अध्यक्ष दशरथ प्रसाद मेहता की अध्यक्षता में की गई। जिसमें पंचायत महेंद्र कुमार तलसवार, चंदन कुमार नयाटांड़, अशोक कुमार हरली, महेंद्र साव नापोखुर्द, पप्पू कुमार कांडतरी, द्वारिका महतो बड़कागांव पूर्वी, बालेश्वर राम मध्य तथा दीपक कुमार बड़कागांव पश्चिमी, फागु भुइयां चंदौल, वासुदेव महतो महुंगाई कला, रंजन कुमार चोपदार बलिया, श्याम कुमार सांढ, योगिता कुमारी बादम, उमेश महतो आंगों, आलोक कुमार चेपाकला, कमलनाथ महतो को सिरमा पंचायत अध्यक्ष बनाया गया।

जिला स्तरीय आधार निगरानी समिति की बैठक आयोजित

रामगढ़। उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार की अध्यक्षता में सोमवार को उनके कार्यालय कक्ष में जिला स्तरीय आधार निगरानी समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान परियोजना पदाधिकारी यूआइडीएआइ ने उपायुक्त को जानकारी देते हुए बताया कि जिले के सभी प्रखंडों में आधार सेवा केंद्र की स्थापना हेतु चितरपुर, मांडू एवं गोला प्रखंड से स्थल चयन कर प्रतिवेदन दिया गया है परंतु शेष प्रखंडों से प्रतिवेदन अभी तक अप्राप्त है। जिसपर उपायुक्त ने जल्द से जल्द प्रतिवेदन प्राप्त कर आगे की प्रक्रिया सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। साथ ही 0 से 5 वर्ष के बच्चों का आधार पंजीकरण हेतु महिला पर्यवेक्षिकाओं के प्रशिक्षण के उपरांत इस माह के अंत तक उनकी परीक्षा आयोजित करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने आधार के राज्य स्तरीय पोर्टल पर 18 से अधिक आयु वर्ग के लंबित 6 आवेदनों को संबंधित अधिकारियों के साथ समन्वय करते हुए जल्द से जल्द निष्पादित कराने का निर्देश दिया।

श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में चार दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

नवीन मेल संवाददाता

बरही । देवचंदा मोड़ स्थित श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में चार दिवसीय वार्षिक खेल प्रतियोगिता का सोमवार से आगाज हुआ. जिसकी शुरूआत बतौर मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश मीडिया प्रभारी रंजीत चंद्रवंशी और प्रधानाचार्य रोहित सिंह ने द्वीप प्रज्वलित कर किया. मौके पर मुख्य अतिथि सहित सभी उपस्थित शिक्षक शिक्षिकाओं ने विद्यालय के आदर्श स्व. दशरथ सिंह को पुष्पार्चन और दीप प्रज्वलन कर श्रद्धांजलि दिया. बच्चो को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री चंद्रवंशी ने कहा कि स्वस्थ्य जीवन के लिए खेल आवश्यक है. आदर्श और शिष्टाचार के साथ खेले गए खेल हमारे भविष्य के द्वार प्रशस्त करते है. उन्होंने सबों से खेल भावना के साथ स्पोर्ट्स में भाग लेने की बात कही. प्राचार्य श्री सिंह खेल की विशेषता विद्यार्थियों को ईमानदारी पूर्वक खेलने और टीम के साथियों व विपक्षी टीम के साथ भी शिष्टाचार बरतने की सलाह दिया. मौके पर फिजिकल ट्रेनर और स्पोर्ट्स टीचर को प्राचार्य ने जर्सी भी भेंट किया. इसके साथ ही मशाल जलाकर वार्षिक स्पोर्ट्स की शुरूआत किया. इस प्रकार विद्यालय के सभी चार हाउस ब्लू जेट्स, ग्रीन एरोज, गोल्डन बुलेट और रेड फ्लैशेश के बीच प्रतियोगिता प्रारंभ हुआ. पहले दिन महिला क्रिकेट और बच्चो के लिए म्यूजिकल चेयर रेस का आयोजन किया गया.

एथलेटिक मीट में आरएनवाईएम की छात्रा ने महाविद्यालय की बढ़ाई शान

नवीन मेल संवाददाता

बरही । रविवार को संत कोलंबस कॉलेज हजारीबाग के खेल ग्राउंड में अंतर महाविद्यालय एथलेटिक मीट प्रतियोगिता प्रारंभ हुआ. जिसमें विनोबा भावे विश्वविद्यालय की विभिन्न महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया. खेल के पहले दिन डिस्कस थ्रो प्रतियोगिता में रामनारायण यादव मेमोरियल महाविद्यालय बरही की सिमरन कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का गौरव बढ़ाया है. इस सम्मान के लिए महाविद्यालय के सचिव परमेश्वर यादव, प्राचार्य डॉ बिमल किशोर, अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ संजय कुमार वर्णवाल, इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अरुणा कुमारी, डॉ अजय कुमार, डॉ संगीता चौधरी, डॉ बद्री नारायण साहू, प्रो हीरामन साहू, आदि व्याख्याता सहित महाविद्यालय के नन टीचिंग स्टाफ दिनेश्वर प्रसाद, नागेश्वर यादव, हरेंद्र सिंह गामा इत्यादि कई लोगो ने बधाई देते हुए शुभकामन्ये दी है. सबों ने इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के खिलाड़ियों का बेहतर प्रदर्शन की कामना किया है.

विहिप, बजरंगदल और आरएसएस की बैठक

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के सूर्यकुण्ड धाम में विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल और आरएसएस का बैठक किया गया। जिसमें मुख्य रूप से जिला मंत्री अरविंद मेहता उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता संजय यादव और संचालन सत्यम भारती ने किया। बैठक में मुख्य रूप से आगामी 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन को लेकर विस्तृत चर्चा किया गया। वहीं 22 जनवरी को अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि मंदिर में भगवान श्री राम लला सरकार के नूतन विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर सभी लोगों को आमंत्रित भी करने के लिए कहा गया। कहा कि उक्त तिथि को सभी लोग अपने-अपने घरों में दीपावली मनाएंगे और दिए जलाने के साथ-साथ आतिशबाजी भी करेंगे। अयोध्या से आए अक्षत का वितरण करने पर भी विस्तृत रूप से चर्चा किया गया। अक्षत वितरण के लिए प्रखंड लेवल पर टोली का गठन किया गया। जिसमें संयोजक सत्यम भारती, सहसंयोजक दीपक पांडेय, सहसंयोजक विजय चंद्रवंशी, सदस्य भोलाराम, निरंजन कुमार राय, सौरभ कुमार पांडे, साध्वी देव नीति, महेंद्र प्रसाद, धीरज गुप्ता, मुकेश पांडे, अनंत पांडेय, संजय यादव को बनाया गया। साथ ही सभी को 1 जनवरी से 15 जनवरी के बीच सभी पंचायत के सभी गांव, टोला, मोहल्ला में हर घर में अक्षत को वितरण कर देने के लिए प्रेरित किया गया। मौके पर योग शिक्षक महेंद्र प्रसाद, समाजसेवी सुनील पांडे, पूर्व उप मुखिया सुरेश पांडे, रिंकू माली, संजय लामा, सूरज देव प्रजापति, भोलाराम, बाबूलाल पांडेय, नरेश रवानी, श्याम किशोर पांडेय, सुजीत बर्नवाल के अलावे कई लोग मौजूद थे।

एनटीपीसी का केरेडारी में मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन 700 लोगों की हुई जांच

केरेडारी। केरेडारी एवं चट्टीबरियातु के प्रमुख फैज तैय्यब और केरेडारी के जीएम शिव प्रसाद के निर्देश पर एनटीपीसी केरेडारी कोयला खनन परियोजना की ओर से रविवार को कावेद में मेगा मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। इसमें 10 विशेषज्ञ, 20 डॉक्टरों की एक टीम नेत्र, ईएनटी, जनरल फिजिशियन, जनरल सर्जरी, स्त्री रोग, दंत चिकित्सा, ओथ्रोपेडिक आदि के चिकित्सक उपस्थित थे। मेडीकल कैंप में कावेद एवं बालेदेवरी गांव के 700 लोगो की जांच की गई। फैज तैय्यब ने बताया कि एनटीपीसी जन स्वास्थ्य के कार्यों में सैदव तत्पर रहती है। परियोजना की ओर से समय समय पर जन कल्याण के कार्यों से ग्रामवासी भी खुश हैं। साथ मिल कार्य करने से ही ग्राम एवं प्रखंड का विकास निश्चित है। शिव प्रसाद ने कहा कि एनटीपीसी के इस मेडिकल कैम्प से लोगों को बहुत लाभ मिल रहा है और आगे भी मिलता रहेगा।

पूजित अक्षत को घर-घर पहुंचायेंगे कार्यकर्ता

विष्णुगढ़। अयोध्या में पूजित अक्षत एवं भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने का आमंत्रण लेकर विहिप एवं बजरंग दल के कार्यकर्ता घर-घर जाएंगे। यह निर्णय विष्णुगढ़ के बाजारटांड स्थित श्रीराम मंदिर परिसर में विहिप एवं बजरंग दल की बैठक में लिया गया। बैठक की अध्यक्षता बजरंग दल के जिला संयोजक प्रशांत सिंह ने की। उन्होंने कहा कि अयोध्या में 22 जनवरी को प्रभु श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा होना सुनिश्चित हुआ है। इसके पूर्व प्रखंड के प्रत्येक सनातनी घरों में अयोध्या में पूजित अक्षत का वितरण कर प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में शामिल होने की अपील की जाएगी। अक्षत वितरण की शुरूआत अंग्रेजी नववर्ष के प्रथम दिन से 15 जनवरी तक की जाएगी। वहीं, 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के दिन प्रखंड के प्रत्येक मंदिरों में हवन सत्संग का आयोजन किया जाएगा।

आदिवासी केंद्रीय सरना समिति की बैठक

सरना धर्म कोड को लेकर 30दिसंबर को भारत बंद

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। 30 दिसंबर को सरना धर्म कोड को लेकर भारत बंद को लेकर रविवार को बैठक की गई। सरहुल मैदान स्थित धूमकुडिया भवन में आदिवासी केंद्रीय सरना समिति के अध्यक्ष महेंद्र बैक ने इसकी अध्यक्षता की। संचालन सचिव सुनील लकड़ा ने किया। बैठक में मुख्य रूप से रांची से आदिवासी केंद्रीय सरना समिति के केंद्रीय अध्यक्ष फूलचंद तिर्की, उपाध्यक्ष अजय एक्का, अखिल भारतीय विकास परिषद के अध्यक्ष सतनारायण लकड़ा, सेंगेल अभियान बोकारो जोनल हेड आनंद टुडू, सेंगेल अभियान जिला अध्यक्ष बाहाराम हंसदा उपस्थित रहे। आदिवासी केंद्रीय सरना समिति रांची के अध्यक्ष फूलचंद तिर्की ने कहा कि पूरी दुनिया जानती है कि आदिवासी समुदाय भारत की प्रथम सबसे प्राचीनतम समुदायों में से एक है आज उन्हें अपनी पहचान पाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। सरना धर्म कोड आदिवासियों की जान है क्योंकि सरना धर्म कोड आदिवासियों को मिलेगा तभी उनकी पहचान बच पाएगी। जब तक हमारी सांस रहेगी तब तक मांग जारी रहेगी और मुझे पूरा विश्वास चाहिए हमें अपनी धार्मिक पहचान जरूर मिलेगी। कहा कि आदिवासी सेंगेल अभियान के केंद्रीय अध्यक्ष सालखन मुर्मू आदिवासी केंद्रीय सरना समिति रांची, आदिवासी छात्र संघ, राजी पहाड़ा समिति एवं तमाम आदिवासी संगठन ने यदि सरकार 30 दिसंबर के पहले किसी प्रकार का सरना धर्मकोड को लेकर विचार नहीं करती है तो 30 दिसंबर को भारत बंदी का निर्णय लिया गया। अखिल भारतीय विकास परिषद के अध्यक्ष सत्यनारायण लकड़ा ने कहा कि केंद्र सरकार के पास में संपूर्ण शक्ति मौजूद है वह चाहे तो आदिवासियों के हित के लिए एक धर्म कोड लागू करें हम सभी उसका समर्थन करेंगे। सरना समिति उपाध्यक्ष प्रमोद एक्का ने कहा कि भारत संविधान से चलता है और भारत का संविधान कहता है कि प्रत्येक को धार्मिक आजादी मिलनी चाहिए अपनी संस्कृति के विकास एवं रक्षा के लिए दिनों दिन हमारी आबादी कम होती जा रही है।

गोमिया ओवर ब्रिज का काम रुकने से ग्रामीणों में आक्रोश

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। गोमिया रेलवे स्टेशन के पास ओवर ब्रिज बनाने की मांग को लेकर गोमिया के लोग विस्थापित संघर्ष समिति बनाकर वर्षों से ओवर ब्रिज बनाने की मांग कर रहे हैं. उनके आंदोलन ने रंग लाया और 1 दिसंबर 23 से ओवर ब्रिज निर्माण कार्य आरंभ हो गया, इसे देखकर गोमिया वासी में खुशी का लहर दौड़ गया और वह कहने लगे कि हमारा पुराना सपना साकार हुआ. इससे न सिर्फ गोमिया बल्कि आसपास के लोगों को बहुत लाभ मिलेगा लेकिन अचानक एक सप्ताह काम चलने के बाद ओवर ब्रिज निर्माण का कार्य अचानक रोक दिया गया और निर्माण कर में लगे सभी मशीनों को वहां से हटा लिया गया. इसको देखते हुए विस्थापित संघर्ष समिति गोमिया के लोगों ने लोकल स्तर पर रेलवे के सभी अधिकारियों से मिलकर काम आरंभ करवाने का आग्रह की है लेकिन उन अधिकारियों ने कहा कि अगर काम आरंभ करवाना है तो उपमुख अभियंता पूर्व मध्य रेलवे से जाकर मिले जो हजारीबाग में बैठते हैं. उनके सुझाव पर आज विस्थापित शंकर समिति के सचिव राकेश कुमार और हजारीबाग में सी आई टी यू के उपाध्यक्ष गणेश कुमार सीटू के नेतृत्व में लोगों ने उप मुख्य अभियंता, पूर्व मध्य रेलवे से उनके कार्यालय, हजारीबाग में आकर ज्ञापन सौंपा और उनसे वार्ता की. वार्ता में उपमुख्य अभियंता ने कहा कि गोमिया वासियों को चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है. कुछ तकनीकी की समस्या के कारण काम रोक दिया गया है. इस माह के अंदर काम पुणः आरंभ कर दिया जाएगा इसलिए मैं गोमिया वासियों से आग्रह करना चाहता हूं कि आप निश्चित रहे आपका काम बहुत जल्द होगा. प्रतिनिधिमंडल मे संघर्ष समिति के सूरज कुमार, चमन प्रजापति, अश्विनी कुमार, रोहित पासवान, नरेश कुमार, सरजू ठाकुर आदि शामिल थे।

विधायक ने यज्ञ स्थल का किया निरीक्षण

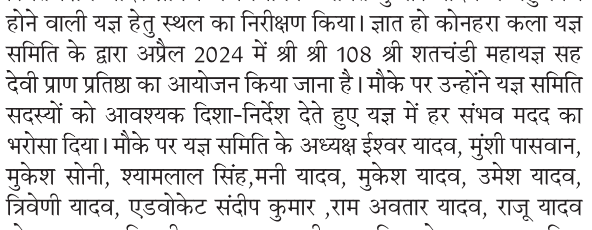

बरकट्ठा। प्रखंड के बरकट्ठा दक्षिणी पंचायत अंतर्गत ग्राम कोनहरा कला स्थित शिव मंदिर प्रांगण में विधायक अमित कुमार यादव ने पहुंचकर होने वाली यज्ञ हेतु स्थल का निरीक्षण किया। ज्ञात हो कोनहरा कला यज्ञ समिति के द्वारा अप्रैल 2024 में श्री श्री 108 श्री शतचंडी महायज्ञ सह देवी प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन किया जाना है। मौके पर उन्होंने यज्ञ समिति सदस्यों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए यज्ञ में हर संभव मदद का भरोसा दिया। मौके पर यज्ञ समिति के अध्यक्ष ईश्वर यादव, मुंशी पासवान, मुकेश सोनी, श्यामलाल सिंह,मनी यादव, मुकेश यादव, उमेश यादव, त्रिवेणी यादव, एडवोकेट संदीप कुमार ,राम अवतार यादव, राजू यादव ,देवनाथ प्रजापति, जीवन यादव, तुलसी प्रजापति, भुनेश्वर राणा, अनिल यादव, गणेश राणा नंदकिशोर सोनी समेत कई लोग उपस्थित थे।

एक दिवसीय हड़ताल पर रहे शिक्षक व कर्मी

बरकट्ठा। प्रखंड के आदिवासी विकास उच्च विद्यालय शिलाडीह के शिक्षक व अन्य कर्मी संयुक्त शिक्षक संघर्ष मोर्चा के आवाहन पर सोमवार को एकदिवसीय शैक्षणिक हड़ताल पर रहे। वहीं विद्यालय के वरीय शिक्षक राम कुमार पाण्डेय ने कहा कि पिछले 30 -35 वर्षों से हमलोग बिना वेतन का काम कर रहे हैं। सरकार वित्त रहित शिक्षा नीति को समाप्त करते हुए झारखंड के वित्त रहित विद्यालय, कॉलेज, मदरसा, संस्कृत विद्यालय के शिक्षक कर्मी एवं कर्मचारियों को सरकारी कर्मी का दर्जा एवं उचित वेतनमान दिया जाए।

सहयोग

डेंटल कॉलेज व एनटीपीसी के संयुक्त तत्वावधान में निःशुल्क जांच शिविर

539 मरीजों को जांच के बाद मिली दवाइयां

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेज एंड हॉस्पिटल एवं श्रीनिवास अस्पताल ने एनटीपीसी कंपनी के सहयोग से बडकागांव क्षेत्र कवेध में निशुल्क मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजन किया गया। निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में दांत का जांच, नेत्र का जांच, रक्त का जांच, जनरल फिजिशियन, जनरल सर्जन, स्त्री रोग विशेषज्ञ, ईएनटी और बाल रोग विशेषज्ञ की सेवाएं उपलब्ध था। मरीजों को संबंधित उपचार के बाद दवाइयाँ भी वितरण किया गया। जिसमें 539 ग्रामीणों ने शिविर का लाभ लिया एवं अपना स्वास्थ्य का जांच कराया। इस दौरान ग्रामीणों ने चिकित्सकों से निशुल्क उत्तम स्वास्थ्य संबंधित परामर्श भी प्राप्त किया। शिविर का आयोजन में एनटीपीसी कंपनी के अधिकारियों ने अपना सरहानीय योगदान दिया। मौके पर शिविर में डॉ. ए.एन सिंह, डॉ शिवम, डॉ मधु, डॉ आर के अग्रवाल, डॉ निलोफर, डॉ ईशा, डॉ बिनीता, डॉ अली हसन, डॉ. निशाद गवली एवं डॉ. सौम्या राज ने विभिन्न बीमारियों एवं उनके उपचार पर आवश्यक सलाह दी। वहीं चिकित्सकों ने मौखिक स्वास्थ्य जागरूकता एवं शिक्षा कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने शिविर में बुनियादी उपचार का काफी सराहना किया। मौके पर हजारीबाग कॉलेज ऑफ डेंटल साइंसेज एंड हॉस्पिटल एंव श्रीनिवास अस्पताल सचिव डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि हमारा मुख्य उद्देश्य कम लागत में गुणवत्तापूर्ण दंत चिकित्सा एवं स्वास्थ्य का देखभाल प्रदान करना है। शिविर में जरूरतमंदों का बुनियादी उपचार बिलकुल मुफ्त है। अन्य इलाज में मरीजों को 50 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। उन्होंने कहा कि शिविर का लाभ हर जरूरतमंद तक पहुंच रहा है। बुनियादी उपचार से जरूरतमंद लाभान्वित हो रहें हैं। मौके पर प्रशिक्षु डॉ. मेधा, डॉ. मनीषा, डॉ. श्रेया, डॉ. साइमा आकांक्षा, डॉ. फौजिया, डॉ. स्वेता, डॉ. कल्पना, डॉ. अरुशी, डॉ. अमन, डॉ. करण और डॉ. बोबिन्सन ने अपनी बहुमुल्य सेवाएं दी।

डुमरडीह और कुटमाकच्छार पंचायत में विकसित भारत संकल्प कार्यक्रम का आयोजन

भारत की एकता को सुदृढ़ करने के लिए लिया संकल्प

नवीन मेल संवाददाता

कुरडेग। कुरडेग प्रखण्ड के डुमरडीह और कुटमाकच्छार पंचायत में विकसित भारत संकल्प कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जनप्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों का स्वागत स्वयं सहायता समूह की दीदीयों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ जिप उपाघ्यक्ष सोनी कुमारी पैंकरा , मंडल अध्यक्ष कृष्ण कान्त सिंह ,प्रखण्ड सांसद प्रतिनिधि उमेश जयसवाल, श्रद्धानंद बेसरा, प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचलाधिकारी एवं उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा सामूहिक रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। तत्पश्चात विकसित भारत निर्माण हेतू सभी जनप्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों के साथ उपस्थित जनसमूह द्वारा शपथ लिया गया कि भारत को 2047 तक आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाने के सपने को सकार करेंगे। गुलामी की मानसिकता को जड़ से उखाड फेकेंगे। देश की समृद्ध विरासत पर गर्व करेंगे। भारत की एकता को सुदृढ करेंगे और देश की रक्षा करने वालों का सम्मान करेंगें। नागरिक होने का कर्तव्य निभाएगें। भारत सरकार के विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से सम्बंधित पंपलेट का वितरण लोगों के बीच किया गया। कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते हुए जीप उपाध्यक्ष सोनी पेंकरा ने कहा की यह कार्यक्रम पूरे देश में आयोजित की जा रही है जिसका उद्देश्य केंद्र सरकार के योजनाओं को हर लाभार्थी तक पहुंचाना है. प्रधानमंत्री के कल्याण कारी योजनाओं और सोच के कारण आज भारत आगे बढ़ रहा है। आप सब प्रधान मंत्री जी की सोच के साथ आगे बढ़ें और संकल्प लें की भारत को विकसित राष्ट्र बनाना है। कार्यक्रम में के सी सी लाभार्थी ने अपनी सक्सेस स्टोरी को साझा किया । उज्जवला योजना , प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा योजना , अटल पेंशन योजना एवं आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों ने एक एक कर अपना अनुभव साझा किया एवं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में जे एस एल पी एस की महिला समूह के द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का नुक्कड़ नाटक मंचन को लोगों को स्वछता का संदेश दिया। कार्यक्रम में स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच निबंध क्विज एवं चित्रांकण प्रतियोगिता कराया गया जिसमें अव्वल प्रदर्शन करने वाले छात्रों को पुरष्कृत किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री उज्वला योजना के तहत घरेलू गैस लाभूकों के बीच वितरित किया गया। कार्यक्रम में प्रखंड कर्मी आदि उपस्थित रहे।

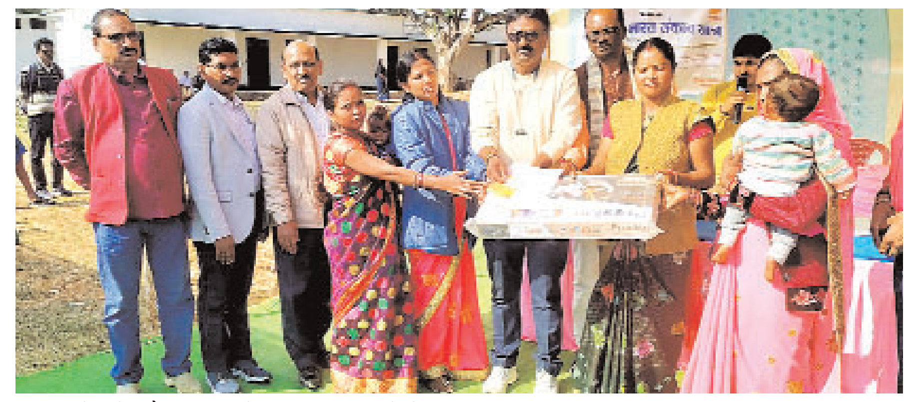

आरोग्यम हॉस्पिटल में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित

हजारीबाग । सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल एचजेडबी आरोग्यम सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल में आई केयर यूनिट खुलने के साथ ही लोगों के बीच आंखों को लेकर जागरूकता का पहल शुरू कर दिया गया है। सोमवार को हॉस्पिटल के आई केयर यूनिट में हजारीबाग का सबसे बड़ा निःशुल्क आंखों की जांच एवं मोतियाबिंद जांच शिविर लगाया गया। शिविर निर्धारित समय 10:00 बजे शुरू हुआ और दोपहर 2:00 बजे तक चला। इस शिविर में आंखों की समस्या से ग्रसित कुल 82 मरीज शामिल हुए। सभी का आरोग्यम आई केयर यूनिट के आई स्पेशलिस्ट डॉ विवेक कुमार ने चिकित्सीय जांच किया और जरूरी दवाई भी मुफ़्त में दी गई। आई स्पेशलिस्ट डॉ विवेक कुमार के मुताबिक शिविर में 22 लोगों का मोतियाबिंद चिन्हित किया गया है जिन्हें जल से जल्द मोतियाबिंद का ऑपरेशन कराने का परामर्श दिया गया।

एक नजर

न्यू गिरिडीह-रांची एक्सप्रेस पर पथराव दो कोच के शीशे टूटे

झुमरीतिलैया (कोडरमा)। शरारती तत्वों ने पत्थर मारकर न्यू गिरिडीह-रांची एक्सप्रेस के विस्टाडोम व सी 2 कोच का शीशा तोड़ दिया। एक दिन पहले इस ट्रेन के गार्ड पर पत्थरबाजी की गई थी जिसमें वह घायल हो गए थे। 18618 डाउन न्यू गिरिडीह-रांची एक्सप्रेस 16.40 बजे कोडरमा स्टेशन पर आई। लोको पायलट विनोद कुमार यादव ने चार्ज लेने के क्रम में देखा कि विस्टाडोम और सी 2 कोच का शीशा टूटा हुआ है। ऑन ड्यूटी टीटीई पुरुषोत्तम कुमार ने बताया कि यह घटना गिरिडीह-कोडरमा सेक्शन के महेशपुर हाल्ट और कोडरमा के बीच हुई है। रपीएफ कोडरमा के जवानों ने दोनों स्टेशनों के बीच पड़ने वाले नीरू नवाडीह, सलाईतंड व अन्य गांवों में जाकर छानबीन की, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। कोडरमा रेलवे सुरक्षा बल में केस किया गया है। इससे पहले राउरकेला-पुरी वंदे भारत एक्सप्रेस, गोरखपुर से लखनऊ जा रही वंदे भारत एक्सप्रेस, रांची से पटना जा रही वंदे भारत एक?सप्रेस पर पथराव की घटना सामने आई थी। असामाजिक तत?व या तो नशे की हालत या मस?ती-मजाक में इस तरह की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, जिस पर यथाशीघ्र नकेल कसने और आरोपितों पर कड़ी कार्रवाई करने की जरूरत है।

ट्रेन से कटकर बुजुर्ग की मौत

कोडरमा। धनबाद गया रेलखंड के बीच परसाबाद रेलवे स्टेशन के समीप सोमवार को पोल संख्या 366/23 के पास ट्रेन से कटे एक व्यक्ति का शव मिला. मृतक की पहचान परसाबाद निवासी 63 वर्षीय नंदलाल चौधरी पिता स्व. बनवारी चौधरी के रूप में की गई. मिली जानकारी के अनुसार मृतक नंदलाल चौधरी का मानसिक संतुलन ठीक नहीं रहता था. वहीं इस घटना की सूचना कोडरमा जीआरपी को दी गई. मौके पर एएसआई संजय कुमार अपने दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचकर शव अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल कोडरमा भेज दिया. घटना की जानकारी मिलने के बाद से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है. आशंका जतायी जा रही है कि ट्रैक पार करने के दौरान वह किसी ट्रेन की चपेट में आ गये होंगे.

आज जिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन

कोडरमा। जिला एथलेटिक संघ एक दिवसीय सातवीं कोडरमा जिला एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन 19 दिसम्बर मंगलवार को करने जा रहा है. जेजे कॉलेज में इसका आयोजन होगा. यह अंडर 14, अंडर 16 और ओपन महिलाओं और पुरुषों के लिए आयोजित की जा रही है. इस प्रतियोगिता के स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर अंडर 14 और अंदर 16 प्रतियोगिता में भाग लेंगे. ज्ञात हो कि एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के द्वारा विश्व की सबसे बड़ी प्रतियोगिता नेशनल इंटर डिस्ट्रिक्ट मीट का आयोजन हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी कर्नाटक के बेल्लारी में किया जा रहा है. अंडर 14 और अंदर 16 के छात्र छात्राओं का चयन इस प्रतियोगिता के माध्यम से किया जाएगा. उन्हें राष्ट्रीय प्रतियोगिता में खेलने के लिए सीधा अवसर प्राप्त होगा.

त्योहार में मिले निर्बाध बिजली, छूटे हुए क्षेत्र में जल्द हो विद्युतीकरण : एनोस एक्का

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। सिमडेगा में बिजली की कई प्रकार की समस्या को लेकर सोमवार को पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री एनोस एक्का सिमडेगा विद्युत विभाग के कार्यपालक अभियंता विशेश्वर मरांडी के साथ कार्यालय में मुलाकात की। मुलाकात करते हुए उन्होंने जिले भर में बिजली की समस्याओं को अवगत कराते हुए कहा कि आज भी कई ग्रामीणों का डबल बिजली बिल भेजा जा रहा है जिसकी वजह से ग्रामीण परेशान है,कई गांव में आज भी लंबे समय से बिजली बिल नहीं जा रही है एवं एक साथ भेज दिया जा रहा है जिससे लोगों को परेशानी हो रही है।इसके अलावा कई गांव में अभी तक विद्युतीकरण नहीं हुआ है, जहां आजादी से लेकर अब तक लोग ढिबरी युग में जी रहे हैं। वर्तमान समय में क्रिसमस का त्योहार नववर्ष का त्यौहार है ऐसे में लोगों को निर्बाध तरीके से बिजली मिले इसके लिए बिजली विभाग कार्य करें ताकि लोगों को त्यौहार के दौरान किसी प्रकार की कोई भी परेशानी ना हो। उन्होंने कहा कि जिले के जिस भी क्षेत्र में जाए लोग बिजली विभाग के कार्यशैली और बिजली विभाग का शिकायत करते हैं जिसे दूर करने की आवश्यकता है, ताकि क्षेत्र में लोगों को परेशानी ना हो। जिला के कई क्षेत्र में लगातार जंगली हाथियों का आतंक जारी है, ऐसे में उन गांव में निर्वात बिजली मिले तो रोशनी की वजह से हाथी की खतरा कुछ हद तक कम किया जा सकेगा। इधर पूर्व मंत्री ने त्यौहार में लोगों की परेशानियों को ख्याल रखते हुए बिजली आपूर्ति करने की बात कही। मौके पर कार्यपालक अभियंता ने बताया कि पावर ग्रिड में लोड सेटिंग की वजह से लोगों को परेशानिओ9डयों का सामना करना पड़ता है ,जैसे ही वहां से 7सब कुछ ठीक रहता है तो हम निर्बाध तरीके से बिजली देने का कार्य करेंगे।

खीस्त जयंती सह क्रिसमस मिलन समारोह में थिरके मसीही धर्मावलंबी

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। कोचेडेगा पेरिस के महुवाटोली स्थित नॉर्थ वेस्टर्न एजोलिकल लूथेरान चर्च में खीस्त जयंती सह क्रिसमस मिलन समारोह का आयोजन हर्षोल्लास के साथ मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सिमडेगा विधायक भूषण बाड़ा ने किया। उन्होंने सभी को क्रिसमस पर्व की अग्रिम बधाई दी। विश्वासियों को संदेश देते हुए विधायक भूषण बाड़ा ने कहा कि क्रिसमस आपसी प्रेम, सद्भाव और भाईचारे के प्रतीक का पर्व है। क्रिसमस के मौके पर धर्म विश्वसियों से अपेक्षा है कि सच्चे मन से ईश्वर की आराधना करें। दुनिया मे शांति, दया, सेवा, सुख, समृद्धि के साथ साथ अपने उज्जवल भविष्य के लिए प्रार्थना करें। आपस मे प्रेम, शांति और भाईचारा का संबंध बनाने हुए सभी का सहयोग करने का संकल्प लें। विधायक ने कहा कि गरीबों, असहायों, दीन-दुखियों की सेवा करते हुए जरूरतमंद लोगों में वस्त्र, अनाजों का वितरण करें। लोगों से प्रेम करने एवं असहायों की सेवा व मदद करने का संकल्प लेते हुए आपस मे आनंद के साथ पर्व मनाएं।

एक नजर

उपायुक्त ने की अबुआ आवास योजना की समीक्षा

सिमडेगा। उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ₹अबुआ आवास योजना₹ संबंधित समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई।उपायुक्त द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिले के सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी संग बैठक कर कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के माध्यम से आवास योजना हेतु प्राप्त आवेदनों का ससमय एंट्री कराने एवं उसका गठित समिति के द्वारा भौतिक सत्यापन करते हुए ससमय एंट्री सुनिश्चित कराते हुए सभी प्रक्रियाओं को पूर्ण कराने का निर्देश दिया।बैठक में डीआरडीए डायरेक्टर श्री रवि किशोर राम, ईडीएम चंद्रशेखर कुमार एवं डीआरडीए शाखा के कर्मी गण उपस्थित थे।

उपायुक्त सिमडेगा ने जनता दरबार में सुनी लोगों की समस्याएं

सिमडेगा। आम जनमानस के समस्याओं के समाधान और त्वरित निष्पादन को लेकर उपायुक्त अजय कुमार सिंह के द्वारा जनता दरबार का आयोजन किया गया। इस दौरान जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने जनता दरबार में आकर अपनी समस्याओं को उपायुक्त के समक्ष रखा।इस दौरान उपायुक्त ने वहां उपस्थित सभी लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी एवं आश्वस्त किया कि संज्ञान में आए हुए सभी शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान किया जाएगा। उपायुक्त के जनता दरबार में सावित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ दिलाने, जमीन बटवारा, जन वितरण प्रणाली दुकान, सोलर पम्पसेट सिंचाई योजना का लाभ दिलाने, वृद्धा पेंशन योजना का राशि दूसरे के खाते में भुगतान होने, बैंक द्वारा अनियमित रूप से बैंक खाते से पैसा काटने एवं अन्य से संबंधित मामले आये।

अघन पंचमी तामड़ा जतरा महोत्सव आयोजन समिति ने लोगों का किया आभार व्यक्त

सिमडेगा। सिमडेगा सदर प्रखंड अंतर्गत तामड़ा पंचायत में अघन पंचमी के मौके पर आयोजित दो दिवसीय जतरा महोत्सव के सफल आयोजन को लेकर आयोजन समिति के द्वारा सभी लोगों का आभार व्यक्त किया है ।आयोजन समिति के अध्यक्ष लाल महतो ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आयोजन समिति के तमाम पदाधिकारी सदस्य, झारखंड मुक्ति मोर्चा, पुलिस प्रशासन, जिला प्रशासन एवं तमाम प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पत्रकारों का आभार व्यक्त किया उन्होंने कहा कि आप सभी के सहयोग से सफलतापूर्वक दो दिवसीय यह भव्य जतरा मेला का समापन किया गया जिसमें आप लोगों की भूमिका सराहनीय रही इसी प्रकार प्रत्येक वर्ष आप सभी से सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

आजसू के केंद्रीय प्रवक्ता बने जिलाध्यक्ष विकास राणा

हजारीबाग। जिलाध्यक्ष विकास राणा को आजसू के केंद्रीय प्रवक्ता बनाए जाने पर,आर्ट एण्ड कल्चरल ट्रस्ट के अध्यक्ष रामकिशोर सावंत समेत अन्य कलाकारों ने उनके आवास पर जाकर उन्हे बधाई दी।प्रतिनिधिमण्डल में आर्ट एण्ड कल्चरल के पूर्व अध्यक्ष सुबोध आकाश, सचिव प्रदीप पाठक, तरंग ग्रुप के डायरेक्टर अमित गुप्ता, बबलू सिन्हा, शशिकान्त सिन्हा उर्फ चुन्नू एवं आशीष सिन्हा शामिल थे। मौके पर राणा ने कहा कि केन्द्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने मुझपर भरोसा करके जो दायित्व सौंपा है उसे पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निर्वहन करूंगा,साथ हीं कल्चरल ट्रस्ट के द्वारा मुझे जो सम्मान दिया गया है मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं।

हजारीबाग यूथ विंग ने विद्यार्थियों एवं जरूरतमंदों के बीच किया कंबल का वितरण

हजारीबाग। शहर में मौसम के बदले मिजाज और बढ़ती कंपकपाती ठंड के बीच पिछले एक महीने से लगातार जरूरतमंदों की सेवा में हजारीबाग यूथ विंग के द्वारा कंबल का वितरण किया जा रहा है इसी के नियमित रविवार को संत कोलंबस कॉलेज के निकट दर्जनों गरीब,असहाय और लाचार महिला- पुरुषों को कंबल का वितरण किया गया, वहीं इसी क्रम मे कारमेल स्कूल के हिंदी मीडियम के विद्यार्थी जो गरीब परिवार से तालुकात रखते हैं उने कंबल प्रदान किया गया हजारीबाग यूथ विंग के द्वारा शाम में अलाव की व्यवस्था की जा रहा है।

जदयू की प्रमंडल स्तरीय बैठक

हजारीबाग। जनता दल यूनाइटेड की प्रमंडलीय बैठक आर्य नगर स्थित पार्टी कार्यालय में सोमवार को हुई।बैठक में आगामी 21 जनवरी को रामगढ़ में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जदयू के राष्ट्रीय नेता और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आगमन पर चर्चा की गई।बैठक की अध्यक्षता उत्तरी छोटा नागपुर प्रमंडलीय प्रभारी मुन्ना मलिक ने किया और मंच संचालन प्रदेश सचिव मिथिलेश सिंह ने किया। बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष सह राज्य सभा सांसद खीरू महतो थे।बैठक में उत्तरी छोटा नागपुर के जिले एवं प्रखंडों से जदयू के पदाधिकारी उपस्थित हुए।सांसद खीरू महतो ने कार्यकताओं को आगामी 21 जनवरी को भारी संख्या में रामगढ़ पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया।

कोडरमा : शिविर में आमलोगों को मिला सरकारी योजनाओं का लाभ

कोडरमा। आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के तहत कोडरमा जिला में कई जगहों पर शिविर लगाये गये. डोमचांच प्रखंड के जानपुर, कोडरमा प्रखंड के कोलगरमा, चंदवारा प्रखंड के चंदवारा पश्चिमी, जयनगर प्रखंड के रूपायडीह और मरकच्चो प्रखंड के पुरनानगर पंचायत में शिविर का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में प्रखंड विकास पदाधिकारी ने राज्य सरकार की योजनाओं जैसे अबुआ आवास योजना, गुरूजी स्टुडेंट्स क्रेडिट योजना, बिरसा सिंचाई कूप योजना, आयुष्मान कार्ड, सामुदायिक वन पट्टा और व्यक्तिगत वन पट्टा, केसीसी, सर्वजन पेंशन योजना, मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना, श्रम विभाग की योजनाओं के बारे में जानकारी दी. शिविर में साइकिल वितरण योजना, सावित्री बाई फुले किशोरी समृद्धि योजना, जॉब कार्ड, कंबल, धोती साड़ी का लाभ दिया गया. शिविर में सभी विभागों द्वारा विभागीय योजनाओं की जानकारी दी गई और आवेदन प्राप्त किये गये. शिविरों में विभिन्न विभागों द्वारा स्टॉल लगाए गए थे.

रतन वर्मा को मिला 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान', साहित्यकारों में हर्ष

नवीन मेल संवाददाता

हजारीबाग। जाने-माने कथाकार, कवि, साहित्यकार रतन वर्मा को पटना में जगजीवन राम संसदीय अध्ययन एवं राजनीतिक शोध संस्थान सभा गृह में 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान समारोह' (आरा)के तत्वाधान में आयोजित एक समारोह में 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान' प्रदान कर अलंकृत किया गया है।यह सम्मान उन्हें वर्ष 2022 हेतु उत्कृष्ट कथा लेखन के लिए प्रदान किया गया है । सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार आलोक धनवा एवं रामधारी सिंह दिवाकर ने पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र, स्मृति चिन्ह और 'प्रशस्ति पत्र' प्रदान कर अलंकृत किया। 'कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार मदन कश्यप एवं ऋषिकेश सुलभ , उद्घाटन रांची के प्रख्यात साहित्यकार रवि भूषण, संचालन आलोचक सुधीर सुमन ने किया। आयोजित कार्यक्रम में काफी संख्या में झारखंड और बिहार के साहित्यकार सम्मिलित हुए। कथाकार रतन वर्मा को 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान' से अलंकृत किए जाने पर हजारीबाग के साहित्यकारों ने हर्ष व्यक्त किया है। साहित्यिक संस्था 'परिवेश' के संयोजक विजय केसरी ने कहा कि रतन वर्मा झारखंड के ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के एक नामचीन लेखक के रूप में उभर कर सामने आए हैं ।उनका रचना संसार बहुत ही विस्तृत है। एक और उनकी कहानी गरीबों के बहते पसीने पर 'गुलबिया'दर्ज है ।वहीं दूसरी ओर जात-पात की संकीर्णताओं पर 'कमजोर जात' कहानी प्रहार करती नजर आती है। रतन वर्मा बीते चालीस वर्षों से लगातार लिखते चले आ रहे हैं। 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान' उनके कंधों पर बड़ी जवाबदेही दे दी है।

कृषक पाठशाला में किसानों को दी गई जानकारी

बानो। प्रखण्ड के कनोरोवा पंचायत के ग्राम बरबेड़ा में किसान पाठशाला आयोजन किया गया। इस किसान पाठशाला में जल प्रबंधन जैसे टपक सिंचाई विधि द्वारा खेती करने पर किसानों को प्रेरित किया गया ।साथ ही टपक सिंचाई की महत्वपूर्ण कार्य के बारे में जानकारी दी गई - जैसे जहां पानी की बचत होती है, वहीं इस विधि द्वारा पानी दवाईयां जैसे यूरिया,पोटाश और अन्य कीटनाशक दवाएं सीधे पौधे की जड़ में जाती है। फूल की खेती जैसे जरबेरा और ग्लेडुलस बल्ब एवं फसलों के लिए लाभदायक है। जिसमे सिंचाई के दौरान पानी की बचत होती है।

विधायक मद से निर्मित चबूतरे का उद्घाटन

सिमडेगा। विधायक भूषण बाड़ा ने सदर प्रखंड के बड़ाबरपानी में विधायक मद से निर्मित चबूतरा का उद्घाटन फीता काटकर किया। इस दौरान विधायक ने शिलापट्ट का अनावरण भी किया। विधायक ने कहा कि ग्रामीणों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि गांव में चबूतरा का निर्माण ग्रामीणों की मांग पर किया गया है। चबूतरा का निर्माण हो जाने से ग्रामीण बैठक एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम आसानी से कर पाएंगे।

स्वीप कार्यक्रम को लेकर डीसी ने की बैठक

डीपीआरओ को डीसी ने स्वीप अधिकारी बनाया

नवीन मेल संवाददाता

सिमडेगा। उपायुक्त सिमडेगा अजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में स्वीप के तहत कार्यक्रम आयोजित करने से संबंधित विषयों पर विचार-विमर्श हेतु बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान उपायुक्त द्वारा सिमडेगा एवं कोलेबिरा विधानसभा आम निर्वाचन 2024 में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से जिला स्तरीय स्वीप कमेटी की बैठक आयोजित कर स्वीप कार्ययोजना अंतर्गत मतदाता जागरुकता से संबंधित स्वीप गतिविधियों का संचालन करने के निर्देश दिये। इसके साथ-साथ समस्त जिले के हॉकी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी, गायक, एवं नये छात्र-छात्राओं को मतदान प्रक्रिया से जोड़ने हेतु प्रेरक कार्यक्रम चलाने के निर्देश दिये। उन्होंने स्वीप गतिविधियों के तहत मतदाताओं के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए जिले एवं पंचायत स्तर पर कई कार्यक्रमों का आयोजन करने हेतु महत्त्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने इस हेतु स्वीप गतिविधियों के संचालन एवं पर्यवेक्षण हेतु जिला-संपर्क पदाधिकारी आशा मैक्सिमा लकड़ा को स्वीप नोडल अधिकारी नियुक्ति करने के निर्देश दिए। बैठक में उप निर्वाचन पदाधिकारी मनीष कुमार, जिला भू अर्जन पदाधिकारी, अरुणिमा कुमारी, जिला खेल पदाधिकारी प्रवीन कुमार, जिला जन-सम्पर्क पदाधिकारी आशा मैक्सिमा लकड़ा, हॉकी अध्यक्ष मनोज कुमार प्रसाद उपस्थित थे।

मिला समाधान | लमडेगा में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन

2392 आवेदनों का ऑन द स्पॉट निष्पादन

नवीन मेल संवाददाता

जलडेगा प्रखंड के सुदूरवर्ती पंचायत लमडेगा सचिवालय में सोमवार को आपकी योजना-आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य रुप से उपस्थित जिला परिषद सदस्य रोजालिया शांता कंडुलना, प्रमुख जुसाफ लुगुन, सीओ मधुश्री मिश्रा, पशुपालन पदाधिकारी डॉ जॉनसन भेंगरा मुखिया बिपिन बडिंग, विधायक प्रतिनिधि अर्जुन होरो, के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। सीओ मधुश्री मिश्रा ने कहा सरकार व सरकारी की सभी योजनाएं आम लोगों के लिए है जिसका गांव की अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुंचाना सरकार व प्रशासनिक अधिकारियों की जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य को लेकर सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सोमवार को लमडेगा पंचायत सचिवालय में आयोजित सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में ग्रामीणों द्वारा अलग अलग समस्याओं का समाधान और नई योजनाओं के लिए कुल 4031 आवेदन प्राप्त हुए हैं। कार्यक्रम के दौरान 2392 आवेदनों का ऑन स्पॉट निष्पादन कर दिया गया और बाकी बचे 1639 आवेदनों की कार्रवाई में विभाग के कर्मी जुटे हैं।

जमशेदपुर के रीगल स्टेडियम में सूंड़ी एकता महासम्मेलन का आयोजन, जुटे देश-विदेश के प्रतिनिधि

एकजुटता से होती है समाज की जड़ें मजबूत : सांसद

दहेज प्रथा समाप्ति के लिए आगे आएं समाज : सांसद आदित्य साहू

नवीन मेल संवाददाता

जमशेदपुर। राष्ट्रीय सूंड़ी समाज की ओर से जमशेदपुर के रीगल स्टेडियम में सूंड़ी एकता महासम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें समाज में एकजुटता बनाये रखने पर जोर दिया गया। महासम्मेलन में राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू के यहां आयकर विभाग की छापेमारी और राशि बरामदगी के बाद उन्हें बदनाम करने के साजिश की निंदा की गयी। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए नेपाल से आए सम्मेलन के उद्घाटनकर्ता राम उधार महासेठ ने कहा कि सूंड़ी समाज को राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट होकर आवाज उठाने से अधिकार की प्राप्ति होगी। हमें अपनों को स्वीकार न करना, हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। इसी कारण हम पीछे हैं, दहेज कोई प्रथा नहीं बल्कि कुप्रथा है। दहेज नहीं लेने से ये प्रथा खत्म होगी। राज्यसभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू ने कहा कि समाज में फैले दहेज प्रथा को समाप्त करने के लिए सभी को आगे आना होगा। विधायक अमित कुमार मंडल ने सूंड़ी जाति को अनूसूचित जाति में शामिल करने की मांग की। प्रदेश उपाध्यक्ष बीरेंद्र साहू ने कहा कि हमारे समाज के राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू व्यक्ति नहीं संस्था हैं। उन्हें फंसाया जा रहा है लेकिन वे फसेंगे नहीं, बेदाग छवि के साथ निकलेंगे। कार्यक्रम में मधुबनी से पूर्व एमएलसी सुमन महासेठ, रामूधार महासेठ, शत्रुघन महासेठ, राजेश साहू, दिलीप नाथ साहू, कुमकुम देवी, सुधीर कुमार मंडल, अजीत साहू, हरेंदर प्रसाद साहू , मनोज साहू, ओम प्रकाश गुप्ता, संजय साहू, राधेश्याम साहू, राजेश साहू, भूपेन भगत, विनोद साहू, संतोष साहू, कृष्णा मुरारी साहू, राजीव साहू, बाबुल साहू, मुकेश साहू, रामनाथ सूंड़ी, सुभास मंडल, सुरेश चौधरी, रीता मंडल, प्रभा मंडल, विश्वजीत मंडल, गणेश चौधरी और सूरज मंडल सहित अन्य शामिल थे।

उमड़ा जनसैलाब

धीरज साहू को फंसाया जा रहा है : उपाध्यक्ष वीरेंद्र साहू

100 लोगों ने थामा झामुमो का दामन

नवीन मेल संवाददाता

चाईबासा। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के बैनर तले गुवा सेवानिवृत्त श्रमिक संघ के 100 लोगों ने झामुमो का दामन थामा. इस दौरान झारखंड मुक्ति मोर्चा ने गुवा के ठाकुरा गांव स्थित कारो नदी के किनारे एक भव्य वनभोज का आयोजन किया गया. इस वनभोज में जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सुरेन उपस्थित हुई. जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सुरेन ने कहा कि आने वाले 2024 में लोकसभा चुनाव होने जा रही है. इस वर्ष 2024 में झामुमो का ही सरकार बनना तय है. झामुमो ही एक ऐसी पार्टी है जो झारखंड का पूर्ण विकास करना जानती है. आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के माध्यम से झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विभिन्न योजनाओं के माध्यम से गरीब किसान, बीपीएल कार्डधारी, महिला समिति को योजना की जानकारी देकर उनके घर तक योजनाएं पहुंचा रही है. सभी योजनाओं का लाभ सभी को मिल सके. झारखंड सरकार की योजना अबुआ आवास के माध्यम से गरीबों को घर दिया जा रहा है. कार्यक्रम के अंत में करीब 100 गुवा सेवानिवृत्त श्रमिक संघ ने झामुमो का दामन थामा. साथ ही सभी को जिप अध्यक्ष लक्ष्मी सुरेन ने माला पहनाकर सभी का स्वागत किया. कार्यक्रम के अंत में सामूहिक वनभोज का आनंद लिया.

टीएसएफ ने 28 किसानों को दिए सोलर पंप

चाईबासा। टाटा स्टील फाउंडेशन (टीएसएफ) नोवामुंडी द्वारा काटामाटी एवं नोवामुंडी के महुदी, कुटरपोसी, बड़ा बलजोड़ी, जेटेया, पोखरपी एवं जामपानी आदि अन्य गांवों के कुल 28 किसान समूह को सोलर पंप का वितरण किया गया. इसके बाद गांव में किसानों का कहना है कि सोलर पंप के उपयोग से उन्हें सिंचाई करने के खर्चों से बड़ी राहत मिल रही है. इसके उपयोग करने से वे एक साथ दो-तीन कामों को भी कर पा रहे हैं. कृषि के क्षेत्र में सौर ऊर्जा एक बेहतर विकल्प है. सौर ऊर्जा से चलने वाला सिंचाई यंत्र जिसे हम सोलर पंप कहते हैं. फसलों के उत्पादन में सिंचाई हेतु सोलर पंप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह उथले हुए कुआं, तालाब, नदी, नहर आदि स्थानों से पानी को निकालने में सहयोगी होते हैं. इसके उपयोग से न केवल खर्चों की बचत कर सकते हैं, बल्कि समय की बचत भी कर सकते हैं. टाटा स्टील फाउंडेशन द्वारा सहयोग किए गए यह सोलर पंप का उपयोग बहुत ही आसान है. इसे कोई भी बड़ी आसानी से उपयोग कर सकता है. यह एक पोर्टेबल सोलर पंप है.

लिंडसे क्लब में पौष पार्बन उत्सव का आयोजन

धनबाद : कलाकारों का हौसला बढ़ाया बीसीसीएल के सीएमडी ने

बीसीसीएल के सीएमडी समीरन दत्त ने किया उद्घाटन

धनबाद। लिंडसे क्लब में बीसीसीएल सीएमडी समीरन दत्ता ने पौष पार्बन उत्सव का उद्घाटन किया. हीरापुर स्थित लिंडसे क्लब में तृतीया वर्ष पौष पार्बन उत्सव का उद्घाटन मुख्य अतिथि बीसीसीएल के सीएमडी समीरन दत्त ने फीता काटकर किया. इस मौके पर उनकी धर्मपत्नी मिली दत्ता उपस्थित थी. मंच पर दीप प्रज्वलित करने के पश्चात समीरण दत्ता ने कहा कि आज इस उत्सव में कुछ बच्चों से मिलकर उनकी मासूम बातें सुनने का मौका मिला जो काफी अच्छा लगा.कहा उत्सव में भाग लेने वाले सारे कलाकारों को अभिनंदन किया।

एक नजर

बोकारो : मधुमक्खी के हमले से चार घायल, एक की हालत गंभीर

बोकारो। बोकारो जिले के कसमार प्रखंड मुख्यालय के सामने धधकिया मोड़ में आज सोमवार दोपहर को मधुमक्खियों के हमले से चार लोग घायल हो गये. इनमें से एक की स्थिति गंभीर बतायी जा रही है. सभी को कसमार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है, जहां चिकित्सा प्रभारी डॉ बीपी गुप्ता की देखरेख में उनका चल रहा है. घायलों में मनोज मुखर्जी, काजल मुखर्जी, सीमांत कुमार सिंह और साहिल कुमार शामिल हैं. जानकारी के अनुसार, धधकिया मोड़ के एक पेड़ में मधुमक्खियों ने छत्ता बनाया था. जिसपर आज दोपहर में चिड़ियों ने चोंच मार दी. जिसके बाद हजारों की संख्या में मधुमक्खी मेन रोड में उड़ने लगे. इस बीच मधुमक्खियों ने धधकिया मोड़ के सामने घूम रहे एक युवक पर हमला कर दिया. दृष्टिबाधित होने के कारण मनोज मुखर्जी भाग नहीं पाये और मधुमक्खियों ने उनके पूरे शरीर पर डंक मार दिया. इस बीच उनको बचाने आये काजल मुखर्जी को भी मधुमक्खियों ने अपना निशाना बनाया. साथ ही इस रास्ते से गुजर रहे कसमार अस्पताल के स्वास्थ्यकर्मी सीमांत कुमार सिंह और साहिल कुमार को भी मधुमक्खियों ने डंक मारकर घायल कर दिया.

गिरिडीह : महावीर कुटिया मंदिर में श्रीराम जानकी विवाह महोत्सव का आयोजन

गिरिडीह। महावीर कुटिया मंदिर में बीती रात (रविवार) राम-जानकी विवाह महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया. महोत्सव को लेकर कुटिया गली रोड स्थित प्राचीन सिद्धपीठ महावीर मंदिर से नीलकमल भरतिया, गोपाल खंडेलवाल, मिट्ठू खंडेलवाल, विजय शर्मा, लाला केडिया, संजय शर्मा, शशांक अग्रवाल समेत कई सदस्यों के नेतृत्व में भगवान राम की भव्य बारात निकली गयी. जिसको देखने के लिए श्रद्धालु की भारी भीड़ जुटी. आयोजक समिति के पदाधिकारियों ने परंपरा के अनुसार राम भगवान राम समेत बारातियों का स्वागत किया. जिसके बाद जयमाला की रस्म अदा की गयी. देर रात आयोजन समिति के सदस्य राजा दशरथ और राजा जनक का वेशधर कर माता सीता का कन्यादान किया.

तोपचांची : स्कूल का ताला तोड़ एमडीएम की सामग्री उड़ा ले गये चोर

धनबाद। तोपचांची प्रखंड स्थित मध्य विद्यालय चिरुडीह को चोरों ने निशाना बनाया. रविवार देर (17 दिसंबर) चोरों ने स्कूल का ताला तोड़ा और मिड डे मिल बनाने वाली सामग्री चोरी कर ले गये. घटना के संबंध में स्कूल के शिक्षक हुलास चंद्र महतो ने बताया कि रात को स्कूल में चोरी हुई है. चोरों ने स्कूल में रखे मध्यान भोजन बनाने वाले सामग्री (डेग, कड़ाही, गिलास, प्रेशर कुकर, गैस सिलेंडर) चोरी करके भाग गये. चोरी होने से बच्चों का देना वाला मिड डे मिल आज नहीं बन पाया. घटना के संबंध में तोपचांची थाना में लिखित शिकायत दी गयी है.

टाटानगर स्टेशन के पास सड़क पार कर रहे व्यक्ति को ट्रक ने कुचला, मौत

जमशेदपुर। बागबेड़ा थाना अंतर्गत टाटानगर रेल पुलिस अधीक्षक कार्यालय के समीप स्टेशन रोड में रविवार देर रात भारी वाहन की चपेट में आकर एक राहगीर की मौत हो गई. घटना के बाद वहां से गुजर रहे कुछ लोगों ने इसकी सूचना पुलिस को दी. जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर रेल पुलिस (जीआरपी) थाना के पास शव गृह में रखवा दिया. फिलहाल मृतक की पहचान नहीं हो सकी है. प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि उक्त व्यक्ति पैदल ही सड़क पार कर रहा था, उसी दौरान किसी भारी वाहन ने उसे टक्कर मार दी और उसके सिर के ऊपर से ट्रक का चक्का पार कर गया. जिससे उसकी मौके पर ही उसकी मौत हो गई. मृतक नीले रंग का स्वेटर और काले रंग की जींस पैंट पहने हुए है. पुलिस इस संबंध में जानकारी जुटाने का प्रयास कर रही है. सोमवार को शव का पोस्टमार्टम कराया गया.

बोकारो : कसमार सीएचसी में प्रसूता ने तीन बच्चों को दिया जन्म, तीनों स्वस्थ

बोकारो। कसमार स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में रविवार देर रात गर्री पंचायत की एक प्रसूता ने तीन बच्चों को जन्म दिया है. जानकारी के अनुसार गर्री निवासी अनिल कुमार गोस्वामी की पत्नी सविता देवी को रविवार रात्रि प्रसव पीड़ा के बाद सीएचसी में भर्ती किया गया. जहां देर रात्रि लगभग 2 बजे जीएनएम सावित्री कुमारी एवं एएनएम पार्वती कुमारी की देखरेख में प्रसूता ने दो बच्ची और एक बच्चे को जन्म दिया. इनमें से एक बच्चे व एक बच्ची का वजन एक किलोग्राम एवं बच्ची का वजन 1250 ग्राम है. उचित देखरेख व चिकित्सा के लिए तत्काल प्रसूता एवं तीनों बच्चों को सदर अस्पताल बोकारो भेजा गया. सदर अस्पताल से प्राप्त जानकारी के अनुसार वजन कम रहने के कारण प्रसूता समेत सभी बच्चों को पीएमसीएच धनबाद भेज दिया गया.

कोयला तस्कर की मौत, पुलिस बेखबर

बोकारो। बोकारो थर्मल थाना क्षेत्र अंतर्गत हथबजवा में अवैध कोयला लेकर जा रहे धंधेबाज की बाइक से गिरकर मौत हो गयी. मृतक का शव बाकी कोयला तस्कर और उसके परिजन लेकर भाग गए. घटना सोमवार सुबह चार बजे की है. बताया जाता है कि बाइक का टायर ब्लास्ट हो जाने के कारण कोयला लेकर जा रहा व्यक्ति बाइक से गिर गया, जिससे उसकी मौत हो गयी. शव की पहचान कथारा स्थित महलीबांध गांव के अनिल यादव के रूप में की गयी है. हालांकि इस मामले में बोकारो थर्मल पुलिस बेखबर है. थाना प्रभारी रूपेंद्र कमार राणा ने बताया कि ऐसी कोई घटना की जानकारी नहीं मिली है. यदि ऐसा हुआ है तो जांचकर कार्रवाई की जाएगी. बोकारो थर्मल थाना क्षेत्र के आरमो और नयाबस्ती में अवैध कोयले की मंडी लगती है. यहां से बोरे में भरकर बाइक पर लोडकर बिष्णुगढ़ एवं बगोदर थाना क्षेत्र के मड़मो खेतको आदि स्थानों पर ले जाकर कोयले को बेचा जाता है. बाइक से कोयला तस्करी करने वाले एक बाइक पर 18-32 बोरा तक कोयला लेकर चलते हैं. बोकारो थर्मल, कथारा ओपी, पेटरवार, पेंक नारायणपुर थाना क्षेत्र से बाइक से कोयला तस्करी का धंधा इन दिनों परवान पर है. बोकारो थर्मल थाना क्षेत्र के ही गोविंदपुर टीसी एवं टीएच कॉलोनी, सीसीएल गोविंदपुर हॉस्पिटल एरिया, हरिजन बस्ती, नयी बस्ती, कंजकिरो, लुकूबाद, अरमो नदी धार, हथबजवा आदि से प्रतिदिन तीन से साढ़े तीन सौ बाइकों से अवैध कोयले का कारोबार जारी है. सूत्रों की मानें तो बाइकों से उगाही के लिए एजेंट बहाल किये गये हैं. जिसमें एक पूर्व पंसस भी शामिल है. कोयला चोरी से सीसीएल खासमहल, कथारा, गोविंदपुर, जारंगडीह एवं स्वांग प्रबंधन परेशान है.

एक नजर

समाजसेवी संस्था के सदस्यों ने बांटे कंबल

जमशेदपुर। बहरागोड़ा प्रखंड क्षेत्र पुरनापानी पंचायत अंतर्गत मेहुलचुईं गांव में बढ़ते ठंड को देखते हुए समाजसेवी संस्था के सदस्यों ने गरीब, असहाय विधवा व वृद्ध लोगों को ठंड से राहत दिलाने के लिए कंबल का वितरण किया. इस अवसर पर सीपीआई (एम) के अंचल सचिव चित्र निरंजन महतो ने बताया कि शीतलहर चलने के कारण असहाय लोगों को ठंड से मुक्ति दिलाने के लिए कंबल वितरण के साथ-साथ गरम परिधान का भी वितरण करना बहुत ही सराहनीय कार्य है. इस मौके पर बुधु मुंडा, चैतन मुंडा, निमाई मुंडा, हेपा मुंडा आदि उपस्थित थे.

गुवा सेल खदान में 61वां सुरक्षा सप्ताह का शुभारंभ

चाईबासा। सेल गुवा अयस्क माइंस, बोकारो स्टील प्लांट 61वां सुरक्षा सप्ताह 2023 का उद्घाटन, डीजीएम चाईबासा क्षेत्र के तत्वावधान सोमवार को किया गया. सेल गुवा के मुख्य महाप्रबंधक कमल भास्कर और महिला समिति अध्यक्ष स्मिता भास्कर की अध्यक्षता में कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलित व सुरक्षा की प्रतीकात्मक मूर्ति पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पण कर किया गया. कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक (सीजीएम) कमल भास्कर ने कहा कि सतर्कता हटी, दुर्घटना घटी. उन्होंने मन, कर्म व वचन से साथ सुरक्षा के नियमों को समझने एवं आत्मसात करना जरूरी बताया. उन्होंने कहा कि जल्दीबाजी एवं ओवर कॉन्फिडेंस के कारण अक्सर दुर्घटनाएं घटती हैं. उन्होने सभी को सुरक्षा दीपक जलाते रहने की अपील कर असुरक्षा से लड़ते रहने के लिए प्रेरित किया. साथ ही सेल गुवा प्रबंधन की ओर सुरक्षा बनाए रखने हेतु सदैव सबों को खड़े रहने का अश्वासन दिया. साथ सुरक्षा के नई तकनीक को अनुकरणीय बताया. महाप्रबंधक (खान) एसपी दास ने कहा कि खान में सदैव सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाती है.

दहेज दानव की भेंट

विवाहिता की पीट-पीटकर हत्या, सुसरालवाले फरार

नवीन मेल संवाददाता

गावां(गिरिडीह)। गिरिडीह में गावां थाना क्षेत्र स्थित सेरूआ गांव में रविवार देर रात ससुराल वालों ने एक विवाहिता की मारपीट कर हत्या कर दी। उसके बाद शव को गावां अस्पताल में फेंक सभी फरार हो गए। सूचना पर पहुंची गावां थाना की पुलिस ने शव को जब्त कर लिया है और मायके के लोगों के आवेदन पर केस दर्ज कर मृतका के पति को हिरासत में ले लिया है। महिला के परिजन ने बताया कि तिसरी थाना क्षेत्र के घाघरा निवासी कुलसुम खातून का निकाह 8 साल पहले सेरूआ निवासी मो. शाबिर के साथ हुई थी। दोनों की छह साल की एक बेटी भी है। कहा कि शादी के बाद से ही ससुराल में महिला को बंदिशों में रखा जाता था। मृतका की मां रेहाना खातून ने बताया कि उसके बेटे व एक अन्य बेटी की शादी में भी उसे मायके आने नहीं दिया गया। अक्सर ससुराल वालों की ओर से पैसे की मांग की जाती थी। कुछ दिन पहले घर बनाने के लिए पैसे की मांग की थी तो एक लाख रुपये दिया था। एक बार फिर दामाद अपने भाई, जो मलेशिया में फंसे अपने भाई को वापस लाने के नाम पर एक लाख रुपये मांग रहा था। पैसे नहीं देने पर उसकी बेटी के साथ मारपीट कर उसकी हत्या कर दी गई। रविवार शाम को बेटी ने अपने भाई व भाभी को फोन पर बताया था कि उसका पति बहुत मारपीट कर रहा है। लगता है जान ले लेगा। इसके बाद रात 2 बजे थाने से फोन आया कि उसकी बेटी कुएं में डूबकर मर गई है। सूचना पर वह लोग पहुंचे तो पता चला कि शव को गावां अस्पताल में छोड़कर ससुराल वाले फरार हो गए हैं। पुलिस ने मायके वालों के आवेदन पर शव को जब्त कर प्राथमिकी दर्ज कर ली है। मृतका की मां वह परिवार के अन्य सदस्यों की ओर से लगाए गए आरोपों के आधार पर पुलिस जांच कर रही है। ससुराल वालों की तलाश भी जारी है।

एसोसिएशन ने क्रिसमस पर बच्चों को दिये नये वस्त्र

चाईबासा। ऑल क्रिश्चियन एसोसिएशन किरीबुरु-मेघाहातुबुरु के संयुक्त तत्वावधान में 17 दिसम्बर की देर रात मेघाहातुबुरु के ओपेन थियेटर में आयोजित क्रिसमस मिलन समारोह के दौरान बतौर मुख्य अतिथि मेघाहातुबुरु के महाप्रबंधक योगेश प्रसाद राम एवं जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सोरेन के अलावे विशिष्ट अतिथि मुखिया पार्वती किड़ो व अन्य द्वारा प्रभु यीशु मसीह के जन्मोत्सव पर केक काटा गया. समारोह में जिला परिषद अध्यक्ष लक्ष्मी सोरेन ने कहा कि हम इस धरती पर जन्म लेकर किस उद्देश्य से आये हैं, उसे पहले जानने की जरुरत है. हमें लोभ, लालच, विद्वेष, ईर्ष्या त्याग लोगों का सहयोग, आपस में प्रेम-भाईचारा व लोगों को मदद करने के लिये आगे बढ़ना चाहिए. दुश्मनों को भी माफ कर उनसे प्रेम करना सीखें. यीशु ने धरती पर युद्ध, मारकाट, विद्वेष से लोगों को मुक्ति दिलाने हेतु जन्म लिये. हमें सभी धर्म व समुदाय के साथ प्रेम व सहयोग करना सिखना होगा. बच्चों के इस गीत व नृत्य में भी प्रभु यीशु मसीह का शुभ संदेश छिपा है.

एसडीओ ने किया शिल्प प्रदर्शनी सह जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन

नवीन मेल संवाददाता

जमशेदपुर। जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज में तीन दिवसीय शिल्प प्रदर्शनी सह जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन सोमवार को धालभूम एसडीओ पियूष सिन्हा ने फीता काट कर किया. इस प्रदर्शनी के जरिये वोकल फॉर लोकल को बढ़ावा देने और हस्तशिल्प के प्रति विद्यार्थियों में रूचि बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है. इसमें झारखंड के अलग-अलग जगहों से लगभग 80 कलाकारों ने भाग लिया हैं. इस कार्यक्रम का आयोजन वस्त्र मंत्रालय के हस्तशिल्प सेवा केंद्र, रांची ने कॉलेज के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ एवं वाणिज्य विभाग के सौजन्य से किया. मौके पर मुख्य रूप से कॉलेज के प्राचार्य डॉ अमर सिंह व शिक्षकगण मौजूद थे. प्राचार्य ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों को झारखंड भर के शिल्प कलाओं से अवगत करना है. बांस, मिट्टी, लाह की बनी हुई चीजें, कपड़ों पर चित्रकला जो हाथों से शिल्पी बनाते है उसकी जानकारी दी जा रही है. इस कला में अपने राज्य और देश की संस्कृति व कला छुपी हुई है, जो धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है. इसे जनमानस तक पहुंचाना ही इस कार्यक्रम का लक्ष्य है. बच्चे इसे सीख कर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं और उन्हें इसका वितीय लाभ भी मिल सकता है. आज 80 बच्चों ने रजिस्ट्रेशन कराया है. परन्तु इसमें शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारी भी भाग ले रहे है. इसमें कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन लाइव लोगों के सामने कर रहे है.

दी जानकारी | प्लस टू हाई स्कूल में सड़क सुरक्षा पर वर्कशॉप, बोले प्राचार्य

लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करें

नवीन मेल संवाददाता

गिरिडीह। उमंग फाउंडेशन ने आज सोमवार को गावां प्लस टू हाई स्कूल में सड़क सुरक्षा पर वर्कशॉप का आयोजन किया गया. वर्कशॉप में छात्र-छात्राओं को सड़क सुरक्षा और यातायात के नियमों की विस्तार से जानकारी दी गयी. छात्रों को सड़क सुरक्षा, यातायात नियम, हेलमेट, सीट बेल्ट का उपयोग, इमरजेंसी सेवाएं, साइनेज, ट्रैफिक लाइट, हैंड साइन, इमरजेंसी सेवा सहित अन्य संबंधित तथ्यों के संबंध में बताया गया. विद्यालय के प्राधानाचार्य सुजीत कुमार राय ने कहा कि बाइक व चार पहिया वाहन चलाते समय सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करें. वाहन चलाते समय मोबाइल का उपयोग न करे. इससे अनहोनी हो सकती है. उमंग फाउंडेशन के सचिव पिंटू कुमार ने बताया कि प्रति वर्ष देश व राज्य में हजारों की संख्या में सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं, जिससे कई लोगों की जान गयी है. हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है कि सड़क दुर्घटना के नियंत्रण के लिए सड़क सुरक्षा से संबंधित नियमों का पालन करें. साथ ही अपने घर के सदस्यों, मित्रों व अन्य लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करें. यातायात नियमों का पालन सभी के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि सड़क दुर्घटना किसी के साथ भी हो सकती है. इसके कारण परिवार को बहुत बड़ी क्षति पहुंचती है. वाहन का परिचालन सही उम्र में करें और आवश्यकता पड़ने पर अपने परिवार जनों की सहायता प्राप्त करें, जिससे सड़क दुर्घटना में भी कमी लायी जा सके. मौके पर कई छात्र-छात्राएं व शिक्षक उपस्थित रहे.

जरूरी नहीं की अच्छी बातें करने वाला हर इंसान अच्छा हो, आज कल साजिश रचने वाले भी बहुत मीठा बोलते है। - अज्ञात

स्थायी समाधान हो...

झारखंड में जाम की समस्या आम बात हो गयी है। इससे मुक्ति के लिए राजधानी रांची में कसरत जारी है। इस समस्या से मुक्ति आपसी समन्वय से ही संभव है। शायद इस बात को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। यही कारण है कि यह समस्या और भयावह रूप लेती जा रही है। सुगम यातायात के लिए जाम से मुक्ति जरूरी है। इस बाबत समय-समय पर बैठकें आयोजित होती रही हैं।

> **सुगम यातायात के लिए जाम से मुक्ति जरूरी है। इस बाबत समय-समय पर बैठकें आयोजित होती रही हैं। लेकिन स्थायी हल की दिशा में परिणाम शून्य ही सामने आये हैं। इसकी बड़ी वजह सड़कों पर खोमचे और ठेले वालों का कब्जा है। जिस कारण लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कहीं -कहीं पर 40 फीट की सड़कें सिमट कर 20 फीट की हो गयी है। जिस कारण इन जगहों पर गाड़ियां सरकती हैं। इसके बावजूद नगर निगम प्रशासन कभी-कभार सामने आकर खानापूर्ति करने में कोई कसर नहीं छोड़ता है।**

लेकिन स्थायी हल की दिशा में परिणाम शून्य ही सामने आये हैं। इसकी बड़ी वजह सड़कों पर खोमचे और ठेले वालों का कब्जा है। जिस कारण लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कहीं -कहीं पर 40 फीट की सड़कें सिमट कर 20 फीट की हो गयी है। जिस कारण इन जगहों पर गाड़ियां सरकती हैं। इसके बावजूद नगर निगम प्रशासन कभी-कभार सामने आकर खानापूर्ति करने में कोई कसर नहीं छोड़ता है। लेकिन आज तक कभी भी स्थायी निराकरण की दिशा में कोई काम होते नहीं दिखते हैं। जिस प्रकार आबादी बढ़ रही है,यह समस्या विकराल रूप के साथ सामने खड़ी होती जा रही है। इस बाबत दीर्घकालीन योजना की जरूरत है। लेकिन ऐसा नहीं होना यह दर्शाता है कि सरकार इसे गंभीरता से नहीं ले रही है। यह काफी दुखद पहलू है। राज्य के पलामू जिले की बात करें तो शहर की हृदयस्थली छहमुहान जाम से हलकान है। बाजार जाने वाली सड़क पर ठेले वालों का कब्जा है। दूसरी तरफ सड़क की दोनों तरफ बाइक और चारपहिया वाहन लग जाने की वजह से पैदल चलना मुश्किल हो जाता है। इसे जब भी हटाने की कोशिश की जाती है,राजनीतिक दल सड़कों पर आकर विरोध करना शुरू कर देते हैं। इसकी खास वजह यह है कि ठेले और खोमचे लगाने वाले एक विशेष समुदाय से आते हैं। यह स्थिति कमोवेश हर जगहों पर देखने को मिलती है। यही कारण है कि जाम की समस्या का स्थायी समाधान नहीं ढूंढा जा रहा है। यह एक प्रकार से गलत परम्परा है। आज से पांच दशक पूर्व की बनी सड़कें यथावत उसी स्थिति में हैं। जबकि आबादी बढ़ती जा रही है। ओवरब्रिज का निमार्ण नहीं हुआ। बेतहाशा गाड़ियों की संख्या की वजह से सड़कों पर गाड़ियों का लगाया जाना आम बात है। लोग गाड़ियां बड़े शौक से लेते हैं,लेकिन लगाने की जगह नहीं होती है। इसके लिए कोई नियम कानून नहीं है। जब चाहा,जहां चाहा गाड़ियां लगा दी। इससे किसी को परेशानी भी होती है। इस बात से ऐसे लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता है। इस स्थिति से निपटने के लिए प्रशासन को सख्ती से निपटने की जरूरत है। अतिक्रमण की वजह से जाम की समस्या बढ़ती जा रही है। इस दिशा में ईमानदार पहल की जरूरत है। यह सिर्फ सरकार का दायित्व नहीं है। सबको इस दिशा में आगे आने की जरूरत है।

परमात्मा नहीं, पर परमात्मा से कम नहीं

इन दिनों

ललित गर्ग

नरसी मेहता न केवल गुजराती भक्ति साहित्य बल्कि समूचे राष्ट्र के भक्ति साहित्य की श्रेष्ठतम विभूति थे।

उनके कृतित्व और व्यक्तित्व की महत्ता के अनुरूप साहित्य के इतिहास-ग्रंथों में 'नरसिंह-मीरा-युग' नाम से एक स्वतंत्र काव्यकाल का निर्धारण किया गया है जिसकी मुख्य विशेषता भावप्रवण कृष्णभक्ति से अनुप्रेरित पदों का निर्माण है। पद-प्रणेता के रूप में गुजराती साहित्य में नरसी का लगभग वही स्थान है जो हिंदी में सूरदास का। 'वैष्णव जन तो तैणे कहिए जे पीड पराई जाणे रे' पंक्ति से आरंभ होनेवाला सुविख्यात पद नरसी मेहता का ही है। उन्होंने इस भजन में एक बात अच्छी प्रकार से कह दी है। 'पर दुःखे उपकार करे' कह कर भजन में रुक गए होते, तो वैष्णव जनों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। 'पर दुःखे उपकार करे तोए मन अभिमान न आणे रे' कह कर हम सब में छिपे सूक्ष्म अहं को विगलित करने की प्रेरणा दी गई है। उपकार का आनन्द अनुभव करना है तो आपने जो किया उसे जितनी जल्दी हो भूल जाएं और आपके लिए किसी ने कुछ किया, उसे कभी न भूलें। इस तरह जीवन की सबसे बड़ी सीख देने वाले, 15वीं शताब्दी के इस शीर्ष संत कवि एवं विश्वप्रसिद्ध भजन-रचयिता ने भक्ति की ऐसी गंगा प्रवहमान की कि आज भी लोग उनके भजनों से अपने जीवन को भक्तिमय बनाये हुए है।

यह भजन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का प्रिय भजन है। यह भजन ही नहीं, भक्त नरसी मेहता के भावों और विचारों का भी गांधी पर गहरा प्रभाव था। प्रायः ऐसा माना जाता है कि अस्पृश्यता से पीड़ित लोगों के लिए हरिजन शब्द पहली बार गांधीजी ने प्रयोग किया था, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस शब्द का पहली बार उपयोग नरसी मेहता ने ही किया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह भजन जन-जन की जुबान पर था। न केवल यह भजन बल्कि उनकी हर भक्ति रचना इतनी सशक्त, सुरुचिपूर्ण है कि उससे न केवल आध्यात्मिक बल्कि मानसिक तृप्ति मिलती है। उनके भजनों में गौता लगाने पर शक्ति एवं गति पैदा होती है, सच्चाइयों का प्रकाश उपलब्ध होता है, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता एवं साहस देता है। वे ईश्वर से सम्पर्क के सूत्रधार थे। स्वयं परमात्मा नहीं थे, पर परमात्मा से कम भी नहीं थे। उन्होंने जन-जन को सांसारिक आकर्षण रूपी राग को मिटाकर ईश्वर के प्रति अनुरागी बनाया।

> **राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का प्रिय भजन है। यह भजन ही नहीं, भक्त नरसी मेहता के भावों और विचारों का भी गांधी पर गहरा प्रभाव था। प्रायः ऐसा माना जाता है कि अस्पृश्यता से पीड़ित लोगों के लिए हरिजन शब्द पहली बार गांधीजी ने प्रयोग किया था, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस शब्द का पहली बार उपयोग नरसी मेहता ने ही किया था। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान यह भजन जन-जन की जुबान पर था। न केवल यह भजन बल्कि उनकी हर भक्ति रचना इतनी सशक्त, सुरूचिपूर्ण है कि उससे न केवल आध्यात्मिक बल्कि मानसिक तृप्ति मिलती है। उनके भजनों में गौता लगाने पर शक्ति एवं गति पैदा होती है, सच्चाइयों का प्रकाश उपलब्ध होता है, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता एवं साहस देता है। वे ईश्वर से सम्पर्क के सूत्रधार थे। स्वयं परमात्मा नहीं थे, पर परमात्मा से कम भी नहीं थे। उन्होंने जन-जन को सांसारिक आकर्षण रूपी राग को मिटाकर ईश्वर के प्रति अनुरागी बनाया। श्रीकृष्ण भक्ति में सराबोर भक्तों की लम्बी श्रृंखला में नरसी मेहता निश्छल और चरम भक्ति के प्रतीक हैं। उनके भक्ति रस से आप्लावित भजन आज भी जनमानस को ढांढस बंधाते हैं, धर्म का पाठ पढ़ाते हैं और जीवन को पवित्र बनाने की प्रेरणा देते हैं। उनके भजनों में जीवंत सत्यों का दर्शन होता है। जिस प्रकार किसी फूल की महक को शब्दों में बयां करना कठिन है, उसी प्रकार गुजराती के इस शिखर संतकवि और श्रीकृष्ण-भक्त का वर्णन करना भी मुश्किल है।**

श्रीकृष्ण भक्ति में सराबोर भक्तों की लम्बी श्रृंखला में नरसी मेहता निश्छल और चरम भक्ति के प्रतीक हैं। उनके भक्ति रस से आप्लावित भजन आज भी जनमानस को ढांढस बंधाते हैं, धर्म का पाठ पढ़ाते हैं और जीवन को पवित्र बनाने की प्रेरणा देते हैं। उनके भजनों में जीवंत सत्यों का दर्शन होता है। जिस प्रकार किसी फूल की महक को शब्दों में बयां करना कठिन है, उसी प्रकार गुजराती के इस शिखर संतकवि और श्रीकृष्ण-भक्त का वर्णन करना भी मुश्किल है। उनकी भक्ति इतनी सशक्त, सरल एवं पवित्र थी कि श्रीकृष्ण को अनेक बार साक्षात प्रकट होकर अपने इस प्रिय भक्त की सहायता करनी पड़ी। ऐसे महान संतकवि नरसी मेहता का जन्म 15वीं शताब्दी में सौराष्ट्र के एक नागर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बालक नरसी आरंभ में गूंगे थे। आठ वर्ष के नरसी को उनकी दादी एक सिद्ध महात्मा के पास लेकर गई। महात्मा ने बालक को देखते ही भविष्यवाणी की कि भविष्य में यह बालक बहुत बड़ा भक्त होगा। जब दादी ने बालक के गूंगे होने कि बात बताई तो महात्मा ने बालक के कान में कहा कि बच्चा! कहो 'राधा-कृष्ण' और देखते ही देखते नरसी 'राधा-कृष्ण' का उच्चारण करने लगा। बालक नरसी बचपन से ही साधु-संतों की सेवा किया करते थे और जहां कहीं भजन-कीर्तन होता था, वहीं जा पहुंचते थे। रात को भजन-कीर्तन में जाते तो उन्हें समय का ख्याल न रहता।

आप की बात

विभिन्न चर्च में क्रिसमस गैदरिंग

पलामू जिला मुख्यालय सिटी मेदिनीनगर के शांति की महारानी कैथोलिक चर्च, यूनियन चर्च, सीएनआई चर्च सहित तुंबागड़ा के चर्च में रविवार को क्रिसमस गैदरिंग का आयोजन किया गया। मिशा पूजा के बाद क्रिसमस गैदरिंग का आयोजन किया गया। इसमें शहर के अलावा आसपास के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले ईसाई विश्वासियों की दस यूनिट ने भाग लेकर प्रभु येशु मसीह के जन्मोत्सव की खुशियां मनाई। झांकी, नृत्य, क्रिसमस गीत आदि के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया। प्रभु यीशु की स्वागत की तैयारी में जुटा है ईसाई समुदाय : कैथोलिक चर्च में रविवार को मिशा पूजा के बाद चियांकी की यूनिट ने प्रभु यीशु के जन्मदिन की झांकी प्रस्तुत किया। संडे स्कूल के बच्चों ने नृत्य, बारालोटा, कचरवा, ज्योति हॉस्टल आवादगंज, बिरसानगर यूनिट आदि के विश्वासियों ने क्रिसमस गीत पेश किया। फादर मोरिस कुजूर ने बताया कि क्रिसमस मिलन को लेकर आध्यात्मिक रूप से तैयारी चल रहा है। कार्यक्रम में आए लोग सारी व्यस्तता भूल कर आपसी भाईचारा, प्रेम एवं सौहार्द के साथ प्रभु यीशु की स्वागत की तैयारी में जुटे हैं। प्रभु यीशु पूरी दुनिया को आपसे भाईचारा प्रेम एवं सौहार्द के साथ रहने का संदेश देते हैं। इधर यूनियन चर्च में भी रविवार को क्रिसमस गैदरिंग सह मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया। **- सोरेन भेंगरा**

राजनीति

प्रधानमंत्री मोदी का सुशासन और साकार होता आमजन का सपना

डॉ. सौरभ मालवीय

प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी के शासनकाल के दस वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। उन्होंने 26 मई, 2014 को प्रथम बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के पश्चात घोषणा की थी कि उनकी सरकार जनहित के लिए तथा अन्तयोदय के लिए कार्य करेगी। उन्होंने अपनी घोषणा में जो शब्द कहे, उस पर वह शत-प्रतिशत खरे सिद्ध हुए। उनके अब तक के संपूर्ण कार्यकाल पर दृष्टि डालें तो यह सेवा एवं सुशासन पर ही केंद्रित रहा है। प्रधानमंत्री का कहना है कि सुशासन राष्ट्र की प्रगति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। हमारा मंत्र, उद्देश्य व सिद्धांत नागरिकों को प्राथमिकता देने का है। मेरा सपना सरकार को लोगों के समीप लाने का है, ताकि वे प्रशासनिक प्रक्रिया के सक्रिय भागीदार बन सकें। सरकारी कामकाज की प्रक्रिया को आसान कर आसानी से सुशासन सुनिश्चित किया जा सकता है। उनका यह भी कहना है कि भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और यहां के नागरिक शासन का हिस्सा बनने के लिए अत्यधिक उत्साहित हैं। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, निर्णय लेने की प्रक्रिया में नागरिकों की भागीदारी होना बहुत महत्वपूर्ण घटक है।

> **प्रधानमंत्री का कहना है कि सुशासन राष्ट्र की प्रगति के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। हमारा मंत्र, उद्देश्य व सिद्धांत नागरिकों को प्राथमिकता देने का है। मेरा सपना सरकार को लोगों के समीप लाने का है।**

उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी विभिन्न पहलों और सुधारों के बारे में लिखते रहते हैं। उनके शब्दों में- '130 करोड़ भारतीयों ने फैसला किया है कि वे भारत को आत्मानिर्भर बनाएंगे। आत्मनिर्भरता पर हमारा जोर, वैश्विक समृद्धि में योगदान करने की दृष्टि से प्रेरित है। हमारी सरकार एक ऐसी सरकार है, जो प्रत्येक भारतीय का ध्यान रखती है और उसके लिए चिंतित रहती है। हम लोक-केंद्रित और मानवीय दृष्टिकोण से प्रेरित हैं। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र से प्रेरित होकर हमारी सरकार ने लोक-समर्थक शासन को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए हैं, जो गरीबों, युवाओं, किसानों, महिलाओं और वंचित समुदाय की मदद करते हैं।' वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी अन्तयोदय के मूल तत्वों के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

फेसबुक वॉल से

X - से

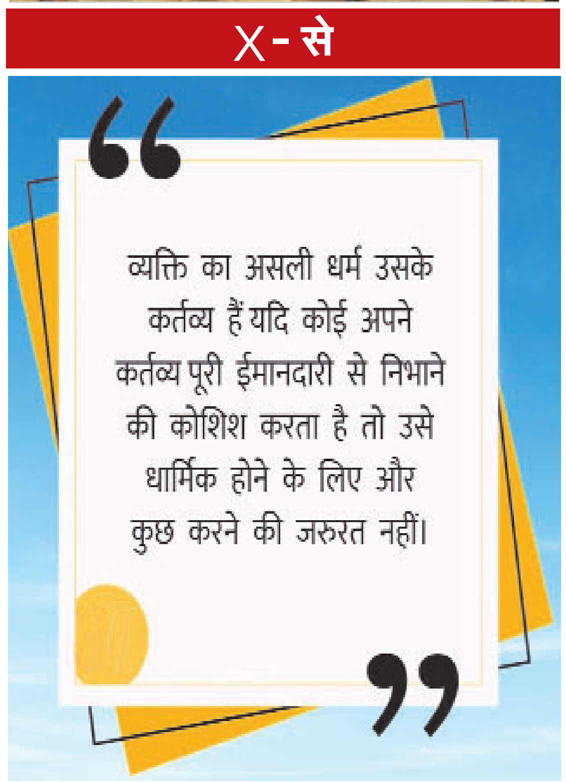

अ

क्यों काशी में आते अब गोवा से भी ज्यादा पर्यटक

आर.के. सिन्हा

अगर कोई यह मानता है कि सबसे अधिक टुरिस्ट समुद्र के किनारे के तटों पर या फिर आकाश को छूते पहाड़ों में सैर करने को आते हैं तो उन्हें एक बार फिर सोचना होगा। मतलब यह है कि अब न तो सबसे अधिक टूरिस्ट गोवा आ रहे हैं या फिर शिमला, नैनीताल या कश्मीर या हिमाचल किसी अन्य हिल स्टेशन पर। आज के दिन सबसे ज्यादा टूरिस्ट को अपनी तरफ आकर्षित करने लगा है वाराणसी। आईसीआईसीआई के एक सर्वे से पता चला है कि पिछले साल-2022 में वाराणसी में 7.02 करोड़ टुरिस्ट पहुंचे। गोवा के हिस्से में लगभग मात्र 85 लाख टूरिस्ट । यूं तो वाराणसी में लगातार खूब टूरिस्ट पहले से ही आते थे पर 2015 के बाद तो स्थिति वाराणसी के पक्ष में पूरी तरह से पलट गई। इस लिहाज से गेम चेंजर साबित हुआ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे (अब स्मृति शेष) का धर्म नगरी वाराणसी के दशाश्वमेध घाट पर गंगा आरती में 2015 में भाग लेना। गंगा सिर्फ एक नदी नहीं, हमारी भारतीय सनातन संस्कृति की वाहक भी है। इस लिहाज से जापान के प्रधानमंत्री के स्वागत में काशी में गंगा आरती का आयोजन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मौलिक और व्यापक सोच का परिचय देने वाला था। गंगा आरती महज एक पूजाविधि नहीं है। मोदी-आबे ने गंगा आरती मे भाग लेकर दुनिया में भारत की खोई हुई या यूं कहें कि तिरस्कृत का दिये गये सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ने अपनी जगह बनाई थी। बीते 60 सालों की राजनैतिक सत्ता ने इस छवि को नजरअंदाज कर एक उपभोगी देश की छवि के रूप में भारत को दुनिया के सामने पेश किया था क संस्कृति के नाम पर ताज के मकबरे को ही खूब भुनाने की कोशिश की गयी । लेकिन, गंगा की ''ब्रांडिंग'' तो सही माने में भारत के लिए आत्मगौरव का क्षण था। टूरिज्म क्षेत्र के जानकार कहते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी और जापान के प्रधानमंत्री आबे के गंगा आरती में भाग लेने के बाद सारे देश में वाराणसी को लेकर एक नई तरह की सकारात्मक सोच विकसित होने लगी।

> **आज के दिन सबसे ज्यादा टूरिस्ट को अपनी तरफ आकर्षित करने लगा है वाराणसी। आईसीआईसीआई के एक सर्वे से पता चला है कि पिछले साल-2022 में वाराणसी में 7.02 करोड़ टुरिस्ट पहुंचे।**

बोधि वृक्ष

ऋषि मार्कण्डेय की कथा

महान संत गरीबदास जी कहते हैं: गरीब, एति उमर बुलंद मरेगा अंत **'रे सतगुरु लगे ना कान ना भेंटे संत रे'** उपरोक्त वाणी सिद्ध करती है कि क्षर पुरुष और अक्षर पुरुष के क्षेत्र में सभी प्राणियों की आयु कितनी ही लंबी क्यों न हो लेकिन एक दिन अंत अवश्य होता है। उस लोक के भगवान सहित प्रत्येक प्राणी की मृत्यु निश्चित रूप से होगी।

आदरणीय संत गरीबदास जी कहते हैं:
असंख जन्म तोहे मरतां होगे, जीवित क्यों न मरे रे।
द्वादश मध्य महल मठ बोरे, बहुर न देह धरै रे।।

संत गरीबदास जी समझाते हैं कि आत्माओं, तुम सब काल के लोक में लाखों युगों से अत्याचार सह रहे हो। तुम जीवित क्यों नहीं मर जाते। समस्त बुराइयों का परित्याग कर उस पूर्ण परमात्मा-सतपुरुष की शास्त्र आधारित पूजा करो, सतलोक (सचखंड) को प्राप्त करो और शाश्वत शांति का आनंद लो।

सतलोक वह अमर धाम है जहां न तो मृत्यु है और ना ही बुढ़ापा। युगों से आत्माओं को ज्ञान नही था क्योंकि उन्हें एक तत्वदर्शी संत नहीं मिला था जो उन्हें सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते और सच्ची पूजा की विधि बताता जिससे जन्म और पुनर्जन्म की बीमारी हमेशा के लिए खत्म हो जाती है।

तत्वदर्शी संत सतनाम और सारनाम दीक्षा में देते हैं जिससे आत्माएं अमर परमात्मा अर्थात परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त करती हैं जिसका अर्थ है उनका मोक्ष प्राप्त हो जाता है। सतलोक के सुखों की तुलना में स्वर्ग का सिंहासन कौवे की बीट की तरह बेकार है।

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय 4 श्लोक 25-29 में कहा गया है कि साधक जो भी पूजा करते हैं, उसे श्रेष्ठ और बुराइयों का नाश करने वाला मानकर करते हैं।

(क्रमशः)

टेक वर्ल्ड

इंस्टाग्राम का नया एआई एडिटिंग टूल ...

मेटा के स्वामित्व वाले इंस्टाग्राम ने 'बैकड्रॉप' नाम से एक नया एआई मीडिया एडिटिंग टूल लॉन्च किया है, जो आपको स्टोरीज के लिए प्रांप्ट के जरिए अपनी पसंद की इमेज बैकग्राउंड को एडिट करने देगा। कंपनी ने सबसे पहले इस फीचर को अमेरिका के यूजर्स के लिए लॉन्च किया है। जेनरेटिव एआई अहमद अल-दहले के लिए मेटा की लीड थ्रेड्स में पोस्ट किया गया, "हमारा एआई मीडिया एडिटिंग टूल बैकड्रॉप अमेरिका में इंस्टाग्राम पर उपलब्ध है ! बैकड्रॉप के साथ, आप अपनी स्टोरी के लिए एक पूरी तरह से नई इमेज बनाने के लिए बस कुछ टैप और 'चेस बाय डायनासोर' या 'सराउंडिंग बाय पप्पी' जैसे प्रांप्ट के साथ इमेज बैकग्राउंड की फिर से कल्पना कर सकते हैं।" शुरूआत करने के लिए आपको नई स्टोरी के टॉप पर 'बैकड्रॉप' बटन पर टैप करना होगा। अल-दहले ने कहा, "एक बार पोस्ट करने के बाद, जब आप बनाई गई इमेज शेयर करेंगे तो 'ट्राई इट' स्टिकर दिखाई देगा, जिससे आपके दोस्तों के लिए पहली बार नए एआई एडिटिंग का इस्तेमाल करना और भी आसान हो जाएगा।"

इस बीच, इंस्टाग्राम अपने क्लोज फ्रेंड्स फीचर को स्टोरीज और नोट्स से आगे फीड पोस्ट और रील्स तक बढ़ा रहा है। अब यूजर्स रील्स और फीड पोस्ट को सभी फॉलोअर्स की बजाय एक छोटे, ज्यादा विश्वसनीय ग्रुप के साथ शेयर करने में सक्षम होंगे। कंपनी ने कहा कि लोग क्लोज फ्रेंड्स का उपयोग उन लोगों से जुड़ने के लिए प्रेशर-फ्री स्पेस के रूप में करते हैं जो सबसे महत्वपूर्ण हैं। डेवलपर्स को उम्मीद है कि रील्स और फीड पोस्ट में क्लोज फ्रेंड्स ऑप्शन का विस्तार करने से यूजर्स के पास इंस्टाग्राम पर आपके सबसे प्रामाणिक होने के और अधिक तरीके होंगे। **- गौतम**

स्वामी, पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. की ओर से 502, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित। रजिस्ट्रेशन नं: BIHHIN/1999/155, प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, कार्यकारी संपादक : सुनील सिंह 'बादल'*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नंबर : 222539, फैक्स नंबर : 06562-241176/ 231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल, मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान हरमू रोड, रांची-834001, फोन नंबर : 0651-2283384, फैक्स नंबर : 0651-2283386, ई-मेल : news.rnmail@gmail.com, article.rnmail@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

एक नजर

बस्तर में बढ़ रही नक्सली वारदातों पर विपक्ष का सरकार पर निशाना

रायपुर। बीते एक हफ्ते में नक्सली वारदातों में आई तेजी को लेकर विपक्ष सरकार पर आक्रामक अंदाज में हमला कर रही है। विपक्ष की ओर से खुद चरणदास महंत ने सरकार ने निशाना साधते हुए कहा कि बीजेपी की सरकार आते ही माओवादी घटनाओं में तेजी आ गई है। विपक्ष के तीखे हमलों पर सरकार ने भी सधी हुई प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सरकार बदली है। माओवादी पिछली सरकार में सेफ जोन में थे, अब बीजेपी की सरकार आई गई है किसी भी कीमत पर उनको बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। डिप्टी सीएम बने विजय शर्मा ने साफ कर दिया कि किसी भी कीमत पर नक्सलवाद को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। शर्मा ने कहा कि ये बीजेपी की सरकार है डबल इंजन के साथ चल रही है हम सिर्फ विकास चाहते हैं। लाल आतंक को खत्म करना और गांवों तक विकास पहुंचाना हमारा काम है।

शिवराज को मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी, पार्टी नेतृत्व में बुलाया दिल्ली

भोपाल। मध्य प्रदेश में नई सरकार गठन के बाद मंत्रिमंडल विस्तार की तैयारियां चल रही हैं। डॉ. मोहन यादव को मुख्यमंत्री बनाने के बाद भाजपा नेतृत्व पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को बड़ी जिम्मेदारी दे सकता है। दरअसल, उन्हें पार्टी नेतृत्व ने दिल्ली बुलाया है। शिवराज सोमवार शाम को दिल्ली जाएंगे। वे वहां पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात करेंगे। चुनाव परिणाम के बाद शिवराज का यह पहला दिल्ली दौरा होगा। पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने सोमवार को विधानसभा में मीडिया से बातचीत करते हुए आने वाली भूमिका को लेकर कहा कि भाजपा एक मिशन है और यह पार्टी तय करती है कि आप कहां काम करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य लोकसभा की 29 सीट जीतना है। मैंने 17 साल से ज्यादा प्रदेश की सेवा की है, लेकिन स्वाभाविक रूप से एक राज्य के नागरिक के नाते की है। डॉ. मोहन यादव और ज्यादा बेहतर विकास के आयाम स्थापित करें।

इलाहाबाद हाईकोर्ट में श्री कृष्ण जन्म स्थान और शाही ईदगाह मस्जिद विवाद की सुनवाई टली

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने श्री कृष्ण जन्म स्थान और शाही ईदगाह मस्जिद विवाद मामले में कोर्ट कमिश्नर नियक्त किये जाने के मामले में फिलहाल सुनवाई टाल दी है। कोर्ट में सुन्नी वक्फ बोर्ड की ओर से अर्जी दाखिल कर कहा गया कि उसने कोर्ट कमिश्नर की नियुक्ति के आदेश के खिलाफ विशेष याचिका दाखिल की है। याचिका पर नौ जनवरी को सुनवाई होनी है। इस पर हिन्दू पक्ष की ओर से कहा गया कि सुप्रीम कोर्ट ने कोर्ट कमिश्नर नियुक्त किये जाने पर रोक नहीं लगाई है। इस पर कोर्ट ने कहा कि वह इस मामले में अपना आदेश देगी। श्रीकृष्ण विराजमान के वाद मित्र मूर्ति के साथ हाईकोर्ट पहुंचे थे। भगवान के नाम से हाईकोर्ट में पास भी तैयार कराया गया है।

अमृत योजना: 157 करोड़ से महानगर के 69 हजार घरों तक पहुंचाया जाएगा जल

झांसी। महानगर में अमृत मिशन योजना के प्रथम चरण का काम लगभग पूरा हो गया है। अब जल निगम अमृत मिशन के दूसरे चरण की तैयारी में जुट गया है। इसमें 157 करोड़ की लागत से उन इलाकों का सर्वे कराया गया है। जो नगर निगम के हाउसटैक्स के दायरे में वर्ष 2021 के बाद आए हैं। इनमें नंदनपुरा, गुमनावारा प्रथम व द्वितीय एवं मेडिकल कॉलेज का क्षेत्र है। इसकी विभाग द्वारा निविदा भी निकाली गई है। 15 जनवरी के बाद काम शुरू कराया जाएगा। जिसमें कुल 270 किलोमीटर पाइपलाइन डाली जाएगी। साथ ही चार ओवरहैड टैंक व चार भूतल जलाशय बनाए जाएंगे। काम पूरा होने के बाद इन क्षेत्रों के 69 हजार घरों को जून 2025 में कनेक्शन दिए जाएंगे। जिससे इन घरों तक शुद्ध नल से जल पहुंचेगा। उधर, अधिशासी अभियंता जलनिगम मुकेश पाल सिंह के मुताबिक निविदा निकाली गई है, जल्द काम शुरू कराया जाएगा।

मोहन सरकार में सिंधिया का नहीं होगा 'शिव-राज' सा दबदबा

सिंधिया समर्थकों को नहीं मिल सकती है ज्यादा जगह

सिर्फ तीन विधायक ही मंत्री पद की दौड़ में

जबकि पूर्व मंत्री राजवर्धन सिंह दत्ती गांव, महेंद्र सिंह सिसोदिया और सुरेश धाकड़ को हार का सामना करना पड़ा। सिंधिया समर्थक जीते हुए सभी पूर्व मंत्रियों का इस बार मंत्री बनना मुश्किल नजर आ रहा है। इस बार सिंधिया समर्थक 3 विधायक भी मंत्री पद की दौड़ में शामिल हैं। इनमें देवास जिले से मनोज चौधरी, नारायण सिंह पटेल और ऐदल सिंह कंसाना भी शामिल हैं। यदि समीकरण ऊपर नीचे हुए तो उक्त तीन विधायकों में से भी किसी को मंत्री बनाया जा सकता है।

एजेंसी। भोपाल

मध्य प्रदेश में मंत्रिमंडल विस्तार की अटकलें तेज हो गई हैं। इन अटकलों के बीच केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थक विधायकों को बड़ा झटका भी लग सकता है। डॉ मोहन यादव सरकार में सिंधिया समर्थक कम विधायक ही इस बार मंत्रिमंडल में शामिल हो सकेंगे। इसके पीछे सबसे बड़ी वजह लोकसभा चुनाव को लेकर बनाई गई रणनीति मानी जा रही है। साल 2020 में कमलनाथ सरकार को गिराकर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए ज्योतिरादित्य सिंधिया के समर्थक 8 पूर्व मंत्री इस बार विधानसभा चुनाव में अपनी जीत दर्ज करवा पाए हैं, जबकि 3 मंत्रियों को हार का सामना करना पड़ा है। शिवराज सरकार में सिंधिया समर्थक 10 मंत्रियों का मंत्रिमंडल में दबदबा था। इस बार यह दबदबा कम होने वाला है। लोकसभा चुनाव की रणनीति के तहत इस बार पार्टी सभी लोकसभा सीटों से एक-एक मंत्री को डॉक्टर मोहन यादव मंत्रिमंडल में जगह दे सकती है। इस प्रकार लगभग 29 से 30 मंत्री बनाए जा सकते हैं।

सिंधिया समर्थक इन मंत्रियों को मिली जीत : गौरतलब है कि डॉक्टर मोहन यादव के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के साथ ही राजेंद्र शुक्ला और जगदीश देवड़ा ने उप मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली है। इस प्रकार अब ऐसा माना जा रहा है कि 29 से 30 मंत्री शपथ ले सकते हैं। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के साथ 22 विधायक भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुए थे। इनमें तत्कालीन कमलनाथ सरकार के कई मंत्री भी शामिल थे।

झुग्गियों में आग से महिला, बच्चा और बहन जिंदा जली, पति की हालत गंभीर

एजेंसी। शिमला

पुलिस थाना टाहलीवाल के औद्योगिक क्षेत्र बाथू में करीब पांच झुग्गियों में भड़की आग में मां सहित उसके नौ माह का बेटे और मां की पांच वर्षीय बहन की जिंदा जलने से मौत हो गई। घटना में गंभीर रूप से झुलसे महिला के पति को क्षेत्रीय अस्पताल ऊना से पीजीआई चंडीगढ़ रेफर कर दिया है। मृतकों की पहचान सुमित्रा देवी (25) पत्नी विजय शंकर, उसका बेटा अंकित निवासी गांव व डाकघर विसौली हारसा जिला बदायूं उत्तर प्रदेश और सुमित्रा की बहन पांच वर्षीय नैना पुत्री लक्ष्मन माती गांव डाकघर मानोचक विटोली जिला लखीसराय बिहार के रूप में हुई है। सुमित्रा का पति विजय शंकर गंभीर रूप से घायल हो गया है। प्रारंभिक जांच में झुग्गी में आग लगने का कारण खाना बनाने के लिए झुग्गी के अंदर बनाए गए चूल्हे में बची चिंगारी का भड़कना बताया जा रहा है। पुलिस ने तीनों शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए क्षेत्रीय अस्पताल ऊना भेज दिए हैं। मामले में आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस इस बात का भी पता लगा रही है कि उक्त परिवार किसकी जमीन पर गुजर-बसर कर रहा था। डीएसपी मोहन रावत ने बताया कि बाथू बाथड़ी में एक फैक्ट्री में मजदूरी करने वाले विजय का परिवार रोज की तरह रात्रि का खाना खाकर सो गया।

नैनी सेंट्रल जेल में बंद नफीस बिरयानी की दिल का दौरा पड़ने से मौत,दिल का दौरा बना कारण

प्रयागराज। उमेश पाल हत्याकांड के बाद से फरार नफीस पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया था। 22 नवंबर को नवाबगंज के पास पुलिस मुठभेड़ में उसके पैर में गोली लगने के बाद उसे अस्पताल लाया गया था। इसके बाद हालत में सुधार होने पर नौ दिसंबर को उसे नैनी सेंट्रल जेल में दाखिल किया गया था। माफिया अशरफ के करीबी नफीस बिरयानी की क्रेटा कार का उमेश पाल हत्याकांड में इस्तेमाल हुआ था। इसके बाद से ही वह फरार चल रहा था। नफीस ने बिरयानी कारोबार को अशरफ की काली कमाई लगाकर आगे बढ़ाया था। कारोबार की आड़ में वह माफिया की काली कमाई को सफेद करने का काम करता था। 22 नवंबर को नवाबगंज में पुलिस मुठभेड़ में उसे पकड़ा गया था और वह नैनी सेंट्रल जेल में निरुद्ध था। **नफीस का ब्लड प्रेशर हो गया था लो, किडनी में इंफेक्शन :** दिल का दौरा पड़ने के बाद स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय के हृदय रोग विभाग के आईसीयू में भर्ती कराए गए नफीस का ब्लड प्रेशर काफी कम मिला था। साथ ही पल्स रेट भी गिरा हुआ था। किडनी में इन्फेक्शन फैलने से उसे दिक्कतें बढ़ गई थीं।

शीतलहर का प्रकोप, पूरे प्रदेश का न्यूनतम पारा 8 डिग्री से कम

शिमला। हिमाचल प्रदेश में कड़ाके की ठंड के बीच शीतलहर का प्रकोप शुरू हो गया है। पूरे प्रदेश का न्यूनतम तापमान 8 डिग्री से भी नीचे आ रहा है। नाहन शहर का न्यूनतम पारा सबसे ज्यादा 7.3 डिग्री सेल्सियस रहा। अन्य शहरों का पारा इससे कम चल रहा है। रोजाना ठंड बढ़ती जा रही है। उधर, लाहौल के कुकुमसेरी का न्यूनतम तापमान माइनस 7.6 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया है। ऊपरी इलाकों का पारा शून्य से नीचे चल रहा है। मैदानी इलाकों में भी धुंध और कोहरे के चलते ठंड बढ़ गई है। राजधानी शिमला में दिनभर ठंडी हवाएं चल रही हैं। शाम को बाजारों में सन्नाटा छा रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के अनुसार प्रदेश के मध्य और उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में 21 दिसंबर तक मौसम साफ रहेगा। 22 और 23 को एक बार फिर मौसम खराब होगा और बारिश-बर्फबारी के आसार हैं। मैदानों में 23 दिसंबर तक मौसम साफ रहेगा।

न्यूनतम तापमान (डिग्री सेल्सियस में), कुकुमसेरी-7.6, केलांग-5.0, कल्पा-3.2, रिकांगपिओ-0.3, नारकंडा-0.1, कुफरी-1.0, सुंदरनगर-1.3, मनाली-1.7, शिमला-.0 डिग्री पर है।

नदी में एक ही परिवार के पांच सदस्यों की डूबने से मौत

उत्तर कन्नड़ (कर्नाटक)। कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले में सिरसी के पास शाल्मला नदी में रविवार को एक ही परिवार के पांच सदस्य डूब गए। परिवार के पांच सदस्यों में से तीन सदस्यों के शव पुलिस अधिकारियों ने स्थानीय मछुआरों की मदद से बरामद कर लिए हैं। पुलिस ने कहा कि अब तक बरामद किए गए शवों में दो पुरुष सदस्य और एक महिला शामिल है। परिवार के सदस्यों की पहचान मोहम्मद सलीम (44), नादिया (20), मिस्बाह (21), नबील (22) और उमर (16) के रूप में की गई है। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यह दुर्घटना तब हुई जब परिवार का एक बच्चा फिसलकर नदी में गिर गया और फिर परिवार के अन्य सदस्य बचाव के लिए गए लेकिन वे भी डूब गए।

मध्य प्रदेश में 38 से ज्यादा योजनाओं पर रोक

सरकारी खजाना खाली, लोन की लिमिट खत्म

एजेंसी। भोपाल

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव 2023 जीतने के लिए शिवराज सरकार ने सरकारी खजाना खोल दिया था। अब खजाना खाली हो गया है। मध्य प्रदेश पर 3.31 लाख करोड़ का लोन है और अब केवल 15000 करोड़ की लिमिट बची है। नतीजा सरकार ने मध्य प्रदेश के 38 विभागों द्वारा संचालित योजनाओं पर रोक लगा दिए। मध्य प्रदेश शासन के वित्त विभाग ने 38 विभागों की योजनाओं पर रोक लगाते हुए, निर्देशित किया है कि सभी विभाग राजस्व संग्रहण के काम को प्राथमिकता पर रखें। जिन योजनाओं पर रोक लगाई गई है, उनमें नगरीय प्रशासन विभाग की महाकाल परिसर विकास योजना, मेट्रो ट्रेन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग द्वारा संचालित तीर्थ दर्शन योजना भी शामिल है। इसके अलावा अपंजीकृत निर्माण

मजदूरों को अंत्येष्टि एवं अनुग्रह राशि देने की योजना भी समाप्त कर दी गई है।

मध्य प्रदेश में इन योजनाओं पर प्रतिबंध : गृह विभाग के अंतर्गत थानों के सुदृढ़ीकरण, परिवहन विभाग की ग्रामीण परिवहन नीति के क्रियान्वयन, खेल विभाग के खेलो इंडिया एमपी, सहकारिता विभाग की मुख्यमंत्री ऋण समाधान योजना, लोक निर्माण विभाग की विभागीय संपत्तियों के संधारण, स्कूल शिक्षा विभाग की निशुल्क पाठ्य सामग्री के प्रदाय, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को लेपटाप प्रदाय, एनसीसी के विकास एवं सुदृढीकरण, जनजातीय कार्य विभाग टंट्या भील मंदिर के जीणोद्धार, उच्च शिक्षा विभाग की योजना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के नए आईटी पार्क की स्थापना, विमानन विभाग की भू-अर्जन के लिए मुआवजा, ग्रामीण विकास विभाग की पीएम सड़क योजना में निर्मित सड़कों का नवीनीकरण और महिला एवं बाल विकास विभाग की आंगनवाड़ी केंद्रों के लिए भवन निर्माण सहित अन्य योजनाओं में व्यय बिना वित्त विभाग की अनुमति के नहीं किया जा सकेगा।

अपंजीकृत निर्माण मजदूरों को अंतिम संस्कार के लिए मदद वाली योजना भी बंद

मध्य प्रदेश के अपंजीकृत निर्माण मजदूरों को अंत्येष्टि एवं अनुग्रह राशि नहीं दी जाएगी। नई राज्य सरकार ने नौ साल पहले शिवराज सरकार के समय बनाई योजना, जिसमें अपंजीकृत निर्माण श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए उनकी दुर्घटना में मृत्यु पर तीन हजार रुपये अंत्येष्टि सहायता एवं एक लाख रुपये अनुग्रह राशि देने का प्रविधान था, इसे भी बंद कर दिया है। मध्य प्रदेश श्रम विभाग के अंतर्गत कार्यरत भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार मंडल ने चार दिसंबर 2014 को मंडल में अपंजीकृत निर्माण श्रमिकों को भी सामाजिक सुरक्षा देने की योजना जारी की थी जिसमें निर्माण श्रमिकों को उनकी मृत्यु पर तीन हजार रुपये अंत्येष्टि सहायता, निर्माण कार्य के दौरान घटित दुर्घटना में मृत्यु होने पर एक लाख रुपये एवं दुर्घटना में स्थाई अपंगता आने पर 75 हजार रुपये अनुग्रह राशि देने का प्रविधान था। 13 जनवरी 2017 में इस योजना में बदलाव कर प्रविधान किया गया था कि दुर्घटना में मृत्यु होने पर चार लाख रुपये एवं दुर्घटना में स्थाई अपंगता आने पर दो लाख रुपये अनुग्रह राशि दी जाएगी।

अंडमान में पांच महीने में 150 करोड़ की 252 केजी मेथामफेटामाइन जब्त, 69 गिरफ्तार

एजेंसी। पोर्ट ब्लेयर

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के डीजीपी ने कहा कि पुलिस द्वीप को नशा मुक्त बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रही है। हमने केंद्रीय गृह मंत्री के निदेशों के अनुसार नशीले पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। परिणाम उत्साहजनक हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस ने पिछले पांच महीनों में 150 करोड़ रुपये मूल्य के 252 किलोग्राम मेथामफेटामाइन जब्त किए हैं। इसके साथ ही 69 लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इस अवधि के दौरान लगभग 10 करोड़ रुपये मूल्य की एक किलोग्राम कोकीन, मारिजुआना (49 किलोग्राम), भांग के पौधे (तीन किलोग्राम), कफ सिरप की 497 बोतलें और एंटी-एंग्जाइटी टैबलेट अल्प्राजोलम की 583 गोलियां जब्त कीं। जिनकी कीमत

लगभग 50 हजार रुपये है।

नशीले पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति : डीजीपी

द्वीप समूह के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) देवेश चंद्र श्रीवास्तव ने कहा, पुलिस द्वीप को नशा मुक्त बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रही है। हमने केंद्रीय गृह मंत्री के निदेशों के अनुसार नशीले पदार्थों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। परिणाम उत्साहजनक हैं। उन्होंने आगे कहा, हम नशीले पदार्थों को लेकर जागरूकता अभियान चला रहे हैं। हम किसी नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले किसी भी शख्स को नहीं बख्शेंगे। यहां के युवाओं के उज्ज्वल भविष्य के लिए कोई कसर न छोड़ने के लिए जमीनी स्तर पर मेरे अधिकारियों और कर्मियों को पूरा श्रेय जाता है। हमें पूरा जन समर्थन मिल रहा है।

पांच माह में बरामद किया गया 250 किलोग्राम मेथामफेटाइन : श्रीवास्तव में जून में डीजीपी के रूप में कार्यभार संभाला था।

विपक्षी दलों की बैठक में शामिल होने दिल्ली रवाना हुए लालू

पटना। बैठक में जा रहे हैं। सब लोगों को मिलकर लड़ना है। रोज-रोज मोदी का बात करते हो,क्या है नरेन्द्र मोदी? हम लोग सब लोग मिलकर हैं इनके खिलाफ लड़ेंगे और इनको हटाएंगे इस बार। यह बातें राजद सुप्रीमों लालू यादव ने सोमवार को दिल्ली में विपक्षी दलों की बैठक में शामिल होने से पहले कही। वह आज सुबह दिल्ली के लिए रवाना हुए। इससे पूर्व उन्होंने पत्रकारों से बात कही। पत्रकारों के सवाल पर वह भड़कते नजर आये। राजद सुप्रीमो लालू यादव के साथ बिहार के डिप्टी सीएम भी दिल्ली के लिए रवाना हुए है। दरअसल, पत्रकारों के सवाल पर राजद सुप्रीमो लालू यादव भड़क गए। लालू यादव से पूछा गया कि, नरेन्द्र मोदी बोल रहे हैं कि वह फिर आएंगे इस बात पर गुस्सा करते हुए राजद सुप्रीमो ने कहा कि, कौन है यह, आएंगे तो आओ।

अल्बर्ट एक्का की जन्मस्थली में म्युजियम बनाया जाना चाहिए : प्रो. अजीत कुमार

रांची: परमवीर अल्बर्ट एक्का गौरव रक्षा सम्मान समिति 27 दिसंबर को परमवीर अल्बर्ट एक्का के जन्मतिथि पर उन्हें एक आयोजन कर याद करेगा। इस आयोजन को लेकर समिति द्वारा रांची प्रेस क्लब में एक प्रेसवार्ता आयोजित की गयी। इस प्रेसवार्ता में स्वामी दिव्यज्ञान, संयोजक अटल पांडेय, कुलपति आरयू प्रो. डा.अजीत कुमार सिन्हा, परमवीर अल्बर्ट एक्का की भतीजी चंदा , रांची चेंबर आफ कामर्स के सदस्य ऋषि तथा आरयू पीजी राजनीति विज्ञान के प्राध्यापक डॉ. त्रिपाठी ने अपनी बातें रखीं। कुलपति आरयू डॉ. सिन्हा ने कहा कि अल्बर्ट एक्का पर हमारी जानकारियां बहुत कम हैं और उनके बारे में बहुत सारी जानकारियों को संकलित करने की आवश्यकता है। कम लोगों को पता है कि वह एक बहुत अच्छे हॉकी प्लेयर भी थे, आज अल्बर्ट एक्का

पर एक संपूर्ण डाक्युमेंट्री, किताब की आवश्यकता है। उनके जन्मस्थली जारी ग्राम में एक म्युजियम बनाया जाना चाहिये, एनईपी में अल्बर्ट एक्का पर चैप्टर होना चाहिये। अल्बर्ट एक्का के नाम से एक फाउंडेशन की आवश्यकता है। यह अफसोस की बात है कि उनके वीरगति के 44 साल बाद शहादत स्थली से मिट्टी उनके गांव पहुंची। अगर अल्बर्ट एक्का पर वर्तमान पीढ़ी ने जानकारियां संकलित नहीं की तो अगली पीढ़ी भी कुछ नहीं कर पायेगी। परमवीर अल्बर्ट एक्का गौरव रक्षा सम्मान समिति के वरिष्ठ सदस्य और कार्यक्रम के मुख्य संयोजक स्वामी दिव्यज्ञान ने कहा कि 27 दिसंबर को अल्बर्ट एक्का के गुमला स्थित जारी गांव में एक कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। इसमें 78 गांवों और विभिन्न जगहों से बीस हजार से ज्यादा लोग आयेंगे। संयोजक अटल पांडेय ने कहा कि अल्बर्ट एक्का इस क्षेत्र के एकमात्र? परमवीर चक्र विजेता हैं।उनके सम्मान में 27 दिसंबर को आयोजित कार्यक्रम में हम प्रधानमंत्री को भी आमंत्रित कर रहे हैं। यह खुशी की बात है कि प्रत्येक वर्ग अल्बर्ट एक्का के जन्मदिन पर उनके सम्मान में आगे आ रहा है।

1436 आवेदनों में 735 का तत्काल किया गया निपटारा

नवीन मेल संवाददाता। बेड़ो ग्रामीणों तक पहुंचकर योजनाओं का लाभ देना ही आपके अधिकार आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। उक्त बातें सोमवार को बेड़ो प्रखंड के केशा पंचायत में आयोजित आपका अधिकार आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि प्रखंड विकास पदाधिकारी संग्राम मुर्मू ने कहीं। इसी उद्देश्य को लेकर सरकार आपके गांव और दरवाजे तक आकर सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं का लाभ देने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का यह प्रयास से हर ग्रामीण तक पहुंचकर उनकी आवश्यकता के अनुसार उन्हें सरकार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न स्कीमों का लाभ पहुंचाया जा सके। सरकार के द्वारा विभिन्न विभागों के तहत कई कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। जिन योजनाओं का लाभ इस शिविर में आए हुए ग्रामीण अपनी आवश्यकता के अनुसार ले सकते हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने सरकार के कई महत्वपूर्ण योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी और लोगों से योजनाओं का लाभ लेने का आह्वान किया। कार्यक्रम में ग्रामीणों की सुविधा के लिए 25 से अधिक स्टॉल लगाए गए थे। जहां लोग आवश्यकता के अनुसार आवेदन विभिन्न योजनाओं के लिए समर्पित किए। इससे पूर्व पंचायत की मुखिया ने अतिथियों और ग्रामीणों का स्वागत करते हुए योजनाओं का लाभ लेने की बात कही। इस अवसर पर विभिन्न विभागों में प्राप्त आवेदन पर त्वरित कार्रवाई करते हुए अतिथियों के हाथों से दर्जनों लभुगों के बीच स्वीकृति आदेश, प्रमाण पत्र एवं परिसंपत्ति का वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान सुबह से ही ग्रामीणों के आने का सिलसिला शुरू हुआ जो शाम तक जारी रहा। कार्यक्रम में कु 1436 आवेदन प्राप्त हुए जिसमे 735 आवेदनों का तत्काल निपटारा किया गया। मौके पर प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी संजय तिर्की, ग्राम प्रधान, पंचायत समिति सदस्य शाइस्ता परवीन, पशुपालन पदाधिकारी डॉ राकेश रंजन, सहायक अभियंता पुरुषोत्तम भाई पटेल, कन्या अभियंता सद्दाम हुसैन, अंचल निरीक्षक भीखम कुमार के अतिरिक्त पंचायत के वार्ड सदस्य, जनप्रतिनिधि एवं सभी विभाग के कर्मी पदाधिकारी और बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

बेड़ो के मजदूर की त्रिपुर स्टेशन में ट्रेन से कटकर मौत

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड के पुरियो गढ़ाटोली गांव निवासी 30 वर्षीय शनिचरवा उरांव पिता बुदू उरांव का त्रिपुर स्टेशन में ट्रेन से कटकर मौत हो गई। मृतक शनिचरवा राज मिस्त्री का काम करता था। वह अपने गांव के राज मिस्त्री साथी शंकर उरांव पिता चैतु उरांव के साथ बारह दिसंबर को हटिया स्टेशन से ट्रेन से केरल राज्य मजदूरी के लिए जा रहा था। परिजनों के अनुसार केरल जाने के दौरान रास्ते में शनिचरवा कहीं उतर गया। उसका साथी शंकर उरांव जब केरला के कटुर स्टेशन पहुंचा, तो अपने साथी शनिचरवा को नहीं पाया। उसके काफी खोजबीन के बाद नहीं मिला तो कटुर स्टेशन के जीआरपी थाना में मामला दर्ज कराया। वहीं थाना के जीआरपी पुलिस ने दो दिने के बाद बतलाया कि त्रिपुर स्टेशन के पास एक व्यक्ति का ट्रेन से कटा शव मिला है। मृतक शनिचरवा के बड़े भाई सोमनाथ उरांव, उसकी भाभी रूबीन तिग्गा और उनके गांव के ही बुधवा उरांव जो पहले से केरल में ही काम करते थे उन्हे साथ लेकर त्रिपुर घटना स्थल पहुंचकर शव को देखा तो शव शनिचरवा उरांव का था।

लद्दाख में 5.5 तीव्रता का आया भूकंप

एजेंसी। श्रीनगर

लद्दाख क्षेत्र में सोमवार को रिक्टर पैमाने पर 5.5 तीव्रता का भूकंप आया। मौसम विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सोमवार को लद्दाख क्षेत्र में रिक्टर पैमाने पर 5.5 तीव्रता का भूकंप आया। भूकंप दोपहर 3.48 बजे आया। भूकंप का केंद्र कारगिल जिले में था। मौसम विभाग के एक बयान में कहा गया, यह पृथ्वी के अंदर 10 किलोमीटर की गहराई पर 33.41 डिग्री उत्तर में अक्षांश और 76.70 डिग्री पूर्व देशांतर पर आया।अभी तक किसी के हताहत होने या संपत्ति के नुकसान की कोई खबर नहीं है।

हिमाचल के कई जिलों में भी भूकंप के झटके

शिमला। हिमाचल प्रदेश के कई जिलों में सोमवार दोपहर को भूकंप के झटके महसूस किए गए। प्रदेश के जिला कुल्लू और लाहौल-

स्पीति में करीब 3:48 बजे भूकंप के झटके महसूस किए गए। वहीं, कांगड़ा, चंबा व हमीरपुर जिले में भी भूकंप के झटके महसूस हुए। भूकंप के झटकों के बाद कई लोग अपने घरों, भवनों से निकलकर खुले स्थानों की ओर गए। लाहौल-स्पीति पुलिस थाना में मौजूद कर्मचारी दहशत में दफ्तर से बाहर निकलकर खुले स्थान की ओर भागे। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार भूकंप का केंद्र, केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के कारगिल में जमीन के भीतर 10 किलोमीटर की गहराई पर था। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.5 आंकी गई। भूकंप से किसी तरह के नुकसान की सूचना नहीं है।

रांची सर्राफा

सोना (बिक्री) 58.850

चांदी (किलो) 75.500

एक नजर

साई सुदर्शन ने डेब्यू मैच में जड़ा नाबाद अर्द्धशतक, कहा - सपने सच होते हैं...

नई दिल्ली: टीम इंडिया ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे मुकाबले में शानदार जीत दर्ज की. युवा बल्लेबाज साई सुदर्शन ने भी अपने डेब्यू में पचासा जड़ा। उनके बल्ले की चमक पूरी दुनिया ने देखी। अर्शदीप सिंह ने पांच विकेट चटकाए। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच खेले गए पहले वनडे मुकाबले में एक युवा खिलाड़ी ने अपनी बल्लेबाजी से सभी को प्रभावित किया। वह आईपीएल स्टार साई सुदर्शन थे। सुदर्शन ने अपने इंटरनेशनल डेब्यू पर ही एक लो स्कोरिंग मैच में नाबाद अर्धशतक जड़कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। टीम इंडिया ने जोहान्सबर्ग में तीन मैचों की सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली. पहले अर्शदीप सिंह और आवेश खान की गेंदबाजी के दम पर भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 116 रनों पर समेटा। उसके बाद 8 विकेट से यह मुकाबला जीत लिया। सुदर्शन भी अपनी इस पारी से काफी खुश हैं और इसे सपना सच होने जैसा बताया।

पहली बार भारत से बाहर विदेश में होगी आईपीएल खिलाड़ियों की नीलामी

आईपीएल 2024 में मल्लिका सागर होंगी पहली महिला ऑक्शनर

एजेंसी। नई दिल्ली

मंगलवार को आई पीएल 2024 की नीलामी,ये पहली बार होगा जब आईपीएल में खिलाड़ियों की नीलामी देश से बाहर यानी विदेश में होगी। दुबई में इस एरिना हाई प्रोफाइल इवेंट का आयोजन होगा। बीसीसीआई ने उन 333 खिलाड़ियों के नाम शेयर किए हैं, जो आईपीएल की मिनी ऑक्शन में शामिल होंगे।

इंडियन प्रीमियर लीग के 2024 सीजन के लिए खिलाड़ियों की बोली कल यानी मंगलवार 19 दिसंबर को होगी। ये पहली बार होगा जब आईपीएल में खिलाड़ियों की नीलामी देश से बाहर यानी विदेश में होगी। दुबई में इस एरिना हाई प्रोफाइल इवेंट का आयोजन होगा। बीसीसीआई ने उन 333 खिलाड़ियों के नाम शेयर किए हैं जो आईपीएल की मिनी ऑक्शन में शामिल होंगे। 10 टीमों के बीच 77 स्लॉट खाली हैं। इसका मतलब ये है कि 333 में से 77 खिलाड़ी नीलाम होंगे जिनमें से 30 विदेशी रहेंगे।

आईपीएल 2024 सीजन के लिए नीलामी भारतीय समयानुसार दोपहर 1 बजे से शुरू होगी। आईपीएल 2024 नीलामी की लाइव स्ट्रीमिंग जियो सिनेमा पर उपलब्ध होगी। जबकि स्टार स्पोर्ट्स नेटवर्क अपने कई चैनलों पर इस कार्यक्रम का प्रसारण करेगा।

वहीं इस बार नीलामी में कुल कितने खिलाड़ी उपलब्ध रहेंगे? कुल 333 खिलाड़ियों की नीलामी होगी जिनमें 214 भारतीय और 119 विदेश खिलाड़ी शामिल हैं। एक टीम ज्यादा से ज्यादा कितने खिलाड़ी रख सकती है? हर आईपीएल टीम ज्यादा से ज्यादा 25 सदस्य और न्यूनतम 18 सदस्य हो सकते हैं। हर टीम में अधिकतम आठ विदेशी खिलाड़ी हो सकते हैं। रिटेन किए गए खिलाड़ी की संख्या कितनी है और आईपीएल 2024 की नीलामी में टीमों के लिए शेष राशि कितनी है? आईपीएल की 10 टीमों ने कुल मिलाकर 173 खिलाड़ियों को रिटेन किया है, जिनमें 50 विदेशी क्रिकेटर हैं। सीएसके, लखनऊ सुपर जायंट्स और सनराइजर्स हैदराबाद ने सबसे ज्यादा 19 खिलाड़ियों को रिटेन किया है। आईपीएल 2024 के लिए ऑक्शनर मल्लिका सागर होंगी। ये आईपीएल इतिहास में पहली बार होगा जब कोई महिला ऑक्शनर द्वारा नीलामी आयोजित की जाएगी।

मैनचेस्टर ने लिवरपूल को ड्रॉ पर रोका, आर्सेलन शीर्ष पर

एजेंसी। नई दिल्ली इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल में मैनचेस्टर यूनाइटेड ने लिवरपूल को गोलरहित ड्रॉ पर रोक दिया जबकि आर्सेनल ने रविवार को ब्रिगटन को 2-0 से शिकस्त दी। लिवरपूल इस ड्रॉ मुकाबले बाद तालिका में दूसरे स्थान पर खिसक गया जबकि आर्सेनल एक बार फिर से शीर्ष पर काबिज हो गया। मैनचेस्टर यूनाइटेड ने इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल में लिवरपूल को गोलरहित ड्रॉ पर रोक दिया जबकि आर्सेनल ने रविवार को ब्रिगटन को 2-0 से शिकस्त दी। लिवरपूल इस ड्रॉ मुकाबले बाद तालिका में दूसरे स्थान पर खिसक गया जबकि आर्सेनल एक बार फिर से शीर्ष पर काबिज हो गया।

आर्सेनल और लिवरपूल के नाम मौजूदा सत्र में 17-17 मैचों में क्रमशः 39 और 38 अंक है।

मैनचेस्टर यूनाइटेड को लिवरपूल ने इस साल मार्च में 0-7 के बड़े अंतर से हराया था लेकिन नये कोच एरिक टेन हैग की देख रेख में टीम ने अपने प्रदर्शन के स्तर को ऊंचा करते हुए एक भी गोल करने का मौका नहीं दिया। आर्सेनल ने दूसरे हाफ में गैब्रियल जेसुस और काइ हैवर्ट्ज के गोल से पर ब्रिगटन को शिकस्त दी।

तालिका में तीसरे स्थान पर काबिज एस्टन विला ने ने ब्रेंटफोर्ड को 2-1 से हराया। विला की टीम पहले हाफ के आखिरी क्षण में कीन लुईस-पॉटर के गोल के बाद 0-1 से पिछड़ रही थी लेकिन एलेक्स मोरेनो और ओली वाटकिंस ने दूसरे हाफ में गोल कर टीम को जीत दिला दी। ब्रेंटफोर्ड के बेन मी को 71वें मिनट में रेड कार्ड दिखाया गया। जिसके बाद टीम को 10 खिलाड़ियों के साथ मैच खेलना पड़ा। मोहम्मद कुदुस के दो गोल के दम पर वेस्ट हैम ने वोल्व्स को 3-0 से हराया। कुदुस ने 10 मिनट के अंदर दो गोल कियटीम के एक और गोल डेविड मोयेस ने किया।

खिलाड़ियों को साइन करने के लिए कुल सात स्लॉट उपलब्ध

सिराज का समर्थन करने के लिए अधिक गेंदबाजी विकल्प हासिल करना प्राथमिकता : निदेशक

एजेंसी। नई दिल्ली

बोबाट ने कहा, हमारे पास मुख्य खिलाड़ियों का एक मजबूत समूह है। टीम का शीर्ष क्रम काफी मजबूत है। खिलाड़ियों को रिलीज करने का हमारा फैसला का एक हिस्सा मध्य क्रम को मजबूत करने की कोशिश करना था। कैमरून ग्रीन को टीम में लाना एक शानदार था कदम है। आरसीबी के पास 40.75 करोड़ रुपये का पर्स है और खिलाड़ियों को साइन करने के लिए कुल सात स्लॉट उपलब्ध हैं। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर (आरसीबी) के क्रिकेट निदेशक मो बोबट ने सोमवार को कहा कि आगामी आईपीएल नीलामी में तेज गेंदबाज मोहम्मद सिराज का समर्थन करने के लिए अधिक गेंदबाजी विकल्प हासिल करना टीम की सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। आरसीबी ने स्टार बल्लेबाज विराट कोहली, कप्तान फाफ डू प्लेसिस, ग्लेन मैक्सवेल और सिराज समेत

18 खिलाड़ियों को रिटेन (टीम में बरकरार)किया है और 11 खिलाड़ियों को रिलीज (टीम से बाहर) कर दिया है। जिन खिलाड़ियों को रिलीज किया गया है उनमें मध्यम तेज गेंदबाज हर्षल पटेल, श्रीलंका के लेग स्पिनर वानिंदु हसरंगा और ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड की तिकड़ी शामिल हैं। इससे टीम की गेंदबाजी कमजोर हुई है। बोबाट ने यहां जारी मीडिया विज्ञप्ति में कहा, हम जो करते हैं मोहम्मद सिराज उसका मुख्य हिस्सा है। हमारे लिए सिराज का समर्थन करने के लिए गेंदबाजी विदेशी गेंदबाज सहित कुछ और गेंदबाजी विकल्पों को टीम में शामिल करना एक वास्तविक प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा,हमारे पास स्थानीय स्पिनरों का एक समूह है, जो मुझे लगता है कि काफी मजबूत है। उनमें से कुछ को पिछले एक या दो वर्षों में सीमित अवसर मिले हैं और वे आगे चलकर अधिक बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। शीर्ष क्रम में दिग्गज बल्लेबाजों से सजी आरसीबी ने अपने मध्य क्रम को मजबूत करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के ऑलराउंडर कैमरून ग्रीन को मुंबई इंडियंस से 17.5 करोड़ रुपये में खरीदा। बोबाट ने कहा, हमारे पास मुख्य खिलाड़ियों का एक मजबूत समूह है।

टीम का शीर्ष क्रम काफी मजबूत है। खिलाड़ियों को रिलीज करने का हमारा फैसला का एक हिस्सा मध्य क्रम को मजबूत करने की कोशिश करना था। कैमरून ग्रीन को टीम में लाना एक शानदार था कदम है। आरसीबी के पास 40.75 करोड़ रुपये का पर्स है और खिलाड़ियों को साइन करने के लिए कुल सात स्लॉट उपलब्ध हैं।

रोहित शर्मा टी20 वर्ल्ड कप में होंगे कप्तान!

नई दिल्ली: आईपीएल फ्रेंचाइजी मुंबई इंडियंस ने एक अप्रत्याशित कदम उठाते हुए रोहित शर्मा को कप्तानी से हटाकर हार्दिक पांड्या को टीम का कप्तान बना दिया. ऐसा माना जा रहा है कि इसका असर टीम इंडिया पर भी देखने को मिल सकता है. लेकिन एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि रोहित अगले साल टी20 वर्ल्ड कप में कप्तान होंगे।आईपीएल की सबसे सफल फ्रेंचाइजी में से एक मुंबई इंडियंस ने पिछले शुक्रवार को अपने सबसे सफल कप्तान रोहित शर्मा को हटाकर हार्दिक पांड्या के हाथों में टीम की कमान दे दी. इसके साथ ही रोहित के सफल कप्तानी का 10 साल का सफर समाप्त हो गया. एमआई के इस फैसले ने सभी को चौंका दिया, वहीं फ्रेंचाइजी को फैंस की नाराजगी भी झेलनी पड़ी. कुछ दिन और पीछे चलें तो गुजरात टाइटंस को पहले ही सीजन में खिताब दिलाने और दूसरे सीजन में फाइनल तक पहुंचने वाले पांड्या को मुंबई ने ट्रेड किया. इस ट्रेड के बाद कई लोगों को उम्मीद थी कि एमआई के नेतृत्व में परिवर्तन होगा. इस बड़े बदलाव के बाद, क्रिकेट जगत में इस बात की भी चर्चा है कि क्या टीम इंडिया भी उसी बदलाव की ओर जाएगा, लेकिन एक रिपोर्ट से पता चला है कि रोहित जून में टी20 विश्व कप के लिए टीम इंडिया की कप्तानी के पहले पसंद बने हुए हैं.हार्दिक पांड्या करीब एक साल से अधिक समय से भारत के लिए वैकल्पिक टी20 आई कप्तान हैं. रोहित ने आखिरी बार इस प्रारूप में नवंबर 2022 में इंग्लैंड के खिलाफ टीम की टी20 विश्व कप सेमीफाइनल में हार के साथ खेला था. उम्मीद थी कि रोहित एकदिवसीय विश्व कप के बाद टी20 आई में वापसी करेंगे, लेकिन पिछले महीने घरेलू मैदान पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह नहीं हो सका. यहां तक कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 सीरीज में भी रोहित शर्मा को आराम दिया गया।बीसीसीआई ने सफाई दी है कि ऐसा रोहित शर्मा की मर्जी से हुआ. उन्होंने खुद ही ब्रेक लेने का फैसला किया है. इस बात ने इस प्रारूप में रोहित के भविष्य को लेकर अनिश्चितता बढ़ गई है. ऐसी चर्चा है हार्दिक पांड्या टी20 वर्ल्ड कप 2024 में टीम इंडिया के कप्तान बन सकते हैं. इस वनडे वर्ल्ड कप में रोहित ने टीम को फाइनल तक पहुंचाया. शायद ही वह अगला वनडे वर्ल्ड कप खेल पाएं। क्योंकि यह सलामी बल्लेबाज अगले साल अप्रैल में 37 साल का हो जाएगा.

व्यापार

आई फोन यूजर्स पर मंडरा रहा बड़ा खतरा, सरकार ने जारी किया अलर्ट

नई दिल्ली : अब एप्पल के डिवाइस इस्तेमाल करने वाले यूजर्स के ऊपर बड़ा खतरा मंडरा रहा है। सीईआरटी-इन(कंप्यूटटर इमर्जेंसी रिस्पॉन्स टीम ऑफ इंडिया) ने शुक्रवार को कहा कि उसे ऐपल के प्रोडक्ट्स में कई खतरे मिले हैं। इनसे यूजर्स के डेटा की सेफ्टी हैकर्स के निशाने पर आ गई है। स्कैमर्स आए दिन किसी न किसी तरह से लोगों को अपना शिकार बनाते रहते हैं। इसी कड़ी में अब एप्पल के डिवाइस इस्तेमाल करने वाले यूजर्स के ऊपर बड़ा खतरा मंडरा रहा है। CERT-I»»f (कंप्यूटटर इमर्जेंसी रिस्पॉन्स टीम ऑफ इंडिया) ने शुक्रवार को कहा कि उसे ऐपल के प्रोडक्ट्स में कई खतरे मिले हैं। इनसे यूजर्स के डेटा की सेफ्टी हैकर्स के निशाने पर आ गई है। दरअसल, रिपोर्ट के अनुसार ये हैकर इनसे ऐपल डिवाइस में वायरस वाले कोड को रन कराने के साथ ही सिक्योरिटी रिस्ट्रिक्शन्स को भी बाइपास कर सकते हैं। इसके अलावा इनसे हैकर यूजर्स के डिवाइस में डिनायल ऑफ सर्विस भी चालू कर सकते हैं।

CERT-I»»f के अनुसार, ये खतरा OS, Apple WÔtch OS, iPÔdOS और 17.2 वर्जन के ऊपर वाले ऐपल सफारी के यूजर्स की परेशानी बढ़ा सकता है। CERT-I»»f ने इस खतरे को हाई कैटेगरी में रखा है। ये सिक्योरिटी एडवाइजरी सैमसंग यूजर्स को दी गई वॉर्निंग के महज 48 घंटे बाद आई है।

CERT-I»»f ने सैमसंग यूजर्स को दी गई चेतावनी में कहा था कि एंड्रॉयड वर्जन 11,12,13 और 14 पर चलने वाले फोन की सिक्योरिटी गंभीर खतरे में है। इसमें सैमसंग के प्रीमियर फोन गैलेक्सी एस 23 का भी नाम है। क्योंकि ये ऐंड्रॉयड 14 को सपोर्ट करता है।

स्कूटर और कैब के बाद अब ओला से गूगल और चैट जीपीटी को मिलेगा टक्कर

एजेंसी। नई दिल्ली

अब ओला भी कूद गया है। कैब और इलेक्ट्रिक स्कूटर के बाद कंपनी ने अपना पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस Krutrim अंकपेश किया है। इस प्रोजेक्ट को कंपनी के सीईओ भाविश अग्रवाल ने इंट्रोड्यूस किया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस इन दिनों काफी चलन में है। लगभग हर कंपनी इस सेक्टर में कदम रख रही है। इस क्रम में अब ओला भी कूद गया है। कैब और इलेक्ट्रिक स्कूटर के बाद कंपनी ने अपना पहला आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस Krutrim अकपेश किया है। इस प्रोजेक्ट को कंपनी के सीईओ भाविश अग्रवाल ने इंट्रोड्यूस किया है। PÔt»»fÔ में पुरानी कारों की कीमतें आपको आश्चर्यचकित कर सकती हैं

उपयोग की गयी गाड़ी की कीमत

|SeÔrch Ads

कंपनी का कहना है कि ये एक ग्राउंडब्रेकिंग प्रोजेक्ट है, जिसका फोकस भारत का पहला फुल स्टैक अक सॉल्यूशन विकसित करना है। कंपनी ने इसके दो मॉडल-कृत्रिम और

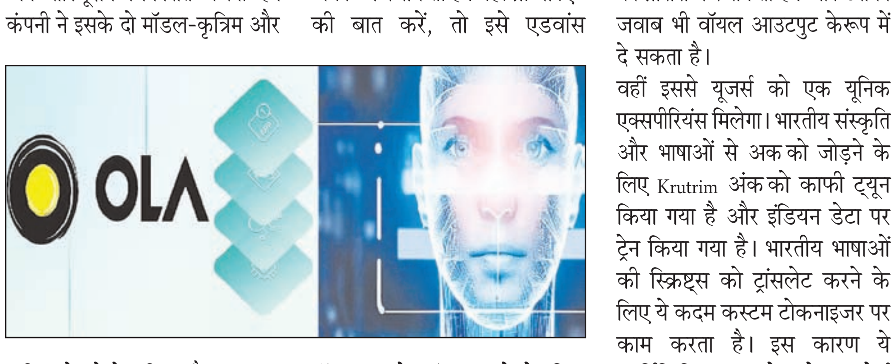

कृत्रिम प्रो को पेश किया है।

इन अकमॉडल्स में क्या खास है इसके बारे में आपको डिटेल्स में समझना होगा। सबसे पहले तो Krutrim अंक की शुरूआत अप्रैल 2023 में भविश अग्रवाल और कृष्णमूर्ति वेणुगोपाला टेनेटी ने की। ड" ने इसके दो मॉडल्स पेश किए हैं। बेस मॉडल यानी Krutrim अंक 22 भाषाओं को समझता है और 10 भारतीय भाषाओं में टेक्स्ट जनरेट कर सकता है। वहीं प्रो वेरिएंट की बात करें, तो इसे एडवांस प्रॉब्लम्स को सॉल्व करने के लिए डिजाइन किया गया है। ये अगली तिमाही में रिलीज होगा।

कंपनी का दावा है कि किसी दूसरे अक मॉडल के मुकाबले Krutrim अंक को 20 गुना ज्यादा इंडिक टोकन पर ट्रेन किया गया है। इस कारण से ये इंडिक परफॉर्मेंस के मामले में जीपीटी-4 AüSX LIÔmÔ मॉडल्स को आउट परफॉर्म करता है। ये अकवॉयल इनपुट को प्रॉसेस कर सकता है। और उसका जवाब भी वॉयल आउटपुट केरूप में दे सकता है।

वहीं इससे यूजर्स को एक यूनिक एक्सपीरियंस मिलेगा। भारतीय संस्कृति और भाषाओं से अक को जोड़ने के लिए Krutrim अंक को काफी ट्यून किया गया है और इंडियन डेटा पर ट्रेन किया गया है। भारतीय भाषाओं की स्क्रिप्ट्स को ट्रांसलेट करने के लिए ये कदम कस्टम टोकनाइजर पर काम करता है। इस कारण ये आर्टिफिशियल दूसरे ओपन सोर्स लर्निंग मॉडल्स से बेहतर काम करता है। कंपनी ने इसे अकको लाइव कर दिया है। ये मॉडल कंपनी की आधिकारिक वेबसाइट पर लाइव हो चुका है। हालांकि, इसके लिए यूजर्स को रजिस्टर करना होगा। इसका बेस मॉडल अगले महिने से सभी के लिए उपलब्ध होगा।

शेयर बाजार में बड़ी गिरावट, 300 से अधिक टूटा सेंसेक्स

एजेंसी

घरेलू शेयर बाजार का नया सप्ताह शुरू हो गया है। इस सप्ताह की शुरूआत शेयर बाजार में अच्छी नहीं हुई है। सेंसेक्स और निफ्टी में जोरदार गिरावट देखने को मिल रही है। बैंक निफ्टी शुरूआत में ही 200 अंकों की गिरावट का शिकार हुआ है। वहीं इसे मिडकैप की तेजी से भी बाजार को खास सोपर्ट नहीं मिल सका है। एशियाई बाजारों के कमजोर रुख का असर घरेलू बाजार पर पड़ा। एनएसई का निफ्टी 21.85 अंक गिरावट के साथ खुला है। इसका स्तर 21,434 का रहा है। आंकडों की मानें तो बीएसई वाला 30 शेयर वाला सूचकांक सेंसेक्स 341.46 अंक गिरकर 71,142.29 पर आ गया। सेंसेक्स की कंपनियों में आईटीसी, आईसीआईसीआई बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, इंडसइंड बैंक, एक्सिस बैंक और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर नुकसान में रहे। सन फार्मा, रिलायंस इंडस्ट्रीज, टाइटन और बजाज फाइनेंस के शेयर लाभ में रहे। निफ्टी 65.30 अंक फिसलकर 21,391.35 पर रहा।

अन्य एशियाई बाजारों में चीन का शंघाई कम्पोजिट, हांगकांग का हैंगसेंग तथा जापान का निक्की नुकसान में रहे, जबकि दक्षिण कोरिया का कॉस्पी फायदे में रहा। अमेरिकी बाजार शुक्रवार को सकारात्मक रुख के साथ बंद हुए। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड 0.46 प्रतिशत की बढ़त के साथ 76.90 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा था। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने शुक्रवार को 9,239.42 करोड़ रुपये के शेयर खरीदे।

अदाणी एंटरप्राइजेज ने भी निवेशकों को दिया तगड़ा मुनाफा

निवेशकों का मुनाफा कराने में अदाणी से आगे अंबानी

नयी दिल्ली : मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के एक अध्ययन के अनुसार अदाणी एंटरप्राइजेज ने भी निवेशकों को तगड़ा मुनाफा दिया। कंपनियों के शेयर बाजार में प्रदर्शन पर आधारित इस अध्ययन में कहा गया कि रिलायंस लगातार पांचवीं बार संपत्ति निर्माण में अव्वल रही। भारतीय शेयर बाजार में निवेशकों की झोली भरने में भी मुकेश अंबानी की कंपनी गौतम अदाणी की कंपनी से आगे है. रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड 2018 से 2023 तक पांच साल के दौरान संपत्ति निर्माण के लिहाज से अव्वल रही है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज के एक अध्ययन के अनुसार अदाणी एंटरप्राइजेज ने भी निवेशकों को तगड़ा मुनाफा दिया. कंपनियों के शेयर बाजार में प्रदर्शन पर आधारित इस अध्ययन में कहा गया कि रिलायंस लगातार पांचवीं बार संपत्ति निर्माण में अव्वल रही। हिंडनबर्ग रिपोर्ट से हुए नुकसान से तेजी बाहर आ रहा अदाणी ग्रुप, 64 बिलियन डॉलर रह गया घाटा।

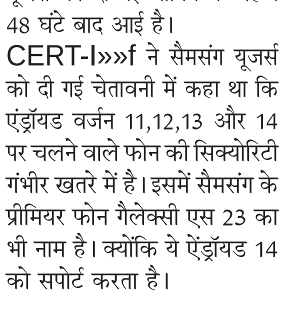

रिलायंस ने 2018-23 के बीच 9,63,800 करोड़ रुपये की संपत्ति जोड़ी. इसके बाद टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (6,77,400 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (4,15,500 करोड़ रुपये), इन्फोसिस (3,61,800 करोड़ रुपये) और भारती एयरटेल (2,80,800 करोड़ रुपये) का स्थान रहा. मोतीलाल ओसवाल ने अपने अध्ययन में कहा कि एक कम चर्चित कंपनी लॉयड्स मेटल्स ने 2018-23 के दौरान 79 प्रतिशत सालाना वृद्धि दर (सीएजीआर)के साथ सबसे तेजी से संपत्ति निर्माण किया. अदाणी समूह की प्रमुख फर्म अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड 78 प्रतिशत सीएजीआर के साथ दूसरे स्थान पर रही। अध्ययन में कहा गया है कि शीर्ष 10 सबसे तेज संपत्ति निर्माण करने वाली कंपनियों में यदि 2018 में 10 लाख रुपये का निवेश किया जाता, तो यह राशि 2023 में बढ़कर एक करोड़ रुपये होती. यह 59 प्रतिशत का सीएजीआर प्रतिफल है. शेयर बाजार में सबसे तेज, सबसे बड़े और लगातार बेहतर प्रदर्शन को दशार्ने वाली श्रेणी ऑल-राउंड वेल्थ क्रिएटर्स में अदाणी एंटरप्राइजेज शीर्ष पर रही. फर्म कुल संपत्ति निर्माण के लिहाज से 9वें स्थान पर, सबसे तेज संपत्ति निर्माण के लिहाज से दूसरे स्थान पर और लगातार बेहतर प्रदर्शन करने के लिहाज से पांचवे स्थान पर है. इस श्रेणी में इसके बाद वरुण बेवरेजेज, अदाणी पावर, ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स और आईसीआईसीआई बैंक का स्थान है। इस सूची में रिलायंस 10वें नंबर पर है। पिछले सप्ताह बाजार में जारी तेजी के बीच, सेंसेक्स की शीर्ष 10 कंपनियों में से नौ के बाजार पूंजीकरण में बीते सप्ताह सामूहिक रूप से 2.26 लाख करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। सबसे अधिक लाभ में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और इन्फोसिस रहीं।

फोन पे, गूगल पे 31 दिसंबर के बाद हो सकता है बंद

नई दिल्ली : बैंक के ऐसे ग्राहक जो डिजिटल लेनदेन के लिए का इस्तेमाल करते हैं। उनके लिए ये बेहद खास खबर है। बताया जा रहा है कि बैंक आपके यूपीआई आईडी को लेकर एक बड़ा फैसला लेने वाला है। इससे लाखों ग्राहकों के थर्ड पार्टी ऐप्लिकेशन जैसे गूगल पे, फोन पे आदि बंद हो सकते हैं। नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया ने अपने नए गाइडलाइन में कहा है कि बैंक और थर्ड पार्टी ऐप्लिकेशन प्रोवाइडर्स ऐसे ग्राहकों के यूपीआई आईडी और उससे जुड़े मोबाइल नंबर की पहचान करें, जिन्होंने पिछले एक साल या उससे ज्यादा वक्त से अपने यूपीआई आईडी का इस्तेमाल नहीं किया है। संस्थान ने ऐसे आईडी को बंद करने का निर्देश भी दे दिया है। कहा है कि सभी टीपीएपी और पीएसपी बैंक उन ग्राहकों से जुड़े मोबाइल नंबर की पहचान करेंगे। इस दायरे में ऐसे यूपीआई आईडी आएंगे,जिन्होंने पिछले एक साल में किसी भी तरह का क्रेडिट या डेबिट नहीं हुआ है।

ऐसे जेडयूपीआई पर नए साल के बाद से यूजर्स ट्रांजैक्शन नहीं कर पाएंगे. हालांकि, संस्थान से इस बारे में जानकारी नहीं मिली कि बंद यूपीआई को क्या फिर से शुरू किया जा सकता है या नहीं. अगर हां तो उसकी प्रक्रिया क्या हो सकती है।

सोने में निवेश पर मिल रही छूट

नई दिल्ली: सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड स्कीम में डिजिटल पेमेंट करने और ऑनलाइन बॉन्ड खरीदने पर 50 रुपए का डिस्काउंट मिलता है। भारत में इन्वेस्ट करने के लिए सोना सबसे बेहतरीन ऑप्शन माना जाता है। सोने की कीमत में लगातार हो रहे इजाफे को देखते हुए बड़ी संख्या में लोग सोने में इन्वेस्ट करने की इच्छा रखते है। सोना खरीदकर इन्वेस्ट करनेवालों के लिए केंद्र सरकार भी सरकारी योजना लाई है जिसके तहत सोने में निवेश किया जा सकता है। केंद्र सरकार की सवर बॉन्ड स्कीम की इस सीरीज की शुरूआत 18 दिसंबर से हो गई है, जो 22 दिसंबर तक जारी रहेगी। इस बार योजना के तहत एक ग्राम सोना खरीदने पर 6,199 रुपए का भुगतान करना होगा। सोने के बाजार में चल रहे दाम से ये कीमत काम होती है। इस कीमत को आईबीजीए द्वारा दिए गए रेट के आधार पर तय किया जाता है। आरबीआई द्वारा संचालित इस स्कीम में बॉन्ड को खरीदने के लिए ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों विकल्प उपलब्ध होते है। बता दें कि इस

वर्ष के लिए ये अंतिम सवर बॉन्ड स्कीम है। इस स्कीम के तहत सोना खरीदने वालों को 24 कैरेट यानी 99.9% शुद्ध सोने में निवेश करने का मौका मिलता है। सोने में निवेश करने पर सरकार 2.5 प्रतिशत का सालाना ब्याज भी देती है। इस गोल्ड बॉन्ड पर लोन लेने की भी सुविधा दी जाती है। सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड स्कीम में डिजिटल पेमेंट करने और ऑनलाइन बॉन्ड खरीदने पर 50 रुपए का डिस्काउंट मिलता है। वहीं 10 ग्राम सोना खरीदने पर इस तरह 500 रुपए बचाए जा सकते है।

एक नजर

विकसित भारत कार्यक्रम में पूरी की गई महिलाओं की गोद भराई की रस्म

चिनिया। केंद्र सरकार द्वारा संचालित हमारा संकल्प विकसित भारत कार्यक्रम के तहत प्रखंड की बेता व हेताड़ कला पंचायत में सोमवार को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसकी शुरुआत प्रखंड विकास पदाधिकारी कालिदास मुंडा, प्रमुख सुनैना देवी व भाजपा नेता सूरज प्रसाद ने की। कार्यक्रम में मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं एवं उसके लाभ की जानकारी दी गई व आम लोगों को जागरूक करने के लिए नुक्कड़ नाटक क्विज आदि का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्वच्छता संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लोगों को कई तरह की जानकारी दी गई।

संकल्प यात्रा को लेकर बैठक आज

केतार। केतार प्रखंड कार्यालय के सभागार कक्ष में मंगलवार को दोपहर दो बजे प्रभारी प्रखंड विकास पदाधिकारी नंदजी राम प्रखंड कर्मियों और जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक करेंगे। बीडीओ ने बताया कि विकसित भारत संकल्प यात्रा का सफल आयोजन कराने के लिए बैठक आयोजित की गई है। उक्त बैठक में सभी विभागों के अधिकारी, प्रखंड व अंचल कर्मी, रसोई गैस वितरक, सभी मुखिया, पंचायत समिति सदस्य, बीस सूत्री अध्यक्ष, प्रमुख और जिला परिषद को बैठक में विशेष रूप से उपस्थिति अनिवार्य बताया गया है।

थाना प्रभारी से की कार्रवाई की गुहार

केतार। थाना क्षेत्र के चेचरीया गांव निवासी रघुवर यादव ने सोमवार को केतार थाने में आवेदन देकर वाहन चालक मनोज साह पर कानूनी कारवाई करने की गुहार लगाई है। आवेदन में उल्लेख किया है कि शनिवार की शाम उसके पिता बंधू यादव केतार बाजार से दूध बेचकर साइकिल से घर लौट रहे थे। बलीगढ़ गांव के समीप ऑटो से धक्का लग जाने के कारण वह घायल हो गये। फिलहाल उनका इलाज वाराणसी के अस्पताल में चल रहा है। उन्होंने थाना प्रभारी कमलेश कुमार महतो से वाहन चालक और मालिक पर कानूनी कार्रवाई करने का आग्रह किया है।

प्रशासन ने डंडई गांव में जलाया अलाव

डंडई। बढ़ती ठंड को लेकर प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा अलाव की व्यवस्था की जा रही है। डंडई गांव स्थित मुख्य बाजार के सिरिस पेड़ के पास सोमवार को अलाव जलाना शुरू किया गया। बीडीओ राहुल कुमार शानू, सीओ चोनाराम हेम्ब्रम व राजस्व कर्मचारी इन्देश्वर बैठा ने संयुक्त रूप से मोटे आकार की लकड़ियों में आग लगाने का काम किया। वहीं आग को लहरता देख बड़ी संख्या में राहगीर के अलावा पास पड़ोस के दुकानदारों के साथ-साथ कई लोगों ने भी उक्त स्थल पहुंच आग तापना शुरू कर दिया। मौके पर उपस्थित कई ग्रामीणों ने इसी तरह गांव के और चौक चौराहों पर उक्त पदाधिकारियों से अलाव जलाने की मांग की।

विद्यालयों में प्रतियोगिताओं का आयोजन

चतरा/सिमरिया/पत्थलगड़ा। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार राकेश कुमार सिंह के मार्गदर्शन में सचिव प्रज्ञा वाजपई के निर्देशानुसार सोमवार को जिला मुख्यालय के विभिन्न विद्यालयों में महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण पेंटिंग एवं ऑनलाइन शिक्षा बनाम पारंपरिक शिक्षा पर वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें कानूनी सहायता रक्षा परामर्शदाता अशोक कुमार सिंह, सहायक परामर्शदाता मृणाली प्रसाद एवं जितेंद्र कुमार का योगदान रहा। वहीं सिमरिया प्रखंड क्षेत्र के बिरहु में संचालित परियोजना प्लस 2 उच्च विद्यालय में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में विधिक कार्यकर्ता सुबोध कुमार शर्मा, उमेश प्रसाद, रंजन कुमार मिश्रा, नोडल मोहन प्रसाद आर्य, पवन कुमार, संगीता कुमारी, सुनिता कुमारी एवं अन्य शिक्षक का अहम योगदान रहा। वहीं पत्थलगडा प्रखंड के पल्स टू जनता उच्च विद्यालय व कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय में चित्रांकन, निबंध व वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें पीएलभी रविंद्र कुमार, मुनीलाल दांगी, नोडल शिक्षक अमित कुमार दुबे व शिक्षिका बंटी कुमारी का योगदान रहा।

उपायुक्त आपके द्वार कार्यक्रम में हुए शामिल, कहा- जरूरतमंद लोगों को मिल रहा है योजनाओं का लाभ

अबुआ आवास के सभी आवेदनों को करें ऑनलाइन

नवीन मेल संवाददाता। मयूरहंड उपायुक्त अबु इमरान सोमवार को मयूरहंड़ प्रखंड मुख्यालय स्थित पंचायत सचिवालय में आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये स्टॉलों का निरीक्षण कर मौजूद कर्मियों को निर्देश देते हुए कहा कि सुनिश्चित करें कि जरूरतमंदों को ससमय योजनाओं का लाभ मिले। उपायुक्त ने राशन कार्डधारियों के बीच एक दर्जन धोती-साड़ी, स्कूली छात्र-छात्राओं के बीच पोशाक व जूतों का वितरण किया। अबुआ आवास योजना से संबंधित प्राप्त सभी फार्मों को ऑनलाइन करने का निर्देश कंप्यूटर ऑपरेटर को दिया। उपायुक्त द्वारा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के अंतर्गत दो लाख रुपये इंश्योरेंस क्लेम का चेक एसएचजी ग्रुप की महिला सरस्वती देवी को प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि सरकार की आपके द्वार कार्यक्रम हेमंत सरकार की बेहद महत्वाकांक्षी योजना होने के साथ जरूरतमंदों से सीधे जुड़ने का सकारात्मक प्रयास है। इसका सुखद परिणाम भी प्राप्त हो रहा है और विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। कार्यक्रम में प्रमुख मिक्की देवी, बीडीओ साकेत कुमार सिंहा, विधायक प्रतिनिधि अनिल कुमार सिंह, मुखिया मृदुला देवी, पंसस माया देवी, कृषि पदाधिकारी चंदन कुमार, पंचायत सचिव सतीश मिश्रा, आशा लकड़ा, उदित कुमार, मुकेश राणा, बीटीएम राजेश कुमार सिंह, सत्येंद्र सिंह, संजय साव, टुकनारायन ठाकुर समेत बड़ी संख्या में लोग मौजूद थे।

अबुआ आवास के आवेदनों का सत्यापन

गिद्धौर। प्रखंड की विभिन्न पंचायत में अबुआ आवास के आवेदनों का युद्ध स्तर पर सत्यापन किया जा रहा है। प्रखंड विकास पदाधिकारी हरिनाथ महतो ने अबुआ आवास आवेदनों के सत्यापन को लेकर आठ टीमें गठित की हैं। गठित टीम द्वारा घर-घर जाकर अबुआ आवास आवेदनों के सत्यापन के साथ सभी तरह की जानकारियां जुटा रही है। टीम में संबंधित पंचायत के मुखिया, संबंधित वार्ड के वार्ड सदस्य, पंचायत समिति सदस्य, पंचायत सचिव, सहायक अभियंता, कनीय अभियंता, प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास के प्रखंड कोऑर्डिनेटर, स्वयंसेवक आदि को रखा गया है। गठित टीम आवेदकों के घर जाकर उनकी पूरी जानकारी के साथ फोटोग्राफ भी अबुआ आवास के साइट पर अपलोड कर रही है। बीडीओ गठित टीम को युद्ध स्तर पर आवेदक का सत्यापन करने का निर्देश दिया है ताकि समय पर जिले को रिपोर्ट भेजी जा सके। वहीं सोमवार को गिद्धौर प्रखंड कार्यालय में अबुआ आवास को लेकर बीडीओ हरिनाथ महतो ने कर्मियों व जनप्रतिनिधियों के साथ बैठक की। बैठक में उपस्थित कर्मियों व जनप्रतिनिधियों को बीडीओ ने अबुआ आवास के लाभुकों के सत्यापन को लेकर निष्पक्ष रूप से सहयोग करने की अपील की। बैठक में उपप्रमुख प्रितम यादव, मुखिया सरिता देवी, निर्मला देवी, पंचायत सचिव दिगम्बर पांडेय, उज्ज्वल सिंह, चितरंजन शर्मा, प्रियंका प्रिया, सहायक अभियंता मनोज कुमार सहित अन्य उपस्थित थे। इसके उपरांत गिद्धौर पंचायत में अबुआ आवास के आवेदनों का प्रखंड विकास पदाधिकारी के नेतृत्व में टीम ने गांव-गांव घूम कर सत्यापन किया। इस दौरान आवास की स्थित को जिओ टैग भी किया गया। सत्यापन टीम में मुखिया निर्मला देवी, पंचायत सचिव प्रियंका प्रिया, आवास कोआर्डिनेटर फरहत नाजनी, सहायक अभियंता मनोज, कनीय अभियंता सचिनदत शर्मा सहित अन्य शामिल थे।

सर्वाधिक अबुआ आवास के लिए आए आवेदन

कुंदा। प्रखंड की नवादा पंचायत भवन परिसर में सोमवार को आयोजित आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वारा कार्यक्रम में सर्वाधिक अबुआ आवास के आवेदन आए।

कार्य की मंथर गति से यात्रियों को हो रही परेशानी

डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधा निर्माण अधर में

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर यात्री सुविधा निर्माण अधर में लटका नजर आ रहा है। बताया जाता है कि तीन महीने पहले रेलवे ने यह घोषणा की थी कि स्टेशन के प्लेटफार्म नं. एक, दो व तीन पर पांच-पांच यात्री शेडों का निर्माण कराया जायेगा। यह भी दावा किया गया था कि सभी यात्री शेड दिसंबर माह के अंत तक बनकर तैयार हो जायेंगे, किंतु धरातल पर यात्री शेडों के निर्माण की स्थिति दावे के विपरीत नजर आ रही है। दिसंबर माह आधा से अधिक समाप्त हो चुका है। इसके बाद भी अभी तक यात्री शेड के लिये प्लेटफार्मों पर नीव भी नहीं खोदी जा सकी है। एक रेलवे अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा कि इस दिशा में अभी कहा जाये तो काम शुरू ही नहीं हुआ है। यात्री शेड का निर्माण नहीं होने से यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। इसके साथ ही प्लेटफार्म उच्चीकरण की दिशा में भी अभी तक कोई प्रगति नजर नहीं आ रही है। यात्रियों ने रेलवे के अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुये इस संबंध में तत्काल आवश्यक कदम उठाये जाने की मांग की है।

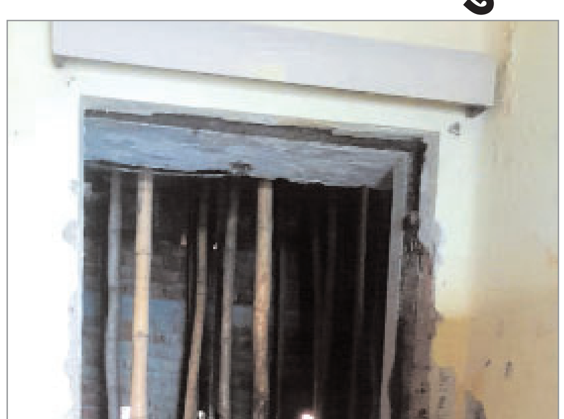

शौचालय ढलाई का काम भी पूरा नहीं

बताया जाता है कि डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर शौचालय का अभाव यात्रियों के लिये भारी परेशानी का कारण बना हुआ है। अभी यात्री प्रतिक्षालय के बगल में शौचालय निर्माण तो कर लिया गया है, किंतु अभी तक ढलाई का काम पूरा नहीं किया जा सका है।

छात्रा को किशोरी समृद्धि, किसान को मिला सिंचाई कूप का लाभ

जिले के पंचायतों में शिविर का क्रम जारी, लोगों में उत्साह

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जिले में आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम के तहत पंचायतों में शिविर लगाने का क्रम जारी है। इन शिविरो में पहुंचकर ग्रामीण सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। कहा जा रहा है बहुत दिनों से जो लोग योजना का लाभ पाने की कोशिशों में लगे थे और सफलता नहीं मिल रही थी, वैसे लोगों को उनकी मनमाफिक योजनाओं का लाभ इन शिविरो में मिल रही है तो लोग काफी खुश व उत्साहित नजर आ रहे हैं। इसी तरह की कुछ बानगी देखी जा सकती है। जिले के हुसैनाबाद प्रखंड के पतरा खुर्द पंचायत में आपकी योजना-आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में समूडीह गांव के राजकीयकृत कन्या उच्च विद्यालय की छात्रा प्रियंका कुमारी को सोमवार को सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ मिला। प्रियंका 10वीं कक्षा की छात्रा है। प्रियंका के अभिभावक किसान हैं।

राजा मेदिनी व नीलांबर-पीतांबर प्रतिमा मामले ने पकड़ा तूल

समाहरणालय परिसर में धरना-प्रदर्शन को झामुमो का मिला समर्थन

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। समाहरणालय परिसर में राजा मेदिनीराय व शहीद नीलांबर-पीतांबर की प्रतिमा स्थापित करने की मांग ने तूल पकड़ लिया है। मांग को लेकर संविधान बचाओ मोर्चे द्वारा दिये जा रहे बेमियादी धरना-प्रदर्शन को सातवें दिन सोमवार को झामुमो का भी समर्थन मिल गया है। धरना स्थल पर पहुंचे झामुमो जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिन्हा ने कहा कि कहा कि पलामू उपायुक्त से मुलाकात कर परिसर में राजा मेदिनीराय व नीलांबर-पीतांबर की प्रतिमा स्थापित करने को मांग को लेकर बात रखी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि यदि इससे भी बात नहीं बनी तो जल्द ही एक कमेटी गठित कर मुख्यमंत्री से मुलाकात कर जल्द ही प्रतिमा स्थापित किया जाएगा। मौके पर बहुजन समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष राजन मेहता ने भी प्रतिमा स्थापित करने के पक्ष में हुंकार भरी। वक्ताओं ने कहा कि प्रतिमा स्थापित होने तक धरना जारी रहेगा। इस अवसर पर मुख्य रूप से रवि पाल, अजय सिंह चेरो, त्रिपुरारी सिंह, विनोद सोनी अजय भारती, अमरनाथ सिंह, शतर सिंह, सीतामनी, वीणा देवी, प्रेम प्रकाश सिंह, आशुतोष सिंह चेरो शामिल हुये।

डंडई सीएचसी नहीं पहुंच रहे डॉक्टर, बैरंग लौट रहे मरीज

स्वास्थ्य केंद्र मे 3 चिकित्सक तैनात, पर एक भी नहीं हो रहा उपस्थित

नवीन मेल संवाददाता। डंडई प्रखंड मुख्यालय में संचालित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोमवार को पूरी तरह चिकित्सक विहीन रहा। अस्पताल में पोस्टेड तीन चिकित्सकों में एक भी चिकित्सक अस्पताल नहीं पहुंचा। इनमें चिकित्सा पदाधिकारी प्रतिमा कुमारी, कुमुद रंजन के साथ-साथ मोनी सिन्हा शामिल हैं। मरीज सुबह से देर शाम तक अस्पताल परिसर में बैठे रहे लेकिन एक भी चिकित्सक का आगमन नहीं हुआ। मजबूरन सभी मरीजों को बिन इलाज कराए ही अपने-अपने घर लौटना पड़ा।

पैर के घाव से ग्रसित डंडई गांव के विनोद चंद्रवंशी इलाज कराने के लिए सोमवार अस्पताल पहुंच था। किसी चिकित्सक के उपस्थित न होने के कारण वह बिना इलाज कराए ही अपने घर लौट गया। विनोद ने जानकारी देते हुए बताया कि उसका दाहिना पैर घाव से पूरी तरह ग्रसित हो चुका था, जिसका ऑपरेशन निजी अस्पताल में कराया था। इस बीच जेब में पैसा नहीं होने के कारण वहां पर घाव सूखने की दवा नहीं ले सका। सोमवार को घाव सूखने की दवा लेने अस्पताल आए थे लेकिन यहां पर एक भी चिकित्सक से भेंट नहीं हुई। मजबूरन हमको बिना दवा लिए ही घर लौटना पड़ गया। इसी तरह अस्पताल के चिकित्सकों की लापरवाही का खामियाजा प्रखंड के अन्य मरीजों को भी भुगतना पड़ रहा है। ठंड के मौसम में सर्दी, खांसी, जुकाम से ग्रसित मरीज हर दिन अस्पताल पहुंच रहे हैं, लेकिन उनकी चिकित्सकों से भेंट नहीं हो पा रही है। नतीजन या तो वे खुले बाजार से अपनी बीमारी का दवा ले रहे हैं या तो फिर वे बैरंग लौट जा रहे हैं। बताते चलें कि महीना दिन पूर्व अस्पताल में पोस्टेड सभी चिकित्सकों का नियमित आना शुरू हो गया था, लेकिन उनकी यह प्रक्रिया महज कुछ ही दिन चल सकी। उसके बाद वे सभी पुनः अपने पुराने ढर्रे पर ही लौट आए। चिकित्सकों का जब मन हुआ तब अस्पताल पहुंचे और नहीं तो नहीं भी आए। प्रखंड के मरीजों की परेशानी से उन्हें कोई लेना देना नहीं रह गया है।

झारखंड छात्र मोर्चा की जिला कार्यकारिणी गठित

कौशल किशोर अध्यक्ष व सैयद फैजल बने सचिव

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर में झारखंड मुक्ति मोर्चा के छात्र मोर्चा की पलामू जिला समिति का विस्तार किया गया। इसमें कौशल किशोर को पलामू जिला अध्यक्ष एवं सईद फैजल को सचिव नियुक्त किया गया। जिला समिति की अनुशंसा पर झामुमो के केंद्रीय महासचिव द्वारा विनोद कुमार पांडे द्वारा इस संबंध में नियुक्ति पत्र जारी किया गया। नये पदाधिकारियों की नियुक्ति से छात्रों में हर्ष व्याप्त है। कौशल किशोर पिछले कई वर्षों से छात्र हित में कार्य कर रहे हैं। झामुमो के पलामू जिला अध्यक्ष राजेंद्र कुमार सिन्हा ने नये पदाधिकारियों का स्वागत करते हुये उम्मीद जताई कि इससे छात्र हित के संघर्ष को बल मिलेगा। कौशल किशोर ने केंद्रीय समिति के प्रति आभार जताते हुये पूर्ण निष्ठा के साथ दायित्व निर्वहन का संकल्प जताया है। इस दौरान उपाध्यक्ष सलाहकार रुहान अब्बास, प्रियांशु आनंद, काफिल कादरी व मोनिका किशन, महासचिव अभिषेक तिवारी, संगठन सचिव रया प्रसाद, रवि कुमार,अमित पासवान व शोभित सिंह चौहान,संयुक्त सचिव आलोक रंजन, विशाल तिवारी, सचिन गुप्ता, सनातन कुमारी व निशा कुमारी एवं सोशल मीडिया प्रभारी पवन सिंह एवं करण राज को नियुक्त किया गया।

सड़क सुरक्षा | थाना प्रभारी ने प्रतिनिधियों व ग्रामीणों को किया जागरूक

'ट्रैफिक रूल्स का पालन कर बचा सकते हैं जान'

नवीन मेल संवाददाता। भवनाथपुर जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार सड़क सुरक्षा, साइबर क्राइम एवं डायन भूत कुप्रथा को लेकर जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत सोमवार को बनसानी पंचायत भवन में प्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों को संबोधित करते हुए प्रभारी थाना प्रभारी कुंदन कुमार यादव ने कहा कि अधिकतर दुर्घटनाएं बिना हेलमेट व शराब के नशे में वाहन चलाने से हो रही हैं। इसलिए सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करके हम स्वयं की जान बचा सकते हैं। हमारा जीवन अमूल्य है।

कहा कि जब भी पिता, भाई या अपने करीबी लोग बाइक चलाते हैं तो उन्हें जरूर हेलमेट पहनने को कहें। दो पहिया वाहन चलाते समय हमेशा हेलमेट का प्रयोग करना चाहिए। कभी भी शराब पीकर गाड़ी नहीं चलाएंगे, कार चलाते समय हमेशा सीट-बेल्ट बांधेंगे, वाहन चलाते समय कभी भी मोबाइल फोन पर बात नहीं करेंगे। वहीं डायन भूत कुप्रथा के बारे में बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अशिक्षा व अंधविश्वास में पड़कर एक दूसरे को नुकसान के साथ-साथ जघन्य हत्या तक करने को आतुर हैं। किसी को अगर बीमारी है तो उसका उपचार करायें न कि ओझागुनि के चक्कर में पड़कर एक दूसरे पर आरोप लगाकर लड़ाई झगड़ा करें। साइबर क्राइम की आजकल हो रही घटना में लोग लोभ में आकर अज्ञात नंबर से आये फोन के झांसे में आ रहे हैं। साइबर अपराधी बिना जानकारी के लॉटरी या सरकारी पैसा देने का प्रलोभन देकर ओटीपी मांगकर आपके खाते से पैसा निकासी कर लेता है। लोग ईमानदारी से कमाया पैसा लूटा रहे हैं जिससे बचना है। आप सभी लोग अपने घरों व आसपास के लोगों को इसके प्रति प्रचार प्रसार कर जागरूक करें। मौके पर एस आई राजू उरांव, मुखिया पति राजेश्वर पासवान, अनुज पाठक, पंचायत सेवक अजित सिंह, सुनील यादव, उल्फत अंसारी आदि उपस्थित थे।

उपायुक्त ने की जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक

मेदिनीनगर। उपायुक्त शशि रंजन की अध्यक्षता में सोमवार को जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक हुई। बैठक में अवैध माइनिंग पर पूर्ण रूप से रोक लगाने की दिशा में सभी को बेहतर समन्वय बनाते हुए कार्य करने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने तीनों एसडीओ को अपने क्षेत्र में ड्रोन से माइनिंग की निगरानी कराने का निर्देश दिया।.उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्र के पदाधिकारी से अपने एरिया में विशेष चौकसी बरतने की बात कही। इसके अलावे उपायुक्त ने कहा कि सभी अंचलाधिकारी यह सुनिश्चित करें कि वैध माइनिंग भी तय एरिया में ही किया जाये। बैठक के दौरान जिला खनन पदाधिकारी आनंद कुमार को सभी अनुमंडल पदाधिकारी,वन प्रमंडल पदाधिकारी,सभी सीओ व थाना प्रभारी के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए अवैध खनन एवं परिवहन की रोकथाम के लिए आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया।

लावाही पंचायत के किसानों के बीच किया गया सरसों बीज का वितरण

नवीन मेल संवाददाता। डंडई प्रखंड की लावाही पंचायत के किसानों के बीच सोमवार को सरसों का बीज वितरण किया गया। प्रखंड विकास पदाधिकारी राहुल कुमार सानू, सीओ चोनाराम हेंब्रम ने संयुक्त रूप से सरसों के बीज से भरा पॉकेट किसानों के बीच वितरण कर इसका शुभारंभ किया। उसके बाद बीटीएम सत्येंद्र कुमार, पंचायत सचिव विकाश कुमार के साथ प्रभारी कृषि पदाधिकारी रमेश सिंह ने डेढ़ सौ किसानों के बीच सरसों का बीज वितरण करने का काम किया। इस बीच उनके द्वारा सभी किसानों को कीटनाशक दवाइयां भी दी गईं।

इससे पहले सरसों का बीज बोने और उसमें कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव करने को लेकर बीटीएम की ओर से विशेष रूप से किसानों को जानकारी दी गई। इस अवसर पर बीडीओ ने कहा कि सभी तरह की दलहन फसलों में सरसों का बीज काफी अच्छी फसल है। उन्होंने कहा कि चाहे इसे पैदावार की क्षमता से देखा जाए, या बाजार मूल्य की क्षमता से, सभी तरह से यह फसल किसानों के लिए लाभदायक है। वहीं सीओ ने कहा कि सरसों का बीज बोने से पहले किसानों को अच्छी तरह से खेतों की तैयारी कर लेनी चाहिए। अन्य बीजों की अपेक्षा सरसों के बीज का बाजार मूल्य काफी अच्छा रहता है। सरसों के बीज को बाजार में बिक्री कर किसान उससे अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

पेज एक के शेष

सेना में आत्महत्या और वीआरएस

समाधान साबित हो सकता है जो सैनिकों के कामों को प्राथमिकता दें। ग्राम पंचायतों और सैनिक कल्याण बोर्डों को सक्रिय और उन्हें संवेदनशील बनाया जाना चाहिए।केंद्रीय गृह मंत्री ने संसद में कहा कि सशस्त्र बलों द्वारा अपने अधिकारियों और अन्य रैंकों के लिए एक स्वस्थ वातावरण बनाने के लिए कई कदम उठाए गए हैं।अन्य उपायों के अलावा, प्री-इंडक्शन प्रशिक्षण के दौरान मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता प्रदान की जाती है।

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist &
Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज
CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

एक नजर

भारत को पारंपरिक हथियारों की 'उदार' आपूर्ति को लेकर पाक चिंतित

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने भारत के स्पष्ट संदर्भ में दक्षिण एशिया में एक देश को पारंपरिक हथियारों की उदार आपूर्ति पर गंभीर चिंता व्यक्त की है और जोर देकर कहा है कि यह क्षेत्रीय अस्थिरता को बढ़ावा दे रहा है और छद्म क्षेत्रीय संतुलन को खतरे में डाल रहा है।
संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के उप स्थायी प्रतिनिधि, राजदूत मुहम्मद उस्मान इकबाल जादून ने सुरक्षा परिषद को बताया कि संकीर्ण रणनीतिक, राजनीतिक और वाणिज्यिक विचारों के आधार पर दक्षिण एशिया के प्रति दोहरे मानकों की नीति को त्यागना चाहिए। अवैध तस्करी और दुरुपयोग से उत्पन्न खतरे को संबोधित करने' पर एक चर्चा में बोल रहे थे, जिसमें सुरक्षा परिषद में कम से कम 60 देशों ने भाग लिया था।

चीन के वर्ष 2023 केंद्रीय आर्थिक कार्य सम्मेलन का सार

बीजिंग। चीन का वर्ष 2023 केंद्रीय आर्थिक कार्य सम्मेलन 11 से 12 दिसंबर तक पेइचिंग में आयोजित किया गया। चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने इसमें भाग लिया और महत्वपूर्ण भाषण भी दिया। उन्होंने वर्ष 2023 में आर्थिक कार्यों का व्यापक सारांश दिया, वर्तमान आर्थिक स्थिति का गहराई से विश्लेषण किया और वर्ष 2024 में आर्थिक कार्यों का व्यवस्थित रूप से इंतजाम किया। वर्ष 2023 में चीन के आर्थिक संचालन की विशेषता उच्च विकास दर, स्थिर रोजगार, कम कीमतें और मूल रूप से संतुलित अंतर्राष्ट्रीय भुगतान संतुलन है। मुख्य अपेक्षित लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त होने की उम्मीद है। पहला, आर्थिक शक्ति नये स्तर पर पहुंच गयी है।

लाइटहाउस फैक्टरी की नई सूची जारी

बीजिंग। विश्व आर्थिक मंच ने हाल में लाइटहाउस फैक्टरी की नई सूची जारी की। इसमें शामिल 21 कारखानों में 11 चीन में स्थित हैं, जिनमें फोटोवोल्टिक्स, ऑटोमोबाइल और नवीन ऊर्जा जैसी उच्च तकनीक कंपनियां शामिल हैं। लाइटहाउस फैक्ट्री को दुनिया के सबसे उन्नत कारखाने के रूप में जाना जाता है, जो औद्योगिक क्षेत्र में शीर्ष बुद्धिमान विनिर्माण क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। अब दुनिया के 153 लाइटहाउस कारखानों में 62 चीन के हैं, जो दुनिया में सबसे अधिक हैं। लाइटहाउस फैक्ट्री डिजिटलीकरण, नेटवर्किंग और बुद्धिमत्ता के माध्यम से और आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता बड़े मॉडल प्रौद्योगिकी के प्रयोग से उत्पादन प्रक्रिया के व्यापक रूप से स्वचालन और सटीकता को साकार करती है।

ज्ञानवापी केस | एएसआई ने बंद लिफाफे में पेश की सर्वे की रिपोर्ट

इससे पहले ही मुस्लिम पक्ष ने इसे लेकर कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था

बगैर हलफनामे किसी को भी रिपोर्ट सार्वजनिक करने की इजाजत न दी जाए

एजेंसी। वाराणसी

ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में हुए सर्वे की रिपोर्ट भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) की टीम ने सोमवार को जिला जज की अदालत में सीलबंद लिफाफे में पेश की। इससे पहले ही मुस्लिम पक्ष ने इसे लेकर कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था। जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश ने 18 दिसंबर को सर्वे रिपोर्ट दाखिल करने का आदेश दिया था। रिपोर्ट पेश करने से पहले मुस्लिम पक्ष ने कोर्ट में आवेदन देकर मांग की थी कि वाराणसी के ज्ञानवापी परिसर में हुए सर्वे की रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में ही एएसआई पेश करे। बगैर हलफनामे के किसी को भी रिपोर्ट सार्वजनिक करने की इजाजत न दी जाए। रिपोर्ट सब्मिट करने के लिए सुरक्षा के बीच 5 सदस्यीय टीम जिला जज कोर्ट पहुंची। एएसआई ने मेडिकल कारणों से 7 दिन का समय मांगा था, जिसके बाद जिला जज ने एएसआई को रिपोर्ट सबमिट करने के लिए 18 दिसंबर की तारीख तय की थी।

सोमवार को वादी-प्रतिवादी और दोनों पक्षों के सभी वकील मौजूद रहे। एएसआई की टीम सर्वे रिपोर्ट पेश करने के लिए 5 बार समय ले चुकी थी। एएसआई सर्वेक्षण की मांग को लेकर 16 मई को याचिका दायर की गई थी। इसे दायर करने वाली चार महिलाओं की अगुआई वकील विष्णु शंकर जैन ने की थी। हिंदू पक्ष के वकील ने वहां हिंदू मंदिर के प्रतीक चिह्न मिलने का दावा किया था। इसके बाद वाराणसी के जिला जज डॉ. अजय कृष्ण विश्वेश की कोर्ट ने 21 जुलाई 2023 को ज्ञानवापी परिसर के सील वजूखाने को छोड़कर बाकी सभी हिस्से और तहखानों के सर्वे का आदेश दिया था। ज्ञात हो कि बीते 11 दिसंबर को एएसआई की ओर से कहा गया था कि सुपरिटेंडिंग आर्कियोलॉजिस्ट अविनाश मोहंती का ब्लड प्रेशर अचानक बढ़ने और तबीयत खराब होने की वजह से वह अदालत में पेश होकर रिपोर्ट दाखिल कर पाने में असमर्थ हैं। इसलिए रिपोर्ट दाखिल करने के लिए एक हफ्ते का समय और दिया जाए। इस पर जिला जज की अदालत ने एक हफ्ते की मोहलत और देते हुए रिपोर्ट दाखिल करने के लिए 18 दिसंबर की तिथि नियत की थी। ज्ञानवापी परिसर में वैज्ञानिक विधि से जांच-सर्वे करने के लिए पुरातत्वविद, रसायनशास्त्री, भाषा विशेषज्ञों, सर्वेयर, फोटोग्राफर समेत तकनीकी विशेषज्ञों की टीम लगी रही। परिसर की बाहरी दीवारों (खासतौर पर पश्चिमी दीवार), शीर्ष, मीनार, तहखानों में परंपरागत तरीके से और जीपीएस, जीपीआर समेत अन्य अत्याधुनिक मशीनों के जरिए साक्ष्यों की जांच की गई। चार अगस्त से दो नवंबर तक चले सर्वे के दौरान एएसआइ की टीम का नेतृत्व अपर महानिदेशक आलोक त्रिपाठी ने किया।

शिवराज की दिल्ली में नड्डा से होगी मुलाकात

भोपाल। मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पहली बार दिल्ली जा रहे हैं। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पूर्व मुख्यमंत्री को दिल्ली बुलाया है। नतीजे आने के बाद चौहान ने कहा था कि मैं दिल्ली नहीं जाऊंगा। दरअसल, राज्य की 16वीं विधानसभा का पहला सत्र सोमवार से शुरू हुआ। पूर्व मुख्यमंत्री चौहान भी सत्र में पहुंचे, वे बुधनी विधानसभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए हैं। इस दौरान उन्होंने संवाददाताओं से चर्चा करते हुए बताया कि वे आज दिल्ली जा रहे हैं और उनकी राष्ट्रीय अध्यक्ष से मुलाकात होगी। वहीं, बीते रोज राज्य के तमाम नेताओं के दिल्ली में वरिष्ठ नेताओं से मुलाकात को लेकर सवाल पूछा गया तो उन्होंने इस मामले में किसी तरह की जानकारी होने से इनकार कर दिया।

दो करोड़ बहनों को लखपति बनाना मेरा संकल्प : पीएम

मोदी ने शादी-विवाह में बर्बाद होने वाले भोजन पर चिंता व्यक्त की

एजेंसी। वाराणसी

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने दो दिवसीय काशी यात्रा के दूसरे दिन सोमवार को सेवापुरी ब्लॉक के बरकी ग्राम सभा में आयोजित 'विकसित भारत संकल्प यात्रा (ग्रामीण क्षेत्र)' में शामिल हुए। उनके साथ उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान 'मेरी कहानी मेरी जुबानी' के जरिए लाभार्थियों ने प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के सामने मंच से उन्हें मिले सरकारी योजनाओं के लाभ के बारे में अपने अनुभवों को साझा किया। प्रधानमंत्री ने लाभार्थियों से संवाद स्थापित करते हुए कहा कि उनका संकल्प है कि देश की दो करोड़ ग्रामीण माताओं और बहनों को स्वावलंबी बनाते हुए उन्हें लखपति बनाना है। प्रधानमंत्री ने शादी विवाह में बर्बाद होने वाले भोजन पर चिंता व्यक्त करते हुए सेल्फ हेल्प समूह की महिलाओं को खाना परोसने की ट्रेनिंग लेकर इस दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। प्रधानमंत्री ने इस दौरान लखपति महिला चंदा देवी और मनीषा देवी को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। उन्होंने निपुण दक्षता हासिल करने वाले छात्र सिद्धार्थ और छात्रा आस्था को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। इसके अलावा एकल नृत्य में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा अंतिमा को भी प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। इससे पहले प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री ने सांसद खेल कूद प्रतियोगिता के अंतर्गत चल रहे विभिन्न खेल आयोजनों को भी देखा। साथ ही संकल्प यात्रा में शामिल हुए लोगों को 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए शपथ भी दिलाई। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी ने 15 नवंबर को झारखंड के खूंटी से विकसित भारत संकल्प यात्रा का शुभारंभ किया था। वाराणसी में 22 नवंबर को इसका शुभारंभ किया गया। ये यात्रा वाराणसी के 694 ग्राम पंचायत और नगर क्षेत्र के 110 वार्डो को कवर करेगी। नगर में एक वैन और ग्राम पंचायतों के लिए 8 वैन के माध्यम से शुरू की गई ये यात्रा 26 जनवरी 2024 तक अनवरत चलती रहेगी। इसके जरिये नगरीय क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र में भारत सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाया जाएगा। वैन के माध्यम से किसानों को दक्ष बनाने के लिए ड्रोन तकनीक की जानकारी दी जा रही है। गांव-गांव में इस यात्रा से पहले सर्वेक्षण का काम भी किया जा रहा है। पंचायत सहायकों द्वारा इसके लिए डोर टू डोर सर्वे किया जा रहा है। इस पूरे काम के लिए सघन पर्यवेक्षण के लिए कंट्रोल रूम भी स्थापित किया गया है।

लाभार्थियों ने योजनाओं के लाभ के बारे में अपने अनुभवों को साझा किया

पीएम मोदी व शाह के मीडिया इंटरव्यू पर किया तंज

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने 13 दिसंबर को संसद सुरक्षा उल्लंघन पर मीडिया साक्षात्कार देने, लेकिन संसद में कोई बयान नहीं देने के लिए सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर तंज किया। एक्स पर एक पोस्ट में, जो कांग्रेस महासचिव (संचार) प्रधानमंत्री 13 दिसंबर को संसद के गंभीर सुरक्षा उल्लंघन पर एक प्रमुख अखबार से बात करते हैं। गृह मंत्री टीवी चैनल से बात करते हैं। लेकिन संसद में बोलने को तैयार नहीं हैं। इंडिया गठबंधन की पार्टियां मामले में दोनों सदनों में गृह मंत्री से एक बयान की मांग कर रही हैं। यह एक सरल, सीधी और वैध मांग है। लेकिन गृह मंत्री एक बयान देने से इनकार करते हैं, जो उनका कर्तव्य और जिम्मेदारी है।

दाउद को हीरो की तरह पेश कर रहा था बॉलीवुड

एजेंसी। मुंबई

भारत का मोस्ट वॉन्टेड आतंकी दाउद इब्राहिम मुंबई में 1993 में हुए सिलसिलेवार धमाकों का गुनहगार है। अंडरवर्ल्ड से जुड़ी कई फिल्में बनीं हैं, जिनके किरदार दाऊद या अंडरवर्ल्ड से जुड़े लोगों के आसपास नजर आते हैं। वंस अपॉन ए टाइम इन मुंबई, मिलन लथूरिया की फिल्म 'वंस अपॉन अ टाइम इन मुंबई' अंडरवर्ल्ड की दुनिया को बेहद करीब से दिखाती है। हाजी मस्तान के जीवन पर आधारित इस फिल्म में अजय देवगन मुख्य भूमिका में थे। ऐसा कहा जाता है कि एक अभिनेत्री और हाजी मस्तान के बीच प्रेम संबंध थे, जिसे दिखाने के लिए फिल्म में कंगना रणौत ने भी किरदार निभाया था। इस फिल्म ने अंडरवर्ल्ड की काली दुनिया पर राज करने वाले डॉन की अच्छाई और उसूलों को दर्शाया। यह फिल्म साल 2010 में रिलीज हुई थी। इस फिल्म में इमरान हाशमी का किरदार दाऊद इब्राहिम की कहानी पर आधारित है। शूटआउट एट वडाला साल 2013 में बनी फिल्म 'शूटआउट एट वडाला' भी अंडरवर्ल्ड पर ही आधारित थी। इस फिल्म में जॉन अब्राहम, सोनू सूद और मनोज बाजपेयी मुख्य भूमिका में थे। फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी।

आईसीएमआर डेटा लीक मामले में 4 गिरफ्तार

एजेंसी। नई दिल्ली

दिल्ली पुलिस ने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) से डेटा लीक मामले में चार लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारियां केंद्रीय जांच एजेंसियों की जांच के बाद हुई हैं, जिसमें खुलासा हुआ है कि 81 करोड़ से अधिक भारतीयों के व्यक्तिगत विवरण आईसीएमआर के डेटा बैंक से चुराकर डार्क वेब पर बिक्री के लिए पेश किया गया। सूत्रों ने बताया कि आरोपियों को तीन अलग-अलग राज्यों में बड़े पैमाने पर तलाश के बाद हिरासत में लिया गया। आरोपी, जो कथित तौर पर एक गेमिंग प्लेटफॉर्म पर मिले थे, ने त्वरित वित्तीय लाभ के लिए डेटा को हैक करने और बिक्री पर पूंजी लगाने की साजिश रची। इस साल की शुरुआत में, महत्वपूर्ण डेटा उल्लंघन के संबंध में रिपोर्ट सामने आने के बाद दिल्ली पुलिस के साइबर सेल ने संज्ञान लिया। इस साल अक्टूबर में, बड़े पैमाने पर डेटा उल्लंघन में, आईसीएमआर के पास मौजूद 81.5 करोड़ से अधिक नागरिकों का डेटा डार्क वेब पर बिक्री के लिए उपलब्ध था, जिसमें नाम, फोन नंबर और पते के साथ आधार और पासपोर्ट विवरण जैसी महत्वपूर्ण जानकारी शामिल थी।

हंगामे के बीच लोकसभा से 'डाकघर बिल-2023' पारित

एजेंसी। नई दिल्ली

लोकसभा में विपक्षी सांसदों के हंगामे और नारेबाजी के बीच 'डाकघर बिल-2023' पारित हो गया है।
बिल पारित होने के बाद सदन की कार्यवाही को 3 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया गया। इससे पहले दोपहर 2 बजे सदन की कार्यवाही शुरू होने पर हंगामे के बीच 'डाकघर बिल-2023' पर चर्चा भी हुई, जिसमें भाजपा, शिवसेना (शिंदे गुट) और बसपा के सांसदों ने हिस्सा लिया और हंगामे के बीच ही सदन में अपना-अपना भाषण दिया। केंद्रीय संचार राज्य मंत्री देवुसिंह चौहान ने लोकसभा में 'डाकघर बिल-2023' पर हुई चर्चा का जवाब भी सदन में दिया। इसके बाद पीठासीन सभापति राजेंद्र अग्रवाल ने विपक्षी दलों द्वारा इस महत्वपूर्ण विधेयक पर भी चर्चा में शामिल नहीं होने पर नाराजगी जताते हुए सदन की कार्यवाही को 2:45 बजे तक के लिए स्थगित कर दिया।

महिला आरक्षण याचिका पर विचार से इनकार

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोमवार को उस जनहित याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण तत्काल प्रभाव से लागू करने का आग्रह किया गया था ताकि 2024 के लोकसभा चुनावों में भी उसका फायदा मिल सके।

राज्यसभा में जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधेयक पारित

नई दिल्ली। दो बार स्थगित होने के बावजूद राज्यसभा में सोमवार को जबरदस्त हंगामा हुआ। दोपहर 2 बजे सदन की कार्यवाही प्रारंभ होते ही विपक्ष ने सुरक्षा को लेकर चर्चा की मांग और नारेबाजी शुरू कर दी। हंगामे के बीच ही जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधेयक 2023 और संघ राज्यक्षेत्र शासन संशोधन विधेयक 2023 पारित किया गया।

बेधड़क | लोग भी मुझे पसंद करते हैं, मैं किसी भी धमकी से नहीं झुकूंगा

केरल के राज्यपाल 'स्वीट स्ट्रीट' से गुजरे

एसएफआई ने कहा था, राज्यपाल को सड़क पर कदम नहीं रखने देंगे

एजेंसी। तिरुवनंतपुरम

अपने इरादे स्पष्ट करते हुए कि वह सीपीआई-एम की छात्र शाखा एसएफआई की धमकियों से डर नहीं सकते, केरल के राज्यपाल सोमवार को कोझिकोड के प्रसिद्ध और भीड़-भाड़ वाले 'स्वीट स्ट्रीट' पहुंचे। उन्होंने राज्य पुलिस प्रमुख को पत्र लिखकर कालीकट विश्वविद्यालय परिसर छोड़ दिया कि उन्हें किसी सुरक्षा कवर की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने मीडियाकर्मियों से कहा,मुझे केरल के लोग बहुत पसंद हैं और मैं जानता हूं कि लोग भी मुझे पसंद करते हैं। मैं किसी भी धमकी के आगे नहीं झुकूंगा," और स्वीट स्ट्रीट चले गए। इससे पहले एसएफआई ने कहा था कि वे उन्हें राज्य की सड़कों पर कदम नहीं रखने देंगे। स्वीट स्ट्रीट के रास्ते में वह स्कूली बच्चों को देखकर रुके और एक छात्र को चूमते हुए उनसे बात की। लोगों और स्कूली बच्चों को उनकी ओर दौड़ते देखा गया और उन्होंने उनका अभिवादन किया। वह व्यस्त स्वीट स्ट्रीट पर रुके और यहां भी लोगों ने उनका स्वागत किया। वह कुछ मिठाई की दुकानों में भी गए और दुकानदारों द्वारा पेश किए गए प्रसिद्ध 'कालीकट हलवा' का स्वाद चखा। 'स्वीट स्ट्रीट' में 40 मिनट से अधिक समय बिताने के बाद उन्होंने इंतजार कर रहे मीडियाकर्मियों से कहा, मैं लोगों द्वारा मेरे प्रति दिखाए गए प्यार और कृतज्ञता से बहुत अभिभूत हूं। मुझे नहीं पता कि मैं इसके लिए अपना आभार कैसे व्यक्त करूं। वह कालीकट यूनिवर्सिटी के गेस्ट हाउस में ठहरे हैं। रविवार को एसएफआई ने कथित तौर पर राज्यपाल के खिलाफ बैनर लगाया था। उन्होंने पुलिस अधिकारियों से बैनर हटाने को कहा और कहा कि अगर मुख्यमंत्री परिसर में रहते, तो पुलिस अलग तरीके से कार्रवाई करती। राज्यपाल ने कहा, केरल पुलिस देश की सबसे अच्छी फोर्स है लेकिन उसे अपना काम करने की इजाजत नहीं है। सीपीआई-एम नेता ए.के. बालन ने कहा कि राज्यपाल के साथ अजीब चीजें हो रही हैं। बालन ने कहा,हमें गंभीरता से लगता है कि राज्यपाल के साथ कुछ समस्या है। उसने जो किया वह ठीक नहीं था. उन्हें सुरक्षा ब्रीफिंग दी जानी चाहिए। अगर कुछ हो जाता तो कौन जिम्मेदार होता।

राजस्थान में विपक्ष के नेता की होगी घोषणा

जयपुर। पार्टी सूत्रों ने कहा कि छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में विपक्ष के नेता (एलओपी) की घोषणा के बाद, कांग्रेस इस सप्ताह राजस्थान में एलओपी की घोषणा करेगी। उन्होंने बताया कि कांग्रेस के पांच वरिष्ठ नेता इस पद की दौड़ में हैं। हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में पांच में से तीन राज्यों में हार का सामना करने के बाद, पार्टी संगठन में कुछ चरणबद्ध बदलाव होंगे। पार्टी नेताओं ने कहा, पहले चरण में नेता प्रतिपक्ष के पद पर नियुक्ति की जाएगी और इस सप्ताह नाम की घोषणा होने की संभावना है। उन्होंने कहा, "कांग्रेस आलाकमान के स्तर पर विपक्ष के नेता के नाम पर चर्चा की गई है।" लेकिन अभी तक नियुक्ति आदेश जारी नहीं हुए हैं। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में विपक्ष के नेताओं की नियुक्ति पहले ही हो चुकी है, इसलिए, राजस्थान में भी जल्द ही नियुक्ति की संभावना है।

फिल्म जगत

शाहरुख के खास दोस्त ने 'डंकी' को लेकर की भविष्यवाणी

दुबई। बॉलीवुड मेगास्टार शाहरुख खान व निर्देशक राजकुमार हिरानी अपकमिंग फिल्म 'डंकी' की रिलीज के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस साल की शुरुआत में 'जवान' और 'पठान' की शानदार सफलता के बाद, 'डंकी' ने फैंस और क्रिटिक्स के बीच एक्साइटमेंट पैदा कर दी है। यह फिल्म 21 दिसंबर को दुनिया भर में रिलीज होगी। शाहरुख खान और राजकुमार हिरानी 'डंकी' के जरिए पहली बार साथ में काम कर रहे हैं। दमदार कास्टिंग, रोलर-कोस्टर राइड और कॉमिक से भरपूर इमोशन्स का वादा करने वाली स्क्रिप्ट के साथ 'डंकी' 2023 की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है। बिजनेस बिजनेसमैन और खान के करीबी दोस्त भरत मेहरा की भविष्यवाणी ने उत्साह बढ़ा दिया है। अपनी सटीक भविष्यवाणियों के लिए जाने जाने वाले मेहरा ने पूरे दावे के साथ कहा कि 'डंकी' ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर 1,000 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर जाएगी। उनका ट्रैक रिकॉर्ड जबरदस्त है, उन्होंने खान के पिछले प्रोजेक्ट्स 'पठान' और 'जवान' की सफलता की सटीक भविष्यवाणी की थी, जो न केवल उनके 700 करोड़ रुपये और 1,000 करोड़ रुपये के अनुमान को पार कर गया, 1,050 करोड़ रुपये और 1,200 करोड़ रुपये को पार करते हुए नया रिकॉर्ड बनाया। मेहरा ने कहा, ये सफलताएं न केवल खान के स्थायी करिश्मे को प्रमाणित करती हैं, बल्कि दर्शकों की अटूट नब्ज को भी दर्शाती हैं। 'डंकी' इस असाधारण यात्रा को जारी रखने के लिए तैयार है। मेहरा की भविष्यवाणी के बारे में पूछे जाने पर खान ने कहा, मैं बहुत पॉजिटिव इंसान हूं।

केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने इस विधेयक को पारित किए जाने का प्रस्ताव रखा। इससे पहले भाजपा सांसदों ने हंगामे के बीच अपनी बात रखते हुए कहा कि केंद्र सरकार ने जम्मू कश्मीर में आदिवासी, एससी-एसटी महिलाओं को आरक्षण प्रदान करने की व्यवस्था की है। तेज हंगामे और नारेबाजी के बीच राज्यसभा के सभापति ने पेश किए गए बिल पर सांसदों से उनका मत मांगा। ध्वनि मत से राज्यसभा में सोमवार को बिल पारित कर दिया गया। गौरतलब है कि इससे पहले लोकसभा विधेयक पारित कर चुकी है। लोकसभा में दो व्यक्तियों के जबरन घुसने के मुद्दे पर सभापति ने राज्यसभा में बताया कि यह सामूहिक चिंता का विषय है। एक उच्च स्तरीय कमेटी मामले की जांच कर रही है। इस प्रकार की व्यवस्थाएं की जा रही है कि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हो। हालांकि, विपक्षी सांसद सभापति के बयान से संतुष्ट नहीं हुए और गृह मंत्री के बयान की मांग करते रहे। विपक्ष लगातार 'गृहमंत्री सदन में आओ, सदन में आओ', 'गृहमंत्री जवाब दो, जवाब दो' के नारे लगता रहा। विपक्ष द्वारा किए जा रहे हंगामे से नाराज सभापति ने सदन में इस प्रकार के व्यवहार को निंदनीय करार दिया। हंगामा जारी रहने पर सदन की कार्रवाई स्थगित कर दी गई। इसके साथ ही उन्होंने हंगामे पर विराम लगाने के लिए नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे को मुलाकात और चर्चा के लिए अपने चेंबर में आमंत्रित किया।

अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल (एएसजी) चेतन शर्मा ने केंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए अदालत को सूचित किया कि विधेयक एक अधिनियम बन गया है। यह जनगणना के बाद की एक कवायद है। इसे अधिनियम के अंतर्गत शामिल किया गया है। इस पर संसद में बहस हो चुकी है...यह याचिका महज प्रचार के लिए दायर की गई है।"याचिकाकर्ता ने अधिनियम या विधेयक की वैधता को चुनौती न देते हुए महिला आरक्षण को समयबद्ध तरीके से लागू करने की मांग की।"मैं अधिनियम या विधेयक को चुनौती नहीं दे रहा हूं... भारत के इतिहास में पहली बार संसद ने सर्वसम्मति से विधेयक पारित किया है। 75 साल से प्रतिनिधित्व नहीं मिला. वे आएं और कहें कि हम इसे समयबद्ध तरीके से कर सकते हैं। मैं किसी भी चीज को चुनौती नहीं दे रहा हूं। मैं सिर्फ यह कोशिश कर रहा हूं कि इसे समयबद्ध तरीके से किया जा सके। अन्यथा ऐसा होने वाला नहीं है। अदालत ने महिला आरक्षण से पहले परिसीमन की संसदीय शर्त पर गौर किया और प्रावधान की वैधता को चुनौती देने का सुझाव दिया। इसने सर्वोच्च न्यायालय में चल रहे मामले और याचिकाकर्ता को या तो इसे रद्द करने या ठोस आधार पेश करने की आवश्यकता पर जोर दिया। जनहित याचिका वापस लेने के साथ, कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मिनी पुष्करणा ने याचिकाकर्ता, वकील योगमाया एम.जी. को सुप्रीम कोर्ट जाने की स्वतंत्रता दी, जहां इसी तरह की याचिका पहले से ही लंबित है। न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद ने पिछले सप्ताह इसी मामले पर विचार करने से इनकार कर दिया था और कहा था कि प्रार्थनाएं एक जनहित याचिका के समान हैं और याचिकाकर्ता को याचिका वापस लेने और एक नई जनहित याचिका दायर करने का सुझाव दिया था।